CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञा॰ 3/89

बाला जोगन

...लय
...णसी-५
3/89

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काला जंगल

आ: ३/९९
आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

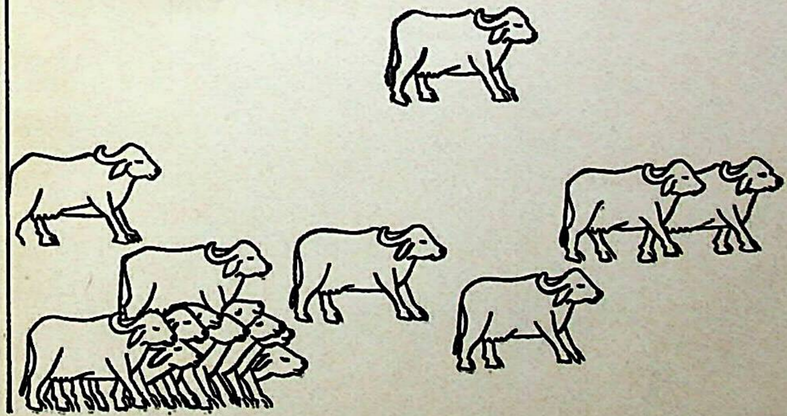

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Şharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बालाजोगन

('शेरणी विजानंद')

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

ले०— स्व० उछरंगराय केशवराय ओझा

अनुवादक— भानुशंकर मेहता

हिंदी प्रचारक संस्थान
पिशाच मोचन
वा रा ण सी – २२१००१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंदी अनुवाद—प्रथम संस्करण १९७८

मूल्य — रु. १५.०० मात्र

मुद्रक :
वेरोनिका प्रिण्टर्स
गोळघर, वाराणसी
फोन : ६४५६७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'सेणी अने वीजाणंद' के प्रथम मूल गुजराती संस्करण पर लेखक की भूमिका

प्रवेशक

"सेणी अने वीजाणंद" की कथावस्तु "मेह अने ऊजली" की कथावस्तु "सोरठ नी रसधार" आदि से ली गयी है। यह कथा मैंने अपने बचपन में लीमद्रा के गीरग्राम में सुनी थी, पर उसकी स्मृति ताजी तो "सोरठी गीत कथा" ने ही की। "मेह अने ऊजली" में जिसे "भक्ष्य के समर्पण" नाम दिया है, मैंने मूल 'दूहा' ज्यों के त्यों रख दिये हैं पर 'सेणी अने वीजाणंद' में मूल दूहे नहीं रक्खे हैं।

वाङ्मय में 'सेणी अने वीजाणद' को कौन सा स्थान मिलेगा इस बावत मैं तर्क वितर्क करना नहीं चाहूँगा, निश्चय ही उसकी भाषा की खूब आलोचना होगी। उसके गीत बहुतों को अच्छे नहीं लगेंगे और सुदूर अफ्रिका में बैठा मैं इस नन्हें से ग्रंथ को अपेक्षित प्रसिद्धि और प्रचार नहीं दे पाऊँगा। फिर भी मैं 'सेणी अने वीजाणद' को गुजराती वाङ्मय की फुलवाड़ी में एक अनूठे पुष्प के रूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ। उसमें दोष होंगे तो विशिष्टताएँ भी हैं ही। वह सामान्य होगा तो उसमें अनेक असाधारणताएं भी हैं ही। मैं इन सबको विवेचकों क लिए छोड़ देता हूँ। "सेणी अने वीजाणंद" का प्रत्येक शब्द मैंने ज्वराक्रांत अवस्था में लिखा है। अपने कितने ही साहित्य-सम्राटों की समृद्धि और आत्मसंतोष मेरे पास नहीं हैं। मेरा जीवन में प्रवास, चिन्ताएँ और जुंबिशें बीच बीच में आ बैठती हैं। प्रशंसा, प्रतिष्ठा और पद प्राप्त करने के जो जो उपाय आयोजित होते हैं वे या तो मुझे मिलते नहीं अथवा मुझे आयोजित करना आता नहीं। जो भी हो, अपने ग्रंथों की प्रस्तावना मैंने अब तक किसी से लिखवाई नहीं है और लिखवाऊँगा तो खुशामद करके नहीं लिखवाऊँगा बल्कि मित्रों से अनुरोध करूँगा।

'सेणी अने वीजाणंद' को किस प्रकार का काव्य कहा जाय यह मैं नहीं जानता। इसके पहले सर्ग में वीजाणंद के संगीत से सेणी आकर्षित होती है इसका वर्णन है। दूसरे सर्ग में इस संगीत का लोक सभा के समक्ष प्रदर्शन हुआ है, तीसरे में वीजाणंद द्वारा विवाह का कर (करियावर) प्राप्त करने के प्रयास और चौथे में निरंतर वियोग और अंतिम संयोग के आलेखन की चेष्टा की है। चार सर्ग के स्थान पर इसे चौदह सर्ग में लिखने की चेष्टा की होती तो संभव था, पर ऐसी धारणा थी नहीं। गीत भी लंबे लिखने की चेष्टा की होती तो हो सकता था, अनेक लोग ऐसा मानेंगे, मगर मैंने जानकर उन्हें लंबा नहीं किया। सेणी हिमालय में गलती रहे और वीजाणंद वहाँ बीन बजाये, यह प्रसंग भव्य है। इस प्रसंग का विस्तार करना भी मुझे ठीक नहीं लगा। मेरे कला के आदर्श और विचार कुछ विचित्र हैं।

मेरे पुत्रों और उनकी माता को 'सारा गीर नी लीलवणी' (गिरि की सब हरियाली ले-) गीत अच्छा लगता है, मेरे ज्येष्ठ पुत्र को "गरवा हो गिर" (सुन्दर वन गीर के—) और मुझे "धरती मारी—" (अरे थोड़ी धूल ला दो—) प्रिय हो गया है। किसी को कहीं भी एकाध पंक्ति भी इसमें प्रिय लगेगी तो मैं अपने आपको धन्य मानूँगा। —

—उछरंग राय केशव राय ओझा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक की बात

गुजराती की प्रेम कथा 'बालापन की प्रीत' के आधार पर गुजराती के लब्धप्रतिष्ठ कवि स्व० उछरंग राय केशवराय ओझा द्वारा रचित 'शेणी विजयानंद' का अपद्यात्मक पद्य अनुवाद का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत करते हुए हमें एक विशेष प्रकार के गौरव का अनुभव हो रहा है। हिन्दी की रत्नराशि में गुजराती की एक ऐसी आभामय मणि की श्रीवृद्धि हो रही है जिसका ऐतिहासिक महत्व है।

हिन्दी के रंगमंच के विकास में इस रचना का प्रस्तुतीकरण एक प्रबल सोपान है, जिसका सारा श्रेय इसके अनुवादक तथा रंगमंच के प्रख्यात मर्मज्ञ डा० भानुशंकर मेहता को जाता है। व्यवसाय से डाक्टर, कर्म से मल-मूत्र-रक्त आदि का परीक्षक, स्वभाव से अलमस्त बनारसी और रूचि से साहित्य और कला-सेवक, इस डा० भानु नाम के व्यक्ति में कैसी 'कास्मोपालिटन' प्रतिभा है, इसे यह बखूबी उजागर करती है।

अनुवादक ने मूल से हटने की स्वतंत्रता का मंचीय दृष्टि से सदुपयोग किया है। गीतों की स्वरलिपियाँ भी दी हैं और दिया विस्तृत रंगमंचीय निर्देश, जिससे इसका मंचन सरल एवं सरस हो गया है।

हमें विश्वास है कि अनेक भारतीय और अभारतीय भाषाओं में अनूदित इस कृति का हिन्दी में भी समादर होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेखक को लिखे एक पत्र में नोबेल पुरस्कार विजेता
रोम्यां रोलां

'मैंने आपका काव्य" शेनी एंड विजानंद बहुत ध्यान से पढ़ा है। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि इस प्रकार मैं आपके गुजराती साहित्य की एक झलक पा सका। इस साहित्य से मैं अब तक अपरिचित था। दुख है कि मैं इस काव्य को मूल गुजराती में नहीं पढ़ सकता क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि अंग्रेजी अनुवाद इसके साथ पूरा न्याय नहीं कर पाया है, फिर भी परदेशी भाषा के छद्मवेश के माध्यम से भी मैं उसके सहज सौंदर्य और हृदयग्राही आकर्षण का अनुभव कर सका।

संगीत प्रेमी और संगीत के इतिहासज्ञ के नाते जिस बात ने मुझे सर्वाधिक आकर्षित किया वह थी इसमें ओतप्रोत संगीत के प्रति गहरी संवेदना। क्या यह आपके गुजराती लोगों की विशेषता है? यह परम्परागत कृष्ण के वेणुनाद और गीतों की प्रशंसा से किंचित् भिन्न और नाद एवं लय की ब्रह्म शक्ति का आवाहन करता है......।

सन् १९४७ में प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद की प्रस्तावना

हर कोई जो काव्यप्रेमी है श्री ओझा का ऋणी होगा कि उन्होंने पाश्चात्य जगत को सुन्दर गुजराती काव्य "शेनी एंड विजानंद" के अस्तित्व से परिचित कराया। निश्चय ही इससे गुजराती साहित्य के प्रति और अधिक कौतूहल जागृत होगा, और मेरा विश्वास है कि मेरी ही तरह अन्य महानुभाव भी यह काव्य पढ़कर निश्चय ही यही अनुभव करेंगे कि उन्हें भारतीय साहित्य की सम्पन्नता में नयी अंतर्दृष्टि मिली है। और साथ ही मेरा यह विश्वास भी है कि पुनः मेरी ही भाँति अन्य पाठक भी इस काव्य में वर्णित कथा के अनूठे मोहन और सौंदर्य से अभिभूत होंगे। श्री ओझा—इस काव्य के लेखक ने पहले इसे गुजराती में लिखा था और तब बड़े साहस के साथ इसका अंग्रेजी में अनुवाद कर डाला। इस प्रकार का अनुवाद करने में वे समर्थ और योग्य हैं। यह उनके अनेक प्रकाशनों और बंबई तथा अन्य स्थानों पर उनके पांडित्य की चर्चा से स्वयं सिद्ध है। मैं तो केवल इतनी ही आशा करता हूँ कि अपने व्यस्त जीवन में श्री ओझा को कुछ और समय मिलेगा जिससे वे हमें ऐसे ही गुजराती काव्यों का अनुवाद दे सकेंगे। इस प्रकार की कृतियों में एक राष्ट्र के लोगों की प्रतिमा उद्घाटित होती है।

दार-उस-सलाम
२ अगस्त १९३९

ए० ए० एम इश्वरवुड
तांगानियाका प्रदेश के शिक्षा निदेशक
(१९३६ से १९४५)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्व. उछरंग राय केशव राय ओझा—एक परिचय

"शेणी विजाणंद" युगों से सौराष्ट की अमर प्रेम कथा बनी रही है। उसकी प्रत्येक घटना में सोरठी प्रेम कथा की रोमांचकता भरी है। यह कथा वहुत पहले कहानी रूप में कही जाती थी, गायी जाती थी पर श्री उछरंग राय के० ओझा ने अपद्य-गद्य शैली में वीणा पर यह प्रेम कथा गुजराती जनता को सुनायी है। एक कला साधक की कहानी प्रस्तुत की है।

श्री उछरंग राय केशव राय ओझा का जन्म सन् १८९० के सितम्वर की ५ वीं तारीख को हुआ था। बचपन से ही वे अपने भाइयों से भिन्न थे और इक्कीसवें वर्ष में उन्होंने साहित्य क्षेत्र में पदार्पण किया। वे पत्रकारिता में रुचि लेने लगे। इतिहास के स्नातक वनकर उन्होंने अपने इतिहास ज्ञान को रसप्रद बनाकर उसका आस्वाद गुजराती जनता को कराया।

श्री ओझा ने मात्र गुजराती साहित्य की ही सेवा नहीं की बल्कि सन् १९२० में राष्ट्रीय कांग्रेस में सम्मिलित हो, देश सेवा कर अपना विनम्र योगदान दिया। सन् १९२९ में पू० महात्मा गांधी की अपील का सम्मान करके वे कांग्रेस को मजवूत वनाने आफ्रीका गये। वहाँ की सरकार ने इनके प्रारम्भिक सेवा कार्यों से प्रभावित हो इन्हें अनेक समितियों में सम्मानित पद प्रदान किये और इनकी वहुत प्रतिष्ठा की।

श्री ओझा का जीवन आरम्भ से विविध रंगों में रंगा था, और इन रंगों की छटा का दर्शन उनकी कृतियों में होता हैं। इतिहास की शोध से प्रसूत ***'अजोजी ठाकुर' 'लक्षशिला की राजमाता' 'पितृ हत्या'*** आदि एतिहासिक उपन्यासों और ***'पराधीन एशिया', 'स्वायत्त रशिया' स्वतंत्र जर्मनी'*** नामक विविध देशों के रस पूर्ण इतिहासों के अलावा ***'पुण्य बंसरी' 'कलुषित कंकण' 'जीवन शालिनी' 'धनी वणकर'*** जैसी सामाजिक कथाओं, ***'मेह-उजली'*** और ***'शेणी विजाणंद'*** जैसे अपद्य-गद्य शैली के रस भरे काव्यों के अलावा अनेक राजनीतिक ग्रंथों में ओझाजी की सच्ची आवाज मुखर होती है।

श्री ओझा जी लेखक और राजनीतिक व्यक्ति के साथ ही समाज के भी सेवक थे। ***अखिल भारतीय मध्यम वर्गीय संघ, भारत सेवक समाज,*** तथा **इण्टर-डिपेंडेंस**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काउन्सिल द्वारा उन्होंने देश और विदेश की मानव जाति की सेवा में अपना शेष जीवन व्यतीत किया था।

"शेणी विजाणंद" एक ऐसे सच्चे साहित्य सेवक की कृति है। शेणी विजाणंद में श्री ओझाजी की कल्पना शक्ति पूर्ण रूप से विकसित हुई है। विजाणंद को हृदय में स्थापित करती शेणी के मन की वात लेखक ने किस मधुरता से कही है—

जैसे किसी विस्मृत सी देवता की प्रतिमा के चरणों फूल एक कोई चढ़ा जाता है—
जैसे कभी पावस का एक जल बिंदु गिर प्यासी धरती की तप्त धूल में समाता है—
वैसे ही शेणी के हृदय में स्वर भार विजानंद का जाकर समा गया अंकित स्वयं भी हुआ
उसके हृदय में वह—

तत्काल ही शृंगार की सरस छटा निखरती है—

"यौवन के सागर में तरुणी भी पा गयी मोती अनमोल एक..... विजानंद"

शेणी विजाणंद की सामान्य प्रेम कथा को ओझाजी ने नूतन परिधान पहिराया है। इसमें जितना शृंगार भरा है उतना ही शांत-करुण-वीर आदि रस भी समाविष्ट किये है। कुछ उदाहरण देखें

"बदला संगीत रंग तीखी स्वर लहरी करुणा भरी वेधी ब्रह्माण्ड पार बरसा प्रेम हीनों पर तिरस्कार"

चार पंक्तियों में शांत रात्रि में विजानंद का संगीत सुनती वेद्दा की सभा उत्तेजित हो उठी, देखिये—

"ज्वाला सी जाग उठी क्रोध की चंचल समूची सभा एक बार हो उठी देशद्रोहियों का अब
करना दमन है करना उन्मूलन है घर के विभीषणों का"—

पांच छः पृष्ठों में कवि ने नवरस की धारा वहा दी है और फिर भी किसी की नाट्य में जिज्ञासा तृषा घटती नहीं है, पाठक कवि की कल्पना की अंगुली पकड़कर कवि के साथ संचरण करता है, यही कवि की सफलता है। पांच सर्ग की इस काव्य कथा में शेणी-विजानन्द का प्रेम परिचय, शेणी की विरह व्यथा, प्रेम की वेदी पर चढ़ते प्रेमियों के बलिदान का वर्णन है। कथा का आकर्षण वहुतों को आत्म विस्मृत कर सकेगा। कविवर नाना लाल की प्रिय शैली ओझा जी ने अपनायी है– प्रत्येक पंक्ति में ताल-बद्धता, शब्द-माधुर्य और शब्दालंकारों से भरा यह काव्य किसी सुन्दरी नायिका सा वन गया है। ओझा जी का शब्द भंडार समृद्ध है, कुछ शब्द प्रयोग कठिन हैं पर सामान्य जन भी उसके माधुर्य का पान कर सकेगा।

संक्षेप में ओझा जी की समस्त काव्य कृतियों में यह निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ है।

—दीवान वहादुर, कृष्ण लाल
मोहन लाल झवेरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुवादक की बात :

कहते है बारह वर्ष बाद घूरे के दिन फिरते हैं, प्रस्तुत रचना को प्रकाशन के लिए २२ वर्षों की प्रतीक्षा करनी पड़ी है। स्व. उ. के. ओझा की यह रचना मूल गुजराती लोक कथा से कुछ भिन्न हैं। पाठकों की जानकारी के लिए ओझाजी के काव्य के साथ ही ग्रंथ में श्री झवेरचन्द्र मेघाणी रचित 'सौराष्ट्र की रसधार' के पांचवें खण्ड में 'बालापण नी प्रीत' शीर्षक से प्रकाशित कथा का अनुवाद भी संलग्न है जिसके अध्ययन से ओझाजी की सरस कवि कल्पना पर प्रकाश पड़ेगा। कवि ने सरस लोक कथा को कल्पना का पुट देकर उसे असाधारण प्रेम कथा ही नहीं, उसके माध्यम से भारतीय अध्यात्म के अनूठे मंत्र 'तूं ही' नाद का गान किया है, परम पुरुष के चरणों में पिंड की काव्यांजली भेट की है।

गुजराती के मूलकाव्य से अनुवाद करते समय मैंने काफी स्वतंत्रता से काम लिया है। प्रथम अनुवाद के बाद और प्रस्तुत प्रकाशन के समय तक उसमें काफी संशोधन और परिवर्तन हुए हैं। एक ओर जहां कुछ पंक्तिया छोड़ दी गयी हैं वहीं कुछ पंक्तियाँ (जैसे ५ वें सर्ग के आरम्भ में) जोड़ भी दी हैं। मंच पर इसे प्रस्तुत करने के लिए भी इसमें किंचित सुधार करना पड़ा, जैसे कि मूल ग्रन्थ में चार ही सर्ग है, प्रथम में शेणी विजानंद का परिचय, दूसरे में सभा में विजानंद का गायन तीसरे में वेदा द्वारा इच्छित पुरस्कार मांगने का हठ और करिवायर लेने के लिए विजानंद का यात्रा करना, और अंतिम सर्ग में शेणी द्वारा गृहत्याग, विजानंद का लौटना और हिमालय के आंगन में प्रेमियों अनूठा मिलन। अनुवाद में पहला सर्ग मूल के अनुसार है, दूसरे और तीसरे सर्ग का सभा अंश एक में कर दिया गया है, तीसरे सर्ग में विजानंद की यात्रा का वर्णन और करियावर की प्राप्ति का अंश है, चतुर्थ सर्ग में शेणी का गृहत्याग और विजानंद की वापसी रक्खी है और एक नया पाँचवा सर्ग हिमालय में प्रेमियों के मिलन का रक्खा है।

यह प्रेम कथा से अधिक अध्यात्म चिंतन है। कवि ने गीतमय-नादब्रह्ममयी सृष्टि के परिचय से कथा आरंभ की है, (काव्य में २३ गीत हैं अतः 'गीतमय सृष्टि थी ..' इस दृष्टि से भी सार्थक भूमिका है), उसका नायक परमपुरुष द्वारा विरचित पिंड है. उसकी नायिका 'रामजी की पुतली' है और वे अलख को ढूढ़ते हैं, 'तूं' में 'मैं' को समाने के लिए चेष्टा करते हैं और हिम के अरण्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में 'अलख' लखाई देता है, माया के बंधन कटते है, दुई दूर होती है और ब्रह्म की ज्योति के प्रकाश से विश्व नहा जाता है। इस पक्ष को दृष्टिगत रखने पर सरस हृदय प्रबुद्ध पाठक को कृति में विशेष आनंद आयेगा।

चूंकि रचना का मंच पर विशेष स्वागत हुआ अतः इसके साथ ही स्वर लिपि, कलाकारों के नाम, नाटक संबंधी सम्मतियाँ भी ग्रंथ के साथ शामिल कर दी हैं। अनुवाद, मंच प्रस्तुतिकरण आदि के विषय में क्या कहूँ वह तो औरों के कहने की बात है। मुझे तो संतोष इतना है कि अनेक रसज्ञ विद्वानों और दर्शकों ने इसे मंच पर देखा और सराहा; एक साहित्यिक कृति का और क्या पुरस्कार हो सकता है। स्वयं कविवर ओझा जी अनुवाद पढ़कर तुष्ट और प्रसन्न हुए थे और मंचपर देखकर कितने अधिक प्रसन्न होते इसकी कल्पना मैं कर सकता हूँ। उनके यशस्वी पुत्र श्री पुष्कर राय उ. ओझा ने ६२ और ७२ के प्रयास देखे और संतोष व्यक्त किया और उन्हीं की अनुमति से यह प्रकाशन संभव हो सका है।

इस 'संभव' के पीछे अनेक महानुभावों के वरद हस्त इस अकिंचन के सिर पर रहे हैं और इनका आभार विनम्र कृतज्ञता सहित अर्पित करता हूँ—

श्री अशोक जी, श्री काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर', श्री मोहन लाल गुप्त, स्व. शिव प्रसाद मिश्र 'रुद्रकाशिकेय' श्री कृष्णचंद वेरी, श्रीमती सुहासिनी मेहता, श्री नीनू मजुमदार, डा. दिनेश मजुमदार, श्री बालकृष्ण विश्वनाथ फड़के, श्री डा. भालचंद्र विष्णु पाटेकर श्री धर्मपाल नंदा, तथा अन्य अनेक सहयोगियों और कलाकारों, सहृदय दर्शक-आलोचकों का आभारी हूँ जिन्होंने इसे संभव बनाया। आभारी हूँ श्री नागरी नाटक-मंडली का जिसने अपने मंच पर इसे स्थान दिया। आभारी हूँ हिंदी प्रचारक संस्थान तथा वेरोनिका प्रेस तंत्रियों का जिनकी कृपा से यह कृति प्रकाश में आ रही है और अपने विशाल हृदय पाठकों का जो इसका रसानंद पान कर मुझे कृतार्थ करेंगे।

—भालु मेहता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाला जोगन

(शेणी विजानंद)

स्वर लिपि : डा. भाल चन्द्र वामन पाटेकर

श्री बालकृष्ण विश्वनाथ फड़के

गीतों की संगीत रचना : श्री नीनू मजुमदार (बम्बई)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बालाजोगन

स्वरलिपि तथा निदेश

सर्ग - प्रथम

[यवनिका उठने से पूर्व नेपथ्य से राग जौनपुरी का आलाप और फिर राग बहार की धुन सुन पड़ती है और तब क्रमशः तबले और मृदंग पर चक्करदार और परन वादन होता है। मृदंग की अन्तिम 'धा' पर दर्शक मंडप का प्रकाश मंद होने लगता है। काव्य की प्रथम सात पंक्तियों का पाठ होता है और सातवीं पंक्ति के पाठ के साथ ही दर्शक मण्डप में पूर्ण अंधकार छा जाता है और परदा खुलता है। मंच पर शनैः शनैः आलोक सृष्टि होती है। दृश्य गाँव के चरागाह का है। दूर क्षितिज पर गाँव के घरों-वृक्षों-मन्दिरों की शीर्ष रेखा और उनसे पीछे गिरनार पर्वत जिसके शिखर पर अंबा माता का मन्दिर है, दिखाई पड़ते हैं।]

— वृन्दवादन —

जौनपुरी :

सारेमप (नि)धु — — — प , पधुप म प (म)गु — — रेसा रे — — मुसा ,

सारेमप (धु)धु — — — सां , रेंनी सारें (नि)धु — — प , प (मं)गुं — — रेंसां रें — सां ,

रेंनि सारें (नि)धु — — प , पधुप मप (म)गु — — — रेसा रे — — मु — सा —

बहार :

प सा — — प सा सा (६ बार) [व्हैम्पिंग]

पं — — — मंगुं मंमं रेंसां निंसां (२ बार)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांपं मंपं मंपं मंपं मंग़ं मंमं रेंसां निसां (२)

पमं पं – मंग़ मं – रेंसां रें – सांनि सां (२ बार)

पंगं –पं मंग़ –मं रेंसां –रें सांनी –सां (२ बार)

निध निसां रेंसां निसां निप मप ग़म रेसा

मग़ मम रेसा निसा निध निनि पम पप मंग़ं मंमं रेंसां निसां निध

निसां रेंसां निसां निप मप ग़म रेसा ,

मग़ –म रेसा निसां निध –नि पम पप मंग़ं –मं रेंसां निसां निध

निसां रेसां निसां निप मप ग़म रेंसां ,

मम ग़म मग़ मग़ मग़ मम रेसा निसा निनि धनि निध निध निव निनि पम पप

ममं ग़मं मंग़ं मंग़ं मग़ं मंमं रेंसां निसां , निध निसा रेंसा निसाँ निप मप गम

रेसा मप ग़म निध निसां सां – सां – (३ बार, तिहाई के रूप में, इसी के सम से—

झाला—सरोद—सितार पर—

निसांसांसां (४ बार) निरेंरेंरे (४) निसांसांसां (४) निधनिध (२) सांनिसांनि

रेंसांनिसां (२) धनि निध निनि धनि धसां सांनि सांसां निसां (२)

सांपं मंपं मंयं मंपं मंग़ं ममं रेंसां निसां ,

(निध निसां रेंसां निसां निप मप ग़म रेसा) (३ बार) मप ग़म निध निसां सां– सां–

(तिहाई का चक्करदार— इसके वाद तबले और मृदंग पर चक्करदार और परन के साथ तिहाई लेकर, गीत आरम्भ होता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[इस संगीतमय काव्यपाठ में क-ख-ग तीन पुरुष स्वर और घ-ङ नारी स्वर हैं। काव्यपाठ समवेत् स्वर में आरंभ होता है]

बहार

क ख : सां नि सां नि प | प म प ग म
ग घ   गी – त म य | सृ – ष्टि थी –

ङ   सा म म म म | म प म प ऽ | प म प ग ऽ | ग म रे सा सा
    शि ख र प र | गी – र के – | गु न गु ना – | ता – प व न

सा सा म म म म म ऽ | म ऽ नि ध नि ध नि प
क ल क ल क र ती – | चं – च ल स रि ता –

म ऽ म नि ऽ नि ध नि ऽ ध नि ऽ नि ध | धनि सां नि सां
कू – ज ती – अ म रा – इ यों – में – | को – – कि ला

सा म म म ऽ म ऽ प ग म म नि ध नि ध नि प प
वि ट प की – डा – ल प र कू – क ते – मो – र

म – म नि – ध ध – नि सां – रें सांनि धनि सां
ग्वा ऽ ल वा ऽ ल वां – सु री – ब जाऽ ऽऽ ते

सां गं गं गं ऽ मं रें रें सां ऽ नि – सां नि ध नि ऽ सां ऽ
गूं – ज ता – वि ज न में – गी – त ता – रों – का –

[परदा खुलता है]

भीमपलासी

ख : ग म प नि प सां नि ध प प ध म प ग सा ग म प – प
    सं ऽ गी ऽ त सा ऽ ग र ल ह रा ऽ ता ऽ सा – नं ऽ द

नि ऽ सां ऽ गं रें ऽ सां – सां नि ध प प नि प सां ऽ सां
डू – बा – सु रो – में – वे – सु ध वि जा – नं – द

[विजानंद का प्रवेश—भैंसों की घंटियों की आवाज······ ······]

भीमपलासी

ङ : सा सा म ऽ म ऽ म ऽ म म म प ग म प प ऽ
    क र ता – गो – चा – र ण अ के – ले – ही –

प म प नि ध ध प
सु न ता – हु आ –

प ऽ ध म ऽ प ग ऽ म – सा ग म ग रे सा
ता – ल धे – नु ओं – की – प ग ध्व नि में –   [तबले पर पगध्वनि]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्ग - १

[सौराष्ट्र में गिरनार पर्वत की तराई में सघन गीर का वन है। वन के अंदर लघु ग्राम है 'गोरवियाली'। शताब्दियों पूर्व यहाँ चारण-चरवाहे और ग्वाले रहते थे। यहाँ था अनाथ बालक विजानंद जिसने प्रकृति के सानिध्य से संगीत सीख लिया था। यहाँ था वेद्दा-दस सहस्र भैंसों का स्वामी, गाँव का प्रधान। यहाँ थी परम रूपवती वेद्दा की कुमारी कन्या शेणी।]

गीतमय सृष्टि थी
शिखर पर गीर के गुनगुनाता पवन
कल कल करती चंचल सरिता
कूजती अमराइयों में कोकिला
विटप की डाल पर कूकते मोर
ग्वाल बाल बांसुरी बजाते
गूंजता विजन में गीत तारों का

संगीत सागर लहराता सानन्द
डूबा स्वरों में बेसुध विजानन्द

करता गोचारण अकेले ही
सुनता हुआ
ताल धेनुओं की पग ध्वनि में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि ऽ प नि ऽ नि ध म प नि ध प
गी – त भी – स र स जै – से –

प नि सां गं रें सां नि सां नि ध ऽ प ऽ
मै – सों – की – भां – भ री – में –

ध : प नि सां गं रें सां नि नि ध ध प ऽ [जलतरंग]
स रि ता – के – क ल क ल में –

ग म प सां – प ग ग रे ऽ सा –
ज ल त रं – ग ब ज ता – सा –

नि ऽ नि ऽ नि ऽ सां नि ध ध प ऽ
वृ – क्षों – के ऽ कं – प न में –

सा ऽ ग ऽ म ग रे ऽ रे सा – [वीणा की झनकार]
वी – णा – झं – का – र ती –

क : सां ऽ सां नि सां ध ऽ प ग प धनि सां [राग मांड]

औ – र फि र सो – च ता – था– –

सां सां नि सां ध – ध – धप ध – पध – पनी – ध – प प
अ ग ज ग सा – रा – लय ता – लसे – बंधा – है – य ह

सां ऽ सां ऽ सां ऽ नि रे सां सां ऽ सां ऽ
मैं – भी – ए ऽ क प्रा – णी ऽ हूँ ऽ

ध – प ध प ध – नि ध – प –
गी – त म य सृ – ष्टि का – ही –

गं ऽ गं ऽ गं ऽ रें – गं सां – सां
मैं – ही – क्यों – गी – त शू – न्य

रें ऽ रें रें रें – सां ग रें गं रें – सां –

अं – त स में – मे ऽ ऽऽ रे – भी –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत भी सरस जैसे

भैसों की भाँभरी में

सरिता के कल कल में

जल तरंग बजता सा

वृक्षों के कंपन में

वीणा झंकारती

और फिर सोचता था

अगजग सारा लय ताल से बंधा है यह

मैं भी एक प्राणी हूँ

गीतमय सृष्टि का ही

मै ही क्यों गीत शून्य

अंतस में मेरे भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि ऽ सां ध – प ध नि ध ऽ प – [तारों की झनकार]
ब्र ऽ ह्म ना – द वै ऽ सा – ही –

ग – ग प – प ध – नि – सां सां
जा – ग ता – न हीं – क्यों – फि र

विजानंद— सा – सा ग – सा ग – ग प – प
मे – रे दे – व जा ऽ गो जा – गो

ग प ध – प ध – ध –
मे रे भा ऽ ग जा ऽ गो ऽ

प – ध सां सां – सां – सां रें सां –
अं ऽ त स में ऽ सो ऽ ये हु ए ऽ

प धसां गं – रें गं – गं रें – रें धसां – सां –

मे रेऽ रा ऽ ग जा ऽ गो जा ऽ गो जाऽ ऽ गो ऽ

[मंच के मध्य में विजानंद प्रार्थना भाव में हाथ उठाए बैठा है और प्रकाश के रूप में उस पर रागों की वर्षा होती है।]

[*रागमाला*—बसंत, बहार, बसंत, केदार, नंद, मांड का क्रमशः आलाप]

क ख ग सां रें गं रें सां – गं – रें – सां – प ध सां – सां
घ ङ:

लोऽ ऽऽ ऽ ऽ जा ऽ गे ऽ रा – ग अ पा – र

घ : सां सां ऽ सां – सां सां ऽ नि नि नि सां ध ध प – [मांड]
ऊ पा – जा – ग ती – सु न स्व र उ स का –

ग ग प ऽ ध ध ध प धनि सां सां

उ स के ऽ स्व र की – लोऽ ऽ री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रह्मनाद वैसा ही

जागता नहीं क्यों फिर ?

मेरे देव जागो, जागो

मेरे भाग जागो

अन्तस में सोये हुए

मेरे राग जागो, जागो

जागे राग अपार लो जागे राग अपार

उषा जागती सुन स्वर उसका

उसके स्वर की लोरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें रें रें ऽ रें ऽ रें ऽ सां – रें गं सां – सां –
सु न सो – ती – थी – सं – सृ ति सा – री –

ग – प प ध ऽ ध प धनि सां सां
हो – क र गी ऽ त वि मोऽ ऽ री

ङ : ग – ग – ग ग ग – रे – ग प रे रे सा ऽ | ग ग प प ध ध ध ग प – प –
गा – ने – ल ग ती – थी – को – कि ल भी – | सु न क र उ स के – गा – ने –

ध – प ध – ध ध – प – ध नि ध ध प ऽ ग ग प प ध ध ध प धनि सां सां
नी – ल कं – ठ भी – गा – ते – भ र ते – बु ल बु ल ल लि त त राऽ ऽ ने

क : गं ऽ गं रें गं ऽ गं – गं रें – गं रें – सां – | रें – सां रें – सां रें गं रें – सां –
जी – व न की – सं – गि नी – ब नी – सी – | सृ – ष्टि ना – च ती – गा – ती –

सां ऽ सां ऽ सां ऽ सां सां नि नि नि सां ध ऽ प ऽ
दो – नो – के – स्व र ल य की – धा – रा –

ग ऽ प प ध ऽ ध प धनि सां सां
हो – क र ए – क सु हाऽ ऽ ती

ख : सां सां ऽ सां ऽ सां सां सां नि ऽ नि सां ध ध प – | ध प ध ऽ प ध म प – प –
वि जा – नं – द औ र वि – श्व उ भ य थे – | ए क ता – ल में – आ – ते –

ध ऽ ध ऽ ध ऽ ध प – नि ध ऽ ऽ ऽ ऽ
गा – ते – औ – र ना – च ते – – – –

कख ग ग ग प – प ध प धनि सां सां –
गघ
ङ : उ भ य ना – च ते – गाऽ – ते –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुन सोती थी संसृति सारी
होकर गीत विभोरी
गाने लगती थी कोकिल भी
सुनकर उसके गाने
नीलकण्ठ भी गाते, भरते
बुलबुल ललित तराने
जीवन की संगिनी बनी सी
सृष्टि नाचती गाती
दोनों के स्वर लय की धारा
होकर एक सुहाती
विजानंद और विश्व उभय थे
एक ताल में आते
गाते और नाचते
उभय नाचते गाते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत १

[राग मांड]

विजानंद : सा ग – ग ग – रे म – म – पग ग – रे ग – सा सा – सा –

गो विं ऽ द गा ऽ न गा ऽ वो ऽ गोऽ पा ऽ ल गा ऽ न गा ऽ वो ऽ

नि़ नि़ नि़ नि़ सा सा सा सा सा ग ग ग गमप– प –

प र म पु रु ष ने ऽ पिं ऽ ड ब नाऽऽऽ या ऽ

प प प ध मधपम ग रे रे गपमग रे सा सा सा –

उ स में ऽ माऽऽऽ या ऽ ऽ जाऽऽऽ ल बि छा या ऽ

म प गम ग प – प ध ध – ध – नि प प

प र माऽ ऽ णु ऽ से ग ढ़ी ऽ दे ऽ ह स ब

प सां सां सां नि ध प – ध – प म मधपम ग –

च ल च ल अ प नी ऽ वी ऽ न ब जाऽऽऽ बो ऽ

[विजानंद गाता नाचता चला जाता है। प्रकाश मंद होता है और पृष्ठ भाग में वेदा की चौपाल का दृश्य पट आ जाता है; तत्काल ही शेणी सखियों के साथ आती है, गौवों के गले की घण्टियों की आवाज। संध्या का समय है, ग्राम बालाएं नृत्य द्वारा गो-दोहन तथा गाँव में शाम की हलचल व्यक्त करती हैं।]

[राग यमन]

क : नि़ नि़ रे ग प – रे – सा – | प – मं प – मं प मं ग ग
झि ल मि ल सं – ध्या – है – | मू – मि से – ग ग न त क
ग ग ग – ग – ग – म ग रे – | नि़ – रे ग प – रे – सा –
च ल ता – गो – दो – ह न है – | गो – र बि या – ली – में –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत १] [राग मांड]

विजानंद— गोविन्द गान गाओ,

गोपाल गान गावो

परम पुरुष ने पिण्ड बनाया

उसमें माया जाल बिछाया

परमाणु से गढ़ी देह सब

चल चल अपनी बीन बजाओ।

गोविन्द गान गावो

झिलमिल संध्या है

भूमि से गगन तक

चलता गोदोहन है

गोर वियाली में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प – मं ग प – प – मं ध – नि ध प – | सां – सां नि सां ऽ नि ध ध – प –
वे – दा – की – मैं – सों के – थ न से – | सू – र ज की – कि र नों – सा –

रे रे ग – प – रे – रे सा – सा –
छ न ता – है – श्वे – त दु – ग्ध –

ग : सा – म – म – म ग॒ – म ग ध – [बागेश्वरी]
जै – से – श – क्ति सा – ध क है –

ध – ध नि॒ – ध म – म ध – ध नि॒ – ध सां –
खीं – च ले – ता श – क्ति श – क्ति पुं – ज से –

ख : सां सां सां – सां रें नि॒ सां नि॒ ध – ध | ध – ध – ध म ध नि॒ ध ध म म म –
अ थ वा – अ नु र – क्त भ – क्त | को – ई – नि ज दे – व ता – को –

म – म – म प ध ध म म ग॒ ग॒ ग॒ ग॒ – ग॒ ग॒ सा रे – रे सा –
जै – से – खीं – च ले – ता – अ नु र – क्ति की – श – क्ति से –

ङ : सा – म – म – ग॒ – म ध ध – | ध ध नि॒ – नि॒ ध – नि॒ ध म म ग॒
वै – से – ही – शे – णी – मी – | र स धा – र खीं – च ती – थी –

ग॒ – म – ध – नि॒ ध सां –
मैं – सों – के – थ न से –

ख : म – प नि नि नि – नि – सांनि ध धनि सां नि सां प निसां रें नि॒ ध प [राग-देस]

औ – र फि र वै – से – हीऽ – खींऽ ऽ च ता वि जाऽ ऽ नं ऽ द

प – प – प – ध प म – ग रे – म – प – नि – नि – नि – सांनि ध

वै – ठा – ए – का – की – क हीं – वी – णा – के – ता – रों – सेऽ ऽ

धनि॒ सां सां नि॒ सां नि॒ सां नि॒ सां – सां

सुंऽ ऽ द र सु म धु र गी – त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेदा की भैसों की थन से
सूरज की किरनों सा
छनता है श्वेत दुग्ध
जैसे शक्ति साधक है
खींच लेता शक्ति शक्ति पुंज-से
अथवा अनुरक्त भक्त
कोई निज देवता को
जैसे खींच लेता
अनुरक्ति की शक्ति से
वैसे ही शेणी भी
रसधार खींचती थी
भैंसों के थन से।
और फिर वैसे ही खींचता विजानंद
बैठा एकाकी कहीं
वीणा के तारों से
सुन्दर सुमधुर गीत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत - २

[गीत के स्वर उमगते हैं— क्रमशः दूर से निकट आते हैं, शेणी सखियों को भूलकर गीत सुनती है ।]

विजानंद

सा प प – प प धप म म प प – प –

गि र की ऽ स ब हुऽ री या ऽ ली – ले –

सां सां सां – सां रेंसां नि ध प – ध – प म ग रे –

मो रे रा ऽ म बऽ ना ऽ यी ऽ पू ऽ त री ऽ ऽ ऽ

सा सा ग ग ग ग – ग रे म – म म – ध धप म ग

हो रा ऽ म ब ना ऽ ई ऽ पू ऽ त री ऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽ

सा रे रे रे रे रे गरेसा– सा रे सारेग– ग –

ब र खा ऽ ऋ तु की ऽऽऽ बि जु री ऽऽऽ ले ऽ

सा प प प प प धप म म प प प प – प –

द र स प र स कऽ र नै ऽ न जु डा ऽ लो ऽ

प सां सां रेंसां नि ध प – ध निध प म ग रे सा

अ ज ब बऽ ना ऽ ई ऽ पू ऽऽ त री ऽ हो ऽ

[गीत के स्वर क्रमशः दूर चले जाते हैं— शेणी विस्मृत सी है]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत - २]

विजानंद— गिर की सब हरियाली ले
मोर राम बनाई पुतरी
हो रामा बनाई पुतरी
बरखा ऋतु की बिजुरी ले—
दरस परस कर नैन जुड़ा लो,
अजब बनाई पुतरी—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[राग केदारा]

घ : सा – म – म – म ग प – प मं प – | प मं प सां – ध प प मं ध प म –

जै – से – कि सी – – वि – स्मृ त सी – | दे – व ता – की – प्र ति मा – के –

प प सां – सां – सां – ध ध – प | मं – प – प सां – म – रे – सा –

च र णों – में – फू – ल ए – क | को – ई – च ढ़ा – जा – ता – है –

ङ : सा – म – म म – म रे प प प | ध नि ध ध प प मं प म म

जैं – से – क भी – पा – व स का | ए – क ज ल बिं – दु गि र

प – सां – सां ध ध म प – | प – प प मं प म – म म रे सा – सा –

प्या – सी – ध र ती – की – | त – प्त धू – ल में – स मा – ता – है –

क : सा – म – म – [रागेश्वरी]

वै – से – ही –

म प ग म रे सा रे नि़ सा नि़ ध़ ध़ नि़ सा ग ग ग म – ध नि ध सां

शे – णी – के – हृ द य में – स्व र मा – र वि जा – नं – द का

सां – सां सां रे नि सां नि ध –

जा – क र स मा – ग या –

ध नि ध म म ग म रे – रे सा – सा ग म ध ध नि ध – ध नि सां सां सां

अं – कि त स्व यं – भी – हु आ – उ स के – हृ द य – में ऽ ऽ व ह

घ : ध – नि – सां गं गं गं – मं रें – सां – | सां – सां – सां नि सां नि ध –

ब्र ऽ ह्म – ज्यो – ति जा – ग ती – ज्यों – | जो – गी – के हृ द य में –

सां – सां सां – रें नि ऽ नि ध

म – ग्न हो – तु री ऽ य में

क ख ग : ध नि ध म म प ग म रे रे सा – | सा ग म ध ध – ध – नि ध –

यौ – व न के – सा – ग र में – | त रु णी – भी – पा – ग ई –

सां – सां – सां रें नि सां नि ध म म

मो – ती – अ न मो – ल ए – क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे किसी विस्मृत सी
देवता की प्रतिमा के
चरणों में फूल एक
कोई चढ़ा जाता है
जैसे कभी पावस का
एक जल बिंदु गिर
प्यासी धरती की
तप्त धूल में समाता है
वैसे ही
शेणी के हृदय में स्वर भार विजानंद का
जाकर समा गया
अंकित स्वयं भी हुआ
उसके हृदय में वह
ब्रह्म ज्योति जागती ज्यों
जोगी के हृदय में
मग्न हो तुरिया में
यौवन के सागर में
तरुणी भी पा गयी
मोती अनमोल एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क ख ग : ध नि ध सां ऽ सां
घ ङ वि जा ऽ नं ऽ द

[शेणी और सहेलियों का प्रस्थान ! मंच पर पूर्ण अंधकार ! पुनः वन प्रदेश का दृश्य]

[सोहिनी]

क ग : ग – ग ग ग ग – रेसा ग – ग
भी ऽ गी कु छ ओ ऽ र रा ऽ त

ग – र मं – ग मं – ग मं –
गी ऽ र प्रां ऽ त शां ऽ त था ऽ

ग – ग मं ध ध – ध मं ध – ध ध
जा ऽ ग ती ऽ थी ऽ शे ऽ णी ऽ व स

मं ध सां सां सां सां – सां निध सां – सां

डू बी ऽ हु ई ऽ ऽ चिं ऽऽ ता – में

सां सां गं – गं गं – सां गं – गं –
औ र प्रे ऽ म जा ऽ ग ता ऽ था ऽ

सां गं मं – गं मं गं रें सां –
उ स के ऽ ऽ हृ द य में ऽ

ख : सां – सां सां – सां नि सां ध निसांनि ध

औ ऽ र दू ऽ र व न में कऽऽ हीं

ध नि सां गं सां गं – गं गं – गं
के स री ऽ नि ना ऽ द ता ऽ था

सां गं मं – गं मं ग रें सां निध सां सां

का ली ऽ ऽ र ज नी ऽ का ऽऽ रा ज्य

मं ग ग मं ध – मंधनिसां सां सां

छा ऽ या च हुँ ऽ ओऽऽऽ र ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भींगी कुछ और रात

गीर प्रांत शांत था

जागती थी शेणी बस

डूबी हुई चिंता में

और प्रेम जागता था

उसके हृदय में

और दूर वन में कहीं

केसरी निनादता था

काली रजनी का राज्य

छाया चहुँ ओर ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[विजानंद का प्रवेश]

ङ : ग – ग ग – ग ग मं ग
जा ऽ गी रा ऽ त स ह सा
ग म ध ध ध ग मं धमं ग ग
क र व ट व द ल ऽऽ क र
ग – ग मं मं ध – ध मं ध ध मं ध धनिसां सां सां रें सां
औ ऽ र फि र लौ ऽ टे प्रा ऽ ण सो ई सीऽऽ प्र कृ ति में

ध : ध नि सां गं सां गं गं गं गं
औ र व ह ना ऽ च उ ठी
सां गं मं गं मं गं रें सां सां सां नि ध सां सां सां सां
सु न क र वि जा ऽ नं द का ऽ ऽ आ वा ह न

गीत - २

विजानंद— मं ध मं ग रे रे सा – सा – सा ग
जा ऽ ग स हे ऽ ली ऽ जा ऽ ऽ ग
सा सा नि़ – नि़ सा रे ग ग ग
ए क बा ऽ त व ता ऽ ऊँ ऽ
ग ग ग मं – ग़ –
तो हे सु ना ऽ ऊँ ऽ
सा सा सा ग ग ग मं ध ध – ध – ध ध ध मं ध सां सां –
तो री का ऽ ली चु न र में ऽ चाँ ऽ द ता ऽ रे च म के ऽ
सां सां सां सां सां रें सां – सां सां नि ध ध – मं ध मं ग
मु स का यें बा द ल ऽ हँ सी झी ऽ नी ऽ झ म के ऽ
मं ध मं ग रे रे सा – सा – सा
जा ऽ ग स हे ऽ ली ऽ जा ऽ ग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जागी रात सहसा

करवट बदलकर

और फिर लौटे प्राण सोई सी प्रकृति में

और वह नाच उठी

सुनकर विजानंद का आवाहन

[गीत - ३]

जाग सहेली जाग, जाग

एक बात बताऊँ

तोंहे सुनाऊँ– जाग

तोरी काली चूनर में चाँद तारे चमके

मुसकाये बादल हँसी झीनी झमके

जाग सहेली जाग—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत के अन्त में शेणी का प्रवेश]

कङ : सा सा सा सा ग – ग रे॒ ग – ग | मं – ग मं – मं ग मं ग मं –
ग हृ न अं धे – री – रा – त | श्या – म व – र्ण ग ग न का –

ध ऽ ध मं ध ऽ ध ध ध ध म ध – ध – | सां – सां सां ध सां – ध सां – सां
दे ऽ ख र हे – अ न गि न त ता – रे – | ए – क ट क ए – क ध्या – न

ध नि सां गं – मं गं रें॒ सां – सां
सु न र हे – स भी – ता – न

खग : सां सां सां – सां सां सां ऽ नि सां नि सां नि ध | नि ध मं ग – ग मं ध – सां सां
स्व र सा – ग र की ऽ ल हृ रों – प र | झू – म ता – आ – रो – हृ न

रें॒ नि ध मं मं मं ग – | ग – ग मं – ध ध ध मं ध सां – सां
अ व रो – हृ न में – | प्रा – र्थ ना – म य वि जा – नं – द

गीत - ४

विजानंद— मं ध मं ग ग रे॒ सा सा – सा ग – ग
जा ऽ ग स हे ऽ ली जा ऽ ग जा ऽ ग

सा सा नि॒ – नि॒ सा रे॒ ग ग ग
ए क गी ऽ त सु ना ऽ ऊँ ऽ

मं – – – ग रे॒ सा नि॒ – नि॒ सा रे॒ ग ग ग
आ ऽ ऽ ऽ ऽ ए क गी ऽ त सु ना ऽ ऊँ ऽ

ग ग ग ग ग ग मं – धमं ग – सा ग ग – ग मंध मं ग –
तो रे घूं घ ट के को ऽ ऽ र से ऽ न य ना ऽ च म ऽ ऽ के ऽ

ग – ग ग मं ध मं ध ध सां सां –
पाँ ऽ व के घुं घ रु ऽ छ म के ऽ

सां – सां – सां सां – रें॒ सां – रें॒ नि सां नि ध
गी ऽ तों ऽ में रा ऽ ग रं ऽ ग ब र सें ऽ

ध नि सां गं सां गं गं – रें॒ गं रें॒ गं रें॒ सां – सां
म न में ऽ कै ऽ सी ऽ उ ठ ती ऽ त रं ऽ ग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गहन अंधेरी रात
श्याम वर्ण गगन का
देख रहे अनगिनत तारे
एक टक एक ध्यान
सुन रहे सभी तान
स्वर सागर की लहरों पर
झूमता आरोहन अवरोहन में
प्रार्थनामय विजानंद

[गीत ४]

जाग सहेली जाग, जाग
एक गीत सुनाऊँ
आ एक गीत सुनाऊँ
तोरे घूंघट के कोर से नयना चमके
पाँव के घुघरु छमके
गीतों में राग रंग सरसे
मन में कैसी उठती तरंग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां सां सां सा सां – सां रें नि ध ध ध मं ध मं ग
र स म र पू ऽ र छ मा ऽ छ म ब र से ऽ

रव : म – म नि – नि सां नि सां – सां [देस]
सृ – ष्टि के ऽ प्र ण य गी ऽ त

नि – नि सां नि सां – रें – नि – ध प
अ ऽ र्पि त कि ये ऽ शे ऽ णी ऽ को ऽ

प – प – प प – ध प म ग रे
जै ऽ से ऽ वि जा ऽ नं ऽ द ने ऽ

म – प नि नि – नि सां नि सां – सां –
कू ऽ क उ ठी ऽ को ऽ कि ला ऽ भी ऽ

प नि सां रें रें नि सां सां –
व न में ऽ वि ज न में –

नि – नि – नि नि नि – सां नि सां –
मा ऽ नो ऽ व न शे ऽ णी ऽ की ऽ

नि नि सां प निसांरे नि – ध प
स र स स हेऽऽ ली ऽ सी ऽ

प – प – प प – प म प ध प म म ग रे
कू ऽ क – उ ठी ऽ प र मा ऽ प्र कृ ति ही ऽ

म – प नि नि नि नि नि नि प निसां रें
औ ऽ र फि र मु ख रि त हु ईऽ ऽ

रें – रें – रें मंगं रेंगं नि – नि सां –
वी ऽ णा ऽ वि जाऽ ऽऽ नं ऽ द की ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रस भरपूर छमाछम बरसे । जाग०

सृष्टि के प्रणय गीत

अर्पित किये शेणी को

जैसे विजानंद ने

कूक उठी कोकिला भी

वन में विजन में

मानो बन शेणी की

सरस सहेली सी

कूक उठी परमा प्रकृति ही

और फिर मुखरित हुई

वीणा विजानंद की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत-५

विजानंद— सा सा सा रेगम ग म – ग – रेसा रे सा़नि़ नि सा रे ग सारे सा सा
को य ली याऽऽ ऽ हो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ मो रे ऽ अं बु वा ऽ पै ऽ बो लो

रे सा़ नि़ नि़सा रे ग सारे सा सा सा
सु नुं ऽ मैं ऽ ये ऽ ऽ ऽ पु का र

रे – सा नि़ नि़ सा रे ग सारे सा सा सा
सु ऽ ने ऽ शे ऽ णी ऽ ऽ ऽ पु का र

सा रे म म पध मप ग – रे सानि़ नि़ सा – रे ग सारे सा सा सा
प्रा णों ऽ में गुंऽ थोऽ मे ऽ रे ऽ ऽ प्रा णों ऽ की ऽ ऽ ऽ पु का र

सा सा मरे रे म – म प – प
मे री दुऽ नि या ऽ का सा ऽ र

प – म प नि नि ध धपम प – म
ते ऽ री स्व र ल ह रीऽऽ प ऽ र

धप पम ग रे ग सारे सा
मेऽ रे ऽ म न डो ऽ ऽ लो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत-५]

विजानंद— कोयलिया हो मोरे अंबुवा पै बोलो
सुन्नु मैं यह पुकार
सुने शेणी पुकार
प्राणों में गूथों मेरे प्राणों की पुकार
मेरी दुनिया का सार
तेरी स्वर लहरी पर
मेरे मन डोलो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क : सा सा सा सा – रे॒ म – म – ग म – म – [राग-भैरव]
न य न ने ऽ न दे ऽ खा ऽ क भी ऽ था ऽ

म – म म – म – म म – म म ग प – प –
स्व ऽ प्न में ऽ भी ऽ न पे ऽ ख ऽ क भी ऽ था ऽ

ध – प ध॒ – ध॒ – ध॒ ध॒ प ध॒ – प ध॒ –
भू ऽ सु रों ऽ के ऽ प र म ब्र ऽ ह्म सा ऽ

नि – नि ध॒ नि – नि – ध नि – नि – ध॒ नि ध॒ नि –
भ ऽ क्त ज नों ऽ के ऽ नि रा – का – र दे व सा ऽ

ध॒ सां – सां – नि सां – नि रें॒ – रें॒ – गं रें॒ सां नि नि ध॒ धनि सां सां – सां –

वि जा ऽ नं – द ना ऽ म से ऽ ही ऽ प रि च य था ऽ शे ऽ ऽ णी ऽ का ऽ

ख ङ: सां सां सां सां सां – सां – रें॒ नि ध॒ मॅ म – म – [ललित]
क ण क ण वा ऽ सी – अ वि ना ऽ शी ऽ सा ऽ

ग रे॒ ग – रे॒ ग ग ग रे॒ ग म मॅ म मॅ ग रे॒ रे॒ सा सा
दे व ता ऽ स ह श घ ट घ ट के ऽ नि वा ऽ सी ऽ सा

नि रे॒ ग ग म मॅ म – नि – मॅ म ध॒ मॅ म म –
व न उ प व न में ऽ आँ ऽ ग न भ व न में ऽ

ग – ग मॅ – ध॒ सां – सां सां – नि रें॒ नि ध॒ म ध॒ – मॅ म –
औ – र अं ऽ ग अं ऽ ग में ऽ म न की – उ मं – ग में ऽ

ग ग ऽ ग – मॅ ध॒ मॅ ध॒ ऽ ध॒ – ध मॅ धनि सां सां सां

चिं ऽ त ना ऽ में ऽ चे ऽ त ना ऽ में ऽ दे ऽ खाऽ ऽ य ह

घ : सां – सां सां सां सां सां रें॒ गं॒ गं॒ रें॒ गं॒ रें॒ रें॒ सां – [तोड़ी]
ता ऽ ल ल य स्व र के ऽ स रो ऽ व र में ऽ

नि रें॒ नि ध॒ ध॒ मॅ ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा सा –
डू ऽ बी ऽ हु ई ऽ शे – णी ऽ ने ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नयन ने न देखा कभी था

स्वप्न में भी न पेखा कभी था

भूसुरों के परम ब्रह्म सा

भक्तजनों के निराकार देव सा

विजानंद नाम से ही परिचय था शेणी का

कण - कणवासी अविनाशी सा

देवता सदृश्य घट घट के निवासी सा

वन उपवन में, आंगन भवन में

और अंग अंग में, मन की उमंग में

चिंतना में चेतना में, देखा यह

ताल लय स्वर के सरोवर में

डूबी हुई शेणी ने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध ध ध ध ध नि मं ध ध ध –
ज ग त स च रा ऽ च र को ऽ

नि – ध नि – नि – नि ध सां – सां –
डू ऽ ब ता ऽ सा ऽ गी ऽ तों ऽ में ऽ

रें ऽ रें गं रें सां ध सां – सां – सां –
गा ऽ य क वि जा ऽ नं ऽ द ऽ के –

ग : सां सां सां – सां ध सां ध मं मं ग – [हिंडोल]
स्व र के ऽ हिं डो ऽ ले ऽ च ढ़ी ऽ.

ग – ग – मं ग – सा सा सा –
सं ऽ गी ऽ त सा ऽ ग र में ऽ

सा ऽ सा ग – ग – मं – ध मं ध –
झू ऽ म ने ऽ को ऽ आ ऽ कु ल सी ऽ

मं मं ध ध सां – सां ध सां – सां –
त र स र ही ऽ थी ऽ शे – णी –

क ख सा सा सा सा – रे म – म – म – म – म – ग प – प – [भैरव]
ग घ ग ह न हो ऽ च ली ऽ थी ऽ नि ऽ शा ऽ घो ऽ र का ऽ ली ऽ
ङ : प प प प – म ध – ध – ध – प ध ऽ ध ध म – प – प –
ग ह न हो ऽ च ली ऽ थी ऽ गी ऽ त की ऽ ल य नि – रा ऽ ली ऽ

प प प प – ध सां – सां – सां रें – रें – गं रें रें सां –
ग ह न हो ऽ च ली ऽ औ ऽ र शे ऽ णी ऽ हृ द य में –

प नि – ध – प म – प म नि ध प म – ग रे – सा –
वि जा ऽ नं ऽ द के ऽ प्रे ऽ म की ऽ लो ऽ ल ला ऽ ली ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जगत सचराचर को

डूबता सा गीतों में

गायक विजानंद के

स्वर के हिंडोले चढ़ी

संगीत सागर में

झूमने को आकुल सी

तरस रही थी शेणी

गहन हो चली थी निशा घोर काली

गहन हो चली थी गीत की लय निराली

गहन हो चली और शेणी हृदय में

विजानंद के प्रेम की लोल लाली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[प्रभात होता है]

क ख सा ग़ प म ग़ सा रे़ सा ऽ ध़ – म – रे़ सा – [भैरवी]
ग घ फि र प्र भा ऽ त हु आ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

ङ : सा ग़ प म ग़ सा रे़ सा ऽ ध़ – म – रे़ सा –
फि र प्र भा ऽ त हु आ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

प – प – प ध़ सां – – नि़ – ध़ पध़ मप ग़ म ऽ [फिर प्रभात हुआ]

लौ ऽ टी ऽ ज ग की ऽ ऽ चे ऽ त नाऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ

ग़ – म म ध़ ध़ नि़ ध़ – सां सां सां गं़ रें़ – सां –
का – र्य – ज ग त में – स ब आ ऽ डू ऽ बे ऽ) (२)

प नि़ सां रें़ गं़ रें़ गं़ ऽ ऽ ऽ गं़ मं रें़ सां सां सां नि़ – प ध़ प –

सं ऽ गी ऽ ऽ त की ऽ ऽ ऽ ल ह रे ऽ फि र डो ऽ ल उ ठी –

ग़ प म ग़ सा रे़ सा ऽ ऽ ऽ ऽ सा ग़ प म ग़ सा रे़ सा –
फि र डो ऽ ल उ ठीं ऽ ऽ ऽ ऽ फि र प्र भा ऽ त हु आ ऽ

[शेणी का अनिच्छापूर्वक प्रस्थान । विजानंद पुनः 'गोविंद गान गावो' आरम्भ करता है । (भैरवी से खंभावती अंग से मांड राग पर आकर)]

[गाते गाते विजानंद का प्रस्थान, पूर्ण अंधकार और दृश्य परिवर्तन]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फिर प्रभात हुआ

लौटी जग की चेतना

कार्य जगत में सब आ डूबे ,

संगीत की लहरें फिर डोल उठीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृश्य - २

गांव की चौपाल का दृश्य। प्रकाश होने पर ग्राम प्रधान वेद्दा तथा कुछ अन्य ग्रामवासी बैठे दिखाई पड़ते हैं। संध्या का समय है। एक ग्रामवासी विजानंद को लेकर आता है, वेद्दा से परिचय कराता है, विजानंद प्रणाम करता है और वेद्दा उसे बैठने के लिए नियत आसन की ओर इंगित करता है। इस बीच नेपथ्य से बांसुरी पर मालकोश का आलाप चलता रहता है।

विजानंद के बैठ जाने पर वेद्दा उसे गायन आरम्भ करने का आग्रह करता है—और काव्यपाठ आरम्भ हो जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्ग - २

एक रात वेद्दा-दस सहस्त्र भैसों के स्वामी ने सब गाँव वालों को अपने आंगन में आमंत्रित किया और उसने विजानंद से गीत-वाद्य से चरणों का मनोरंजन करने को कहा। विजानंद ने विविध रसों में मोहक संगीत-नृत्य प्रस्तुत किया। प्रसन्न हो वेद्दा ने विजानंद से मन चाही चीज मांग लेने का अनुरोध किया। वह पहले तो हिचका पर बहुत आग्रह करने पर उसने वेद्दा से उसकी एकमात्र कन्या शेणी का कर मांगा। वेद्दा क्रोध से पागल हो उठा पर वचन-बद्ध था। उसने इस शर्त पर शेणी देना स्वीकार किया कि वह तीन सौ साठ दिन में एक सौ एक नवचंद्री भैंसे विवाह का उपहार ले आयेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेद्दा— गाओ विजानंद .. ..विजानंद गाओ। [काव्य-पाठ]

वाचक— चारण... ... ...ग्वाल वाल चरवाहे। [काव्य-पाठ]

(कुछ खेतिहर आते हैं)

विद्या .. .. पंडित भी

(पण्डित और अध्यापक आते हैं)

और अधिकारी भी

(ग्राम अधिकारी आदि आते हैं)

चाँदनी निशा... ... ...विजानंद ने।

(विजानंद तार छेड़ता है)

क ख सां सां ध नि ध म — — ध़ नि़ सा म म म [मालकोश]
ग घ सु न ने ऽ उ से ऽ ऽ आ ऽ ई ऽ स ब
ङ : ग — म — ध — ध नि ध नि सां ध नि सां गं गं — सां गं गं मं गं सां सा —
शे ऽ णी ऽ औ ऽ र स खि याँ ऽ बि ज ली ऽ सी ऽ उ ज ली ऽ उ ज ली ऽ
सां — ध नि ध म — ग म ग सा सा — ध़ नि़ सा म ऽ ग — म ध नि सां
का ऽ ली ऽ अ मा ऽ व ऽ स्या ऽ सी ऽ चा ऽ द रों ऽ में ऽ लि प टी ऽ

[शेणी और उसकी सहेलियाँ आती हैं और एक ओर बैठ जाती हैं]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्ग - २

वेदा— गाओ विजानंद गाओ
प्राणों में मोद भर
वीरों के गीत गाओ
गाओ तो मिलन के गीत
गाओ तो विरह के गीत
मधुर मधुर गीत गाओ तो
प्राणों को पंख दो
लहरायें हम
नील से निलय में
भूले क्षण भर को हम
प्रतिदिन का सारा श्रम
आओ विजानंद आओ
गाओ विजानंद गाओ

वाचक— चारण चतुर कुछ बैठे हैं
गोर वियाली के
ग्वाल बाल चरवाहे
विद्या बुद्धि मंडित भी
पंडित भी
और अधिकारी भी
चाँदनी निशा है
शशि और शर्वरी को साखी बना
वीणा के तारों को छेड़ा—विजानंद ने

सुनने उसे आयीं सब
शेणी और सखियाँ, बिजली सी उजली उजली
काली अमावस्या सी, चादरों में लिपटी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाचक— उत्सुक हृदय .. .. सह पायेंगे [काव्य-पाठ]

ख : ऩि सा रे रे रे – रे रे सा रे प ग – [दरबारी]
अ ऽ द्‌भु त ओ ऽ ज ज ग भ र में ऽ

ग ग ग म म म रे रे ऩि रे रे सा
भ र ता ऽ च ला ऽ जा ऽ र हा ऽ

म – म प प नि – ध नि – नि – नि नि सा – सां नि सां –
ओ ऽ र च हुँ ओ ऽ र छा ऽ ई ऽ घ न घो ऽ र घ टा ऽ

निसां रें रें ऽ सां रें नि – नि सां ऽ

जै ऽ ऽ से ऽ उ ऽ न्मा ऽ द की ऽ

[वीणा के तारों की झनकार]

क : रें रें सांनि सां- सां रें सां ध – निसां नि सां सां

लोऽ ऽ ऽ ऽ ऽ रु क ग या ऽ ऽ ऽ प व न

म प सां नि प ग म रे सा
रु की ऽ ज ल धा ऽ रा ऽ

रे ऽ सा सा रे म प ध – ध ध ध ध नि नि प –
ओ ऽ र न भ प थ के ऽ अ थ क प थि क दो ऽ

रें – रें – रें – सां सां नि सां रें सां ध – नि प ग – ग म रे रे सा –
चं – दा – सू ऽ र ज च ल ना ऽ भू ऽ ले – ओ ऽ र रु क ग ये ऽ

म म म – प प सां – ग ग ग म रे रे सा
ज न मा ऽ न स की ऽ च प ल क ऽ ल्प ना

सा म
रे ग – – प ध – – – ध – नि सां रें गं – – रें सा ध ध नि सां नि सां –
रु की ऽ ऽ रु की ऽ ऽ ऽ स – वं था ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ रु क ग ई –

सां – सां नि सां रें ध – ध – ध नि – नि प प
ओ ऽ र च ल प ड़ी – ए ऽ क मा ऽ त्र व स

म म प ऽ प सां – ग – म रे – रे सा
वि नि ऽमुंऽ क्त स ऽ गी ऽ त धा ऽ र ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्सुक हृदय है अब सकल समाज का
उर में आतुरता समा पाती नहीं उसके
मन में विचार उठते हैं नये भिन्न भिन्न
गीतों की जलन यह हम क्या सह पायंगे

अद्भुत ओज जग भर में
भरता चला जा रहा
और चहुँओर छाई घनघोर घटा
जैसे उन्माद की
लो रुक गया पवन
रुकी जल धारा
और नभ पथ के अथक पथिक दो
चंदा सूरज चलना भूले और रुक गये
जन मानस की चपल कल्पना
रुकी रुकी सर्वथा रुक गयी
और चल पड़ी एक मात्र बस
विनिर्मुक्त संगीत की धार ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत - ६

विजानंद — प प प म प प प प म – म म प प प
शि ख र शि ख र प र व्य ऽ थं भ ट क ता

म प धु – धु धु नि प प प
क्यों ऽ ढूं ऽ ढे आ ऽ का ऽ श

म म प प म प मपनिसां
ते रा सा ईं तु ऽभ्र में ऽ ऽ ऽ

ग ग म रे – नि रे सा रा
ज्यों फू ऽ लों ऽ में ऽ बा स

सा रे रे रे रे रे रे सा रे ग ग ग ग म रे सा रे नि सा
ग ह रे उ त र ग ह रे उ त र ग ह रे उ त र तूं

रे रे रे रे सा रे प ग म रे सा
दे ख ले अं ऽ त र में ऽ तूं ऽ

म प धनिसां सां नि निसांरें सां रें
कि त नीऽऽ ऊँ ऽ चाऽऽ इ यां

गं मं रें सां रेंरेंसांनि सां नि सां रेंसां ध
कि त नी ऽ गऽऽऽ ह रा ऽ इऽ यां

म प मपनिसां सां नि नि सां सां निप ग म रे सा
य ह भूऽऽऽ ल भु ऽ लै या ऽऽ भे ऽ द रे

रेसा ध ध नि सा सा
गऽ ह रे उ त र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत-६]

विजानंद— शिखर शिखर पर व्यर्थ भटकता

क्यों ढूंढ़े आकाश

तेरा साईं तुझमें

ज्यों फूलों में बास

गहरे उतर गहरे उतर गहरे उतर तं

देख ले अंतर में तूं

कितनी ऊँचाइयाँ

कितनी गहराइयाँ

यह भूल भुलैया भेद रे—

गहरे उतर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाचक— आत्मा के .. ..अगम गहराई में [काव्य-पाठ]

ङ : सा – रे रेगुपप प प प पधनि ध म गु रे [राग-काफी]

औ ऽ र जऽऽऽ त र के तंऽऽ त्र ब द ले

रे गु म प प | पधनि ध ध धनिसां सां नि सां सा

प थ ब द ले | मोऽऽ ह क अंऽऽ गु लि यों के

धसांरेंगुं गुं रे गुं रेंसां सा रें नि ध प

दूऽऽऽ र भ गी ऽऽ ज ड़ ता ऽ ऽ

प – प पधनि नि ध , ध नि धनिसां सां नि सां सां

मं ऽ त्र प्रेऽऽ म का प्र सा ऽऽऽ · रि त हु आ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आत्मा के
मन के
कपाट खुले
डूबे सब अंतर की अतल गहराई में
सुध बुध खो अपनेपन की
मूढ़ बने जीवन की अगम गहराई में

और जंतर के तंत्र बदले

पथ बदले

मोहक अंगुलियों ने

दूर भगी जड़ता

मंत्र प्रेम का

प्रसारित हुआ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत - ७

विजानंद— सां सां – सां रें नि सां नि ध प प
मि थ्या ऽ स ब ग्या ऽ न ध्या ऽ न

सा
प – ध प ध – प – म ग – रे सा – रे रेम ग रे नि –
शा ऽ श्व त है ऽ ए ऽ क स ऽ त्य जा ऽ न लेऽ ऽ हो जी ऽ

म
सा – सा ग – ग ग रे ग – ग प प ग रे ग मग रे सा –
व्य ऽ र्थ जी ऽ व न सं ग्रा ऽ म व्य र्थ प रि शो ऽऽ ध है ऽ

प ध धसां सां सां रेंसां नि ध नि – ध प प ध म प –
ओ स याऽ ने बा तऽ इ त नी ऽ तूं ऽ मा ऽ न ले –

ग – ग ग ग रे ग रे ग रे सा – रे म म पधमप ग – रे सा –
जी ऽ व न प थ प र च ल ना ऽ प्रे ऽ म सेऽऽऽ सी ऽ ख ले ऽ

प सां – सां सां रेंसा नि – ध प प – ध – म प –
प्रे ऽ ऽ म हीं चिऽ रं ऽ त न है – मा ऽ न ले ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत - ७]

विजानंद– मिथ्या सब ज्ञान ध्यान

शाश्वत है एक सत्य जान ले, होजी

व्यर्थ जीवन संग्राम, व्यर्थ परिशोध है

ओ सयाने बात इतनी तू मान ले। शाश्वत०

जीवन पथ पर चलना प्रेम से सीख ले

प्रेम ही चिरंतन है मान ले। शाश्वत०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग - ग ग - रे ग ग रे ग रेसा रें म म पधुपम गुरेमग रे सा

प्रे ऽ म से ऽ प व न च ले ऽ ऽ चाँ ऽ द ताऽऽऽ रेऽऽऽ उ गे

प सां सां सां - रेंसां नि ध नि - धप ध - म प -

प्रे ऽ म को ऽ तू ऽ भ ग वा ऽ न ऽ मा ऽ न ले ऽ

वाचक— नयनों से··· ··· ···भूल गये।

ध : [गोरख-कल्याण]

ध़ सा रे म म रे म रे म - म
ब द ला ऽ सं ऽ गी त रं ऽ ग

ध - ध - ध प ध ध ध - ध प नि - नि ध -
ती - खी - स्व र ल ह री ऽ क रु णा ऽ भ री ऽ

म - ध - सां - सां - ध सां - सां
वे ऽ धी ऽ ब्र - ह्मा - ण्ड पा ऽ र

ध सां रें मं रें - नि सां - नि - ध ध म ध सां ऽ सां
ब र सा - प्रे ऽ म ही - नों - प र ति र स्का ऽ र

गीत - ८

विजानंद— ध़ सा सा - रे म म ध - ध - ध - ध - ध - म प ध सां - ध सां -
ज न नी ऽ ज ऽ न्म भू ऽ मि ऽ श्च ऽ स्व ऽ र्गा ऽ द पि ग री ऽ य सी ऽ

सां सां ध म - रे सानि़ रे सा सा - सा - सा

घ र का भे ऽ दी ऽ ऽ लं ऽ का ऽ ढा ऽ वे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रेम से पवन चले--चाँद तारे उगें

प्रेम को तू भगवान मान ले । शाश्वत०

नयनों से नैन मिले
डूब उर अंतर में
जड़ता गयी ज्ञान की
छूटा मोह बुद्धि का
जीवन के विष वैर भूल गये--भूल गये

बदला संगीत रंग

तीखी स्वर लहरी करुणा भरी

बेधी ब्रह्माण्ड पार

बरसा प्रेमहीनों पर तिरस्कार

[गीत ८]

विजानंद— जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

घर का भेदी लंका ढावे,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म घ घ घ घ घ घ – म घ घ घ नि – घ
सो ऽ न चि रैं ऽ या ऽ दे ऽ श ह मा ऽ रा

म घ घ घ घ – नि घ नि सां सां –
बें ऽ च कि या ऽ ब ट वा ऽ रा ऽ

नि रें रें रें रें – रें रें रें मरें सां – सां – सां
बाँ ऽ घ गु ला ऽ मी ऽ की ऽऽ जं ऽ जी ऽ रें

सां सां रेंसा नि – नि घ नि रें रें –
खू ब किऽ या ऽ द र बा ऽ रा ऽ

घ घ म – रे नि – रे सा सा – सा – सा
घ र का ऽ भे दी ऽ लं ऽ का ऽ ढा ऽ वे

सा ग ग ग ग – ग – रे म म – म पम ग
ला ऽ ज न आ ऽ वे ऽ ह र खा ऽ वे ऽऽ ऽ

सा ग ग ग ग – ग रे सा ग ग ग ग –
सा ग र द्रो ही ऽ के ऽ पा ऽ प सु नो ऽ

ग रे रे म म म म रे रे म म म म –
का ऽ ली ऽ घा तों के ऽ हा ऽ ल सु नो ऽ

प प प प प – प म घ प प –
धि क् ज य चं ऽ द क नौ ऽ जी ऽ

म म म घ घ घ घ – घ – घ – घ प घ सां सां सां सां
कु ल बो ऽ र न रा ऽ जा ऽ की ऽ लो ऽ वा ऽ त सु नो

सां नि निसांरें रें सां रें
लो ऽ बाऽऽ त सु नो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोन चिरैया देश हमारा

बेंच किया बंटवारा

बाँध गुलामी की जंजीरे,

खूब किया दरबारा

घर का भेदी लंका ढावे—

रे लाज न आवे हरखावें

सागर द्रोही के पाप सुनो

काली घातों के हाल सुनो

धिक् जयचन्द कनौजी

कुल बोरन राजा की लो बात सुनो

लो बात सुनो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाचक— ज्वाला सी जाग उठी··· ··· ·· पीत मुख ।

स्वर : [बागेश्वरी]

घ ऽ ध – घ ध घ – ध ध नि घ ऽ
घा ऽ रा – प रि व ऽ र्ति त हु ई ऽ

म ध सां – नि – ध सां ऽ
फि र सं ऽ गी ऽ त की ऽ

ध नि सां मं म – गं – सां रें – सां –
आँ ऽ धी ऽ उ – त्ते – ज ना ऽ की ऽ

सां रें नि सां नि ध – म ग रे सा
थ म सी ऽ ग ई ऽ स ह सा –

ध नि सा म म ग – म ध ध – ध – ध ध नि ध धनि सां सां सां –
मे ऽ घ घि र आ ऽ ये ऽ जै ऽ से ऽ वि र ह वि षाऽ ऽ द के –

ध नि सां गं गं गं ऽ गं मं गं रें सां
व ऽ र्षा ऽ हु ई ऽ आँ ऽ सु ओं की

सां सां सां रें नि ध धनि सां सां ऽ
वि क ल नि रा ऽ शाऽ ऽ के ऽ

गीत - ९

विजानंद— सां सां रेसां नि नि निसां निसां ध – ध म ग – रे रे ग – सा सा सा
सु नो विऽ र ह केऽ ऽऽ गी ऽ त सु नो ऽ को ई रो ऽ बो न हीं

ध नि सा म म – म म पध म ग रे सा सा
वा ऽ ल म से ऽ बि छु ड़ीऽ ऽ वि यो गि नी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्वाला सी जाग उठी
क्रोध की
चंचल समूची सभा एक बार हो उठी
देश द्रोहियों का अब करना दमन है
करना उन्मूलन है
घर के विभीषणों का
फर फर मूछों पर
थर थर हाथ गये
म्यानों में सोई हुई
झन झन तलवारें जागीं
फड़ फड़ फड़ फड़क उठे
वीरों के प्रचंड भुजदण्ड भी
और देश द्रोही सब
भय से हुए पीत मुख

धारा परिवर्तित हुई
फिर संगीत की
आँधी उत्तेजना की
थम सी गयी सहसा
मेघ घिर आये जैसे विरह विषाद के
वर्षा हुई आँसुओं की
विकल निराश के

[गीत ६]

विजानंद— सुनो विरह के गीत सुनो कोई रोओ नहीं
बालम से बिछुड़ी वियोगिनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म ध ध ध - नि ध सां सां सां –
ठं ऽ डी साँ ऽ सें ऽ भ र ती ऽ
ध नि सां मंगं गं गं रें सां नि ध नि सां सां -
कोई वा ऽऽ ल म को ऽ ला ऽ दे ऽ रे ऽ
ध्र नि सा म म म म म म पध म ग रे – सा म ध ध ध ध ध नि ध सां –
प र ब स रे ऽ ध र तीऽ ऽ पु का ऽ रे या ऽ द क रे ऽ उ न की ऽ
ध नि सां मंगं गं – रें – सां निध नि सां सां सां
कोई आ ऽऽ जा ऽ दी ऽ ला ऽऽ दे ऽ रे ऽ

वाचक— आँसू चौधार बहे ·· ··· ·· लो याद जगी।

क : सां सां रें मं गं रें गं रें – सां – राग विंध्यवासिनी
हृ द य भ र भ र आ ऽ ये ऽ [पहाड़ी दुर्गा]
सां – सां – नि रें सां नि ध गं – मं गं रें गं मं गं सां रें सां –
खें ऽ गा ऽ र वि छु ड़ी ऽ रा ऽ ण क की ऽ या ऽ द ज गी ऽ
सां – सां रें – सां रें मं – मं – पं – मं गंरें सांरें
मे ऽ हृ जे ऽ ठ वा ऽ ऽ की ऽ ऊ ऽ ज लीऽ ऽऽ
रें ऽ रें रें रें गं मं गं सां रें सां –
स ऽ म्मु ख आ ऽ ऊ ऽ ऽ त री ऽ
सां सां सां ऽ रें सां सां – रें सां सां नि ध
कु ल ख ऽ प्प र में ऽ हो ऽ मे ऽ ऽ
सारेंगं गं – मंगं रेंगं सारें पं मंगं रेंगं मंगं सां रें सां
प्राऽऽ णोंऽ कीऽ ऽऽ ऽऽ या ऽऽ ऽऽ ऽऽ द ज गी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ठंडी साँसें भरती
कोई बालम को ला दे रे । सुनो०
परबस धरती पुकारे, याद करे उनकी
कोई आजादी ला दे रे । सुनो०

आंसू चौधार बहे
सोरठ के धूसर अतीत की
मन मन में याद जगी
सोये वीर भूमि में
'रा' की जगी याद
और अंतर में टीस उठी
यवन पद दलित भारत की भूमि
पराधीन भूमि
निर्जन सूनसान सोमनाथ
खंडहर की लो याद जगी
हृदय भर भर आये
खेंगार बिछुड़ी राणक की याद जगी
मेह जेठवा की उजली
सम्मुख आ उतरी
कुल खप्पर में होमे प्राणों की याद जगी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क ख ग   सां सां – सां – नि – सां नि सां ध – ध – प नि प ध प प – [पहाड़ी धुन]
घ ङ :   वि जा ऽ नं ऽ द – ने दे ऽ खी – शो ऽ क म – ग्न स भा –

ग ग प प ध – ध प धनि सां सां सां – रें सां गं गं

ब द ल दि ये – वी ऽ णाऽ के ऽ मा ऽ र्मि क स्व र

ग – रे ग – रे – ग रे – सा – ध – ध प – ध सां सां
औ ऽ र सो ऽ हे ऽ सु रा ऽ के ऽ मा ऽ द क – गी ऽ त

[शेणी और सहेलियों का प्रस्थान]

गीत – १०

विजानंद— सा – सा सा सा – सा रेग रे सा सा सा सा सा रेग –

ला ऽ ल क सुं ऽ वो ऽऽ ऽ घो लो हो रा णा जीऽ ऽ

ग ग ग ग ग ग ग ग ग ग रे ग ग ग ग
छो ड़ो अ ल क म ल क नी ऽ बा ऽ त जी ऽ
ग ग ग ग ग ग ग ग ग रे रे ग ग ग ग
भू लो न व खं ऽ ड न की ऽ बा ऽ ऽ त जी
प प प – प प प प धप प प प –

म द हो ऽ श क सुं वो ऽऽ पी वो जी ऽ

प – प प – प प प प प प प प प प धनिध

आ ऽ धी रा ऽ त में ऽ मृ ग न य नी ऽ केऽऽ

प प – प प प प धनिध प – – प प –

र चो ऽ अ नो ऽ खे ऽऽऽ ना ऽ ऽ च जी ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजानंद ने देखी शोकमग्न सभा

बदल दिये वीणा के मार्मिक स्वर

और सोहे सुरा के मादक गीत

[गीत १०]

विजानंद— लाल कसुबों घोलो हो राणा जी

छाड़ों अलक मलक नी बात जी

भूलो नवखंडन की बातजी

मदहोश कसुंबो पीवो जी, लाल०

आधी रात में मृगनयनी के

रचो अनोखे नाच जी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प ध ध ध ध – प ध प – प ध प म म –
यु ग यु ग में ऽ ए क जो ऽ ग ज न म का ऽ

ध – प म म म प ग – ग रे सा –
प्रे ऽ म घ ड़ी व स पाँ ऽ ऽ च जी ऽ

[सभी ग्राम वासी नाचने लगते हैं और विजानन्द को छोड़कर सभी मदमस्त हो जाते हैं। मंच पर अंधकार छा जाता है,—केवल विजानंद पर प्रकाश केन्द्रित होता है।]

स्वः सा रे॒ म – म म ग गमप प प ध॒ प ध॒ ध॒ म ध॒ प प [राग भैरव]
म दि रा ऽ में सं ऽ गीऽऽ त की गु प्त सु प्त सं ऽ सा र

प प ध॒ रें॒ रें॒ सा रें॒ – रें रें मंगं रें॒ सां सां ध॒ ध॒ – सां (नि)
लु प्त हु ए स्व र बी ऽ न के खुऽ ला स्व प्न का द्वा ऽ र

गीत - ११

विजानंद— सां रें॒ गं मं मं – गं मं रें॒ – सां सां सां सां नि सां सां – नि धसांनिरें॒सां ध॒
जा ऽ ऽ ऽ गो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ गो विं ऽ द गो पा ऽ ल जा ऽऽऽऽ गे

प – प – ध॒ – प (ध॒) प ध॒ म म – ग (म) – रे॒ – सा
जा ऽ गो ऽ द्वा ऽ रि का ऽ ऽ के ना ऽ थ जा ऽ ऽ ऽ गे

सा रे॒ म म – म म – मग प प – प म ध॒ प –
न ये ऽ गी ऽ त ले ऽ नऽ या मो ऽ र आ ऽ या –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युग युग में एक जोग जनम का

प्रेम घड़ी बस पाँच जी—लाल

मदिरा में संगीत की गुप्त सुप्त संसार

लुप्त हुए स्वर बीन के खुला स्वप्न का द्वार

[गीत - ११]

विजानंद— जागो—गोविन्द गोपाल जागे

जागो—द्वारिका के नाथ जागे

नये गीत ले नया भोर आया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प प धु नि – नि नि नि – सां – धु सां – सां
सु न ह रे ऽ दि न के ऽ गी ऽ त जा ऽ गे

सां गं – गं गं – रें मं – मं मंप गं – रें ग – रें सां – सां

गो विं ऽ द गा ऽ न गा ऽ वो गोऽ पा ऽ ल गा ऽ न गा ऽ वो

[गीत के साथ ही घण्टी, घण्टा, शङ्ख के स्वर मुखर होते हैं और मञ्च पर प्रभात की किरणें फूट पड़ती हैं। लोग आँख मलते उठ बैठते हैं और व्यवस्थित हो बैठ जाते हैं। विजानन्द की सराहना करते हैं।]

वेद्दा— माँग माँचवी··· ··· ···झुका लिया।

[विजानन्द चुपचाप सिर झुकाये बैठा है]

वाचक— माँग माँचवी ·· ··· ···चल रहा।

गीत - १२

विजानंद— नि – सा धु़ नि़ रे – रे ग मग रे – सा सा

मौ ऽ न रे तं – ऽ त्र मे ऽऽ रे ऽ मौ न

नि़ सा ग रे सा ऽ नि़ ध्र नि़ रे रे रे ग मग रे – सा सा

मौ ऽ ऽऽ न ऽ रे ऽ अं ऽ त र मे ऽऽ रे ऽ मौ न

ग – ग ग ग ग म ग रे रे रे गमग रे – सा

मौ ऽ न रे र स ना ऽ ऽ मुं ह नाऽऽ खो ऽ ल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुनहरे दिन के गीत जागे
गोविन्द गान गावो गोपाल गान गाओ

वेद्दा— माँग भाँचवी माँग
माँग वेद्दा प्रसन्न है
माँग गोरवियाली का गोधन माँग
माँग नवचन्द्र महिषी माँग
माँग सुधा सरसती वसुधा माँग
माँग लिपे पुते घर माँग
ओ वीणा विशारद विजानंद
माँग, जो माँगना हो माँग
माँग, माँगने में संकोच कैसा ?
माँग, माँगने में फिर सोच कैसा ?

वेद्दा— क्यों सर क्यों झुका लिया ?

वाचक— माँग भाँचवी माँग
कह रहा है वेद्दा
और मौन है भाँचवी
और मौन संगीत चल रहा

[गीत - १२]

विजानंद— मौन रे तंत्र मेरे मौन
मौन रे अंतर मेरे मौन
मौन रे रसना मुंह न खोल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा ग ग रेगमंप प मंग ग ग गप रे – सा

टू ऽ टे माऽऽऽ न रेऽ मुँ ह नाऽ खो ऽ ल

म प पधनिसां सां सां सां नि नि सां ध प प –

मत माँऽऽऽ ग औ र माँ गे बि ना ऽ ही ऽ

प – मं पनिध– प प मं मं मं – प ग –

जो ऽ मि लेऽऽऽ उ से चु प चा ऽ प ले ऽ

ग ग ग मग रे – सा सा

फि र हो ऽऽ जा ऽ मौ न

वेद्दा— क्यों मौन है ... ... माँग-माँग

लोम— हाँ हाँ माँग रे माँग

वेद्दा— अरे, बोलता क्यों नहीं

विजानंद— बापा क्या··· ··· ···

वेद्दा— मैं कहता हूँ··· ··· ···माँग ले

विजानंद— मैं जो··· ··· ··· ···

वेद्दा— मैं अपनी··· ··· ···वचन देता हूँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टूटे मान रे मुंह न खोल
मत माँग और माँगे बिना ही
जो मिले उसे चुपचाप ले
फिर हो जा मौन

मौन रे तंत्र मेरे मौन

वेद्दा— क्यों मौन है रे भाँचवी
कह रहा हूँ न माँग-माँग
लोग— हाँ हाँ माँग रे माँग ।
वेद्दा— अरे, बोलता क्यों नहीं ?
विजानंद— बापा क्या माँगूं ? किसके लिए माँगूं ?
वेद्दा— मैं कहता हूं माँग ले ।
मेरा आनंद व्यर्थ न जाय
मुझे असद्गति मिलेगी, माँग ले
विजानंद— मैं जो माँगूंगा वह आप दे न सकेंगे ।
वेद्दा— मैं अपनी देह बेंचकर भी तेरा सवाल पूरा करुँगा
मत संदेह कर
माँग ले, नहीं दूँगा तो यह प्राण त्याग दूंगा
वचन देता हूँ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत-१३

विजानंद— सा रे ग प ध सां रें ग गं गं – रें रें सां सांगंरेंगं सां सां

ओ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ वे द्दा ऽ गो र वि याऽऽऽ ली के

सां – सां सां निसांगंरें रें रेंनि नि नि नि सां ध प प –

दे ऽ ना है तोऽऽऽ ब सऽ इ त ना ऽ दे ऽ दो ऽ

सां – सां सां निसांगंरे रें रेंनि नि नि नि सां ध प प –

माँ ऽ ग र हाऽऽऽ ब सऽ इ त ना ऽ दे ऽ दो ऽ

प प प – प मं पनिध ध पमं मं पधप मं ग

अ प नी ऽ त न याऽऽ का ऽऽ दे दोऽऽ हा थ

प प प – प मंपध – ध ध ध ध प ध नि ध प

अ प ने ऽ गी तोंऽऽ ऽ से प रि ण य क र लूं गा

प – प प मं मंपनिध ध ध ध ध – ध ध धप ध नि ध – प

सुं ऽ द र सु हाऽऽऽ ग उ स के ऽ प्रा णों मेंऽ भ र दूं ऽ गा

प ध सां सां – सां सां सां सां सां सां सारेंगंरें सां गं – गं – पं –

दे ना ऽ है ऽ तो ऽ ब स इ त नाऽऽऽ ऽ दे ऽ दो ऽ ऽ ऽ

[गीत सुनते ही वेद्दा क्रोध से लाल हो उठता है ।]

वेद्दा— तेरी यह हिम्मत ... ... ओह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत १३]

विजानंद— ओ वेद्दा गोरवियाली के
देना है तो इतना दे दो
माँग रहा हूँ बस इतना दे दो
अपनी तनया का दे दो हाथ
अपने मीठे गीतों से परिणय कर लूंगा
सुन्दर सुहाग उसके प्राणों में भर दूंगा
देना है तो बस इतना दे दो

वेद्दा— तेरी यह हिम्मत – दुस्साहस
दर दर की ठोकर खानेवाले
वनचर चरवाहे
माँग रहा है शेणी का हाथ
ओह !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजानंद— कुछ नहीं ... ... भूल हुई

ग्रामवासी— हाँ, हाँ, हाँ ... ... दे दो ।

वेद्दा— ठीक है ... ... वाग्दान की

[अंजलि देता है]

ग्रामवासी— जय हो ... ... तुम्हारी

[सब लोग प्रस्थान करते हैं, निराश सा विजानन्द अकेला खड़ा रह जाता है]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजानंद— कुछ नहीं बाबा, जाने दो मेरी भूल हुई

ग्रामवासी— हाँ, हाँ, हाँ, । यह क्या करते
वेद्दा भाई, वचन दिया है तुमने
विवश हो माँगा है उसने
कुल प्रतिष्ठा से ऊँची वचन की लाज
भाई दे दो
दे दो भाई, उसे शेणी के कर दे दो ।

वेद्दा— ठीक है
ओ चरवाहे के बेटे देता हूँ तुझे
सूर्य चंद्र किरणों से बनी शेणी देता हूँ तुझे
किन्तु
परिणय का पण देना होगा
एक सौ एक नवचंद्र महिषियाँ
समझता तो है कंगले बनचर
नवचन्द्र के अर्थ जानता तो है
तीन सौ साठ प्रभात का समय देता हूँ तुझे मैं
सच्चा चारण पुत्र यदि है तो
एक सौ एक नवचंद्र महिषियाँ
एक वर्ष की अवधि के अंदर
ला शेणी के विवाह का उपहार
जिस घड़ी उपहार ले आयेगा
शेणी तुरत हो जायगी तेरी
अंजली ले यह मेरे वाग्दान की

ग्रामवासी— जय हो, जय हो तुम्हारी
धन्य प्रणतपाल वेद्दा
जय हो तुम्हारी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क : सा सारेग रे ग – रे ग ग रे ग मं ग रेमंग रे सा [तोड़ी]

वी णाऽऽ वि मू ऽ ति स ऽ ग ले वि ऽ जाऽऽ नं द

सा रे ग ग रे ग ग मं ध ध

अ प ने प थ प र ए का की

मं धनिसां सां नि सां सां

ती नोऽऽ सं ग सं ग

ध गं गं रें – रें सां ध नि सां सां

वी णा वि मू ऽ ति वि जा ऽ नं द

ख : सा रे ग ग ग मं ध मं ध ध ध

नि ज श्र म से अ र्ज न क र ने

नि

मं धनिसां ध ध ध मं ग ग ग रेमंग रे सा सा सा सा

शे णीऽऽ के क र का ऽ क र पूऽऽ रा ऽ क र ने

सा सा सारेग ग ग मं मं ध ध ध ध ध मं धनिसां सां नि सां

अ प नीऽऽ टू टी सु ख म य कु टि या ऽ छोऽऽ ड़ च ले

नि

सां सां सांरेंग गं गं गं गं गं गं गं मंधं मंगं गं गं रें सां सां सां ध धसां

अ न जाऽऽ नी रा हों प र अ न जा ऽ ने ऽ दे शों की ऽ ओ र च लेऽ

[विजानन्द का प्रस्थान । मंच पर पूर्ण अंधकार छा जाता है और परदा गिरता है ।]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाचक— वीणा विभूति संग ले विजानंद

अपने पथ पर एकाकी

तीनो संग संग

वीणा विभूति विजानंद

निज श्रम से अर्जन करने

शेणी के कर का कर पूरा करने

अपनी टूटी सुखमय कुटिया छोड़ चले

अनजानी राहों पर

अनजाने देशों की ओर चले।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृश्य - ३

[मंच पर गाँव के बाहर का दृश्य प्रगट होता है, वृक्षों का झुरमुट और ग्राम पथ। गाता नाचता विजानंद आता है और उसकी आवाज सुनकर 'अनेक ग्रामवासी आ जुटते हैं।']

क : सा सा सारे ग ग मं ग रेगमंध ध ध [तोड़ी]

अ न जाऽ ऽ नी रा ऽ होंऽऽऽ प र

मं ध ध ध मं ग ग मंधनि सां नि सां

वी णा के ता ऽ ऽ र छेऽऽ ऽ ड़ ता

ध ग – रें गं – रें गं रें गं मं रेंमंगं रें सां सां निध

त्रि भू ऽ ति फूं ऽ क ती प्रा ऽ ण संऽऽ मो ऽ ह नऽ

धनिधमं धनि सां सां

आऽऽऽ नंऽ ऽ द

सां निरेंसांसां धगमग प म ध निसांनिध नि सां

गा ताऽऽऽ नाऽऽऽ च ता वि जाऽऽऽ नं द

गीत - १४

विजानंद— सा सा सा सा सारे रेग ग रे ग रे सा

सु नो सु नो दुखि याऽ लो गों ऽ रे ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[सर्ग - ३]

[विवाह का उपहार लाने विजानन्द गाँवों में घूमता रहा, गाता नाचता रहा और उपहार में मिली नवचंद्रियाँ एकत्र करता रहा। अन्त में तीन सौ साठवें दिन सायंकाल वह एक सौ एक भैंसे लेकर लौटा।]

अनजानी राहों पर

वीणा के तार छेड़ता

विभूति फंकती प्राण सम्मोहन

आनंद

गाता नाचता विजानंद

[गीत - १४]

विजानंद— सुनो-सुनो दुखिया लोगों रे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग ग ग रेग रे सा सारे ग – रे ग ग रे सा रे सा सा

गी त ग रीऽ बों ऽ केऽ ऽ, गी त ग री ऽ बों ऽ के

सा सा सा सा सा रे रेग ग रेग रेसा सा

सु नो सु नो दु खि याऽ ऽ लोऽ गोंऽ रे

मम म म म म ग मप पम प पऽ म ग ग – ग रेग रे सा साग रेसा ग

भट क र हे इ क लेऽ पऽ थ पर ऽ ऽ गी ऽ त गरी बों ऽ केंऽ ऽ ऽ ऽ

पप प – मप म ग प प प – – –

धन वा ऽ नोंऽ से ऽ शो षि त ऽ ऽ ऽ

धध ध – पध म – साम म म ग रे सा सा सा ...

धन वा ऽ नोंऽ से ऽ त्राऽ सि त ऽ ऽ ऽ सु नो ... ...

सांसां सां – निसां ध – रेंरें – सां सां – –

सु ख में ऽ भू ऽ ले ऽ क्या जा ऽ ने ऽ ऽ

सांसां सां – सां सां – निसां ध ध प प –

दु ख की ऽ भा षा ऽ क्याऽ प हि चा ने ऽ

नि नि – धध नि नि धध ध ध धप म ग ग मऽ मनि ध प प

आ ओ ऽ हम स ब मिल क र मन के ऽ धा ऽव दिऽ खा यें ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत गरीबों के, गीत गरीबों के

सुनो सुनो दुखिया लोगों रे

भटक रहे इकले पथ पर गीत गरीबों के

धनवानों से शोषित

धनवानों से त्रासित, सुनो०

सुख में भूले क्या जाने

दुख की भाषा क्या पहिचाने

आओ हम सब मिलकर, मन के घाव दिखायें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प प – पप प प धु प धु म म –

बा टें ऽ दुख अ प ने ऽ ऽ औ र ऽ

मप पधु पम गु – – रेसा सारे रेगु –

मन कीऽ ऽऽ पी ऽर मिऽ टाऽ येंऽ ऽ

सा सा सा सा सा रे॒ रेगु गु – रेगु रे॒ सा

सु नो वि यो गी ऽ दुखि याऽ लोऽ गो ऽ

गु – गु गु रेगु रे॒ सा सा – –

गी ऽ त ग रीऽ बों ऽ के ऽ ऽ

ग : प प प धु निसांनिध नि सां सां सां सां सां सां ऽ धु प [भैरवी]

स ब सु न नेऽऽऽ वा ऽ लो में क रु णा ऽ जा गी

प प प प प (धु) प धु म गु गुमप म प गु म रे॒ सा

भ र भ र आ ये ऽ ऽ ऽ नी रऽऽ न ऽ य न में ऽ

ग्रामप्रधान : प धु नि सा रें गुं गुं गुं रें गुं मं रें सां
प र दे ऽ ऽ सी क्या क र स क ते हैं

नि सां – सां नि सां – सां निध पनिसांरें सां धु – प

स म्मा ऽ न तु म्हा ऽ रा ऽऽ कैंऽऽऽ ऽ से – हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाटें दुख अपने और

मन की पीर मिटायें

सुनो वियोगी दुखिया लोगों

गीत गरीबों के

✩

—सब सुननेवालों में करुणा जागी

भर भर आये नीर नयन में

परदेसी क्या कर सकते हैं

सम्मान तुम्हारा कैसे हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धु – पु – धु धु धु धु प – धु म – म म

ओ ऽ गा ऽ य क न व चं ऽ द्र लो ऽ य ह

गु – गु गु म – म म सागुमप गु म रे सा सा

ए ऽ क अ किं ऽ च न भेंऽऽऽ ट ह मा ऽ री

(घण्टियों की ध्वनि) (प्रकाश मन्द होता है, ग्रामवासी जाते हैं)

[प्रकाश विजानन्द पर केन्द्रित होता है, वह एक और ग्राम देखकर पुनः गीत छेड़ता है, ग्रामवासी आते हैं और डांडिया रास जम जाता है।]

घ : सां सा सां सां सां – सां निसां रें – नि नि सां ध प [भटियार]

न व चं ऽ द्री ऽ ले आऽ ऽ ऽ गे व ढ़ ता ऽ

ध – प ध – ध ध नि पध प प –

औ ऽ र ग्रा ऽ म नि य राऽ ऽ ता ऽ

प – धसां सां सां सां सां रें सां सांरे गं ग

वी ऽ णाऽ प र फि र वं ध जाऽ ऽ ता

गं गं – रें सां सांगरेंगं सांध सां – सां

तू फा ऽ नी गी तोंऽऽऽ काऽ तां ऽ ता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ओ गायक, नवचन्द्र लो यह

एक अकिंचन भेंट हमारी

नवचन्द्री ले आगे बढ़ता

और ग्राम नियराता

वीणा पर फिर बंध जाता

तूफानी गीतों का तांता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत - १५

विजानंद - ग ग - रे - सा नि़ | प्र - प्र - नि़ साग - रे - सा रे सा - नि - -
डो ले - डो - ले ऽ | ब्र ऽ ह्मा ऽ ऽ आऽ ऽ नं ऽ द में ऽ ऽ रें ऽ ऽ

नि़ नि़ सां रे - रे | रे - म ग - ग रे - रे नि़ - सा ग - रे
ना ऽ चे रां ऽ चे | दे - ह पु ऽ ण्य की ऽ सु गं ऽ ध में ऽ रे

रें रे म म म प | प प प मं प मं ग - ग सा - सा ग - रे
खि ले ऽ खि लें ऽ | हृ द य रा ऽ स नृ ऽ त्य रं ऽ ग में ऽ रे

ग ग ग - रे रे - | सा नि़ प्र ध्र - नि़ सा - ग रे - सा रे सा सा नि - -
उ ऽ ड़े ऽ उ ड़े - | आ ऽ त मा - हो ध्या ऽ न ता ऽ न में ऽ ऽ रे ऽ ऽ

नि़ - सा सा रे रे - रे ऽ | ग - ग रे - रे रे नि़ - सा ग - - रे - -
ना ऽ चे न र ना ऽ री ऽ | ए ऽ क ल ऽ य म हा ऽ न में ऽ ऽ रे ऽ ऽ

रे - ग ग प प - प - मं प मं | ग - ग सा - सा ग - - रे - -
औ ऽ र जा ऽ ये़ ऽ स ऽ मा ऽ यें | वि ऽ श्व अं ऽ ग में ऽ ऽ रे ऽ ऽ

ग्रामप्रधान : प
सां सां नि सां ध ध सां सां सां सां
सी खा क हाँ य ह ब्र ह्म ज्ञा न

नि नि नि नि - सां नि - नि सां ध प़
इ त ने छो ऽ टे जी ऽ व न में ऽ

रें रें सां रें सां रें रें रें, रें रें सां रें - सां ध सां - सां
ओ ब्र ह्म चा री चा र ण, कै से क रें ऽ स म् मा ऽ न

गं ऽ गं गं रें गं - गं रें गं गं गं गं
ए ऽ क न व चं ऽ द्र म हि षी य ह

रें - रें - रें सां रें सां सां सांगंरेंगं सां ध सां - सां
स्वी ऽ का ऽ र क रो उ प हाऽऽऽ र ह मा ऽ रा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत - १५]

विजानंद— डोले डोले । ब्रह्माण्ड आनन्द में।
नाचे रांचे । देह पुण्य की सुगन्ध में।
खिले खिले । हृदय रास नृत्य रंग में।
उड़े उड़े । आत्मा हो ध्यान तान में।
नाचे नर नारी एक लय महान में।
और जाय समाये विश्व अंग में रे।

लोग— सीखा कहाँ यह ब्रह्म ज्ञान
इतने छोटे जीवन में, ओ ब्रह्मचारी चारण
कैसे करें सम्मान
एक नवचन्द्र महिषी यह
स्वीकार करो उपहार हमारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[घण्टियों की ध्वनि]

[सब लोग चले जाते हैं, और निराश विजानन्द थक कर बैठ जाता है।]

[शिवरंजिनी]

ख : सा
हाँ
सा – सा सा सारे_ग_ _ग_ रे _ग_ – _ग_ रे _ग_ रे सा ध़ सारे_ग_ _ग_
चा ऽ र ण चाऽऽ ली स गाँ ऽ व घू ऽ म क र आऽऽ या
रे – रे _ग_ प – पधसां ध – प _ग_ _ग_ सा _ग_ _ग_ _ग_
बी ऽ त ग़ यी ऽ आऽऽ घी – से अ धि क अ व धी
प – प ध सां सांरें_गं_ _गं_ रें _गं_ सां _गं_ – रें रें
किं ऽ तु पू ऽ राऽऽ न हु आ अं ऽ ऽ श मी
_गं_ रें सां ध ध _गं_ रें सां –
प ण का ऽ प्र ण य के ऽ

[मञ्च पर पूर्ण अन्धकार हो जाता है। पृष्ठ भाग में वृक्षों के झुरमुट के बीच जालीदार परदे के पीछे त्रिकल श्रेणी दिखाई पड़ती है।]

ङ : सा – रे _ग_ प
औ ऽ र व हाँ
ध सा ध प _ग_ _ग_ _ग_ सा _ग_ – _ग_
रो ऽ रो ऽ क र शे ऽ णी ऽ तो
_ग_ _ग_ _ग_ रे _ग_ – _ग_ _ग_ – रे _ग_ रे सा ध़ ध़ _ग_ रे – सा
वि र ह वि यो ऽ ग की ऽ र ज नी ऽ बि ता ऽ ती ऽ थी
सा – रे _ग_ प _ग_ प – प प – प
औ ऽ र प्रा ऽ त आ ऽ ते आ ऽ ते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हाँ

चारण चालीस गाँव घूम आया

बीत गयी आधे से अधिक अवधि

किंतु

पूरा न हुआ अंश भी

पण का प्रणय के

और वहाँ

रो रोकर शेणी तो

विरह वियोग की रजनी बिताती थी

और प्रात आते जाते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध ध ध – प ध प ग॒ – प – प
उ स की ऽ स वा ऽ री ऽ से ऽ ज

प – प ध सां ध सां रें ग॒ं रें – रें
अ ऽ श्रु का ऽ स रो ऽ ऽ व ऽ र

ध॒ रे
ग॒ं रें सां ध प ग॒रेसाध॒ ग॒ – सा –
आ ऽ प व न ज़ाऽऽऽ ती ऽ थी ऽ

[पुनः अंधकार हो जाता है और स्पाट विजानन्द पर पड़ता जो निराश निढाल बैठा है। गीत आरम्भ होने पर सिर पर मिट्टी भरी टोकरियाँ उठाये लोग तथा अन्य ग्रामवासी आते हैं।]

ख : ध – ध प ध
और य हाँ

ध ध धप ध – ध ध सां रेंगंरेंसांरेंगंरें सां – ध ध सां ध धपमप म – म
शे णी कीऽ या ऽ द वी ऽ जाऽऽऽऽऽऽऽ नं ऽ द को स ऽ ताऽऽऽ ती ऽ थी

प ध सां सां
त ब व ह

रेंगंरेंसांरेंगं मं मं मं मं मं पं मंमं रें सां सां ध सां – सां –
गीऽऽऽऽऽ तों ऽ के ऽ तू फा ऽऽ न उ ठा ऽ ता ऽ था ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसकी संवारी सेज

अश्रु का सरोवर ही

आप बन जाती थी

और यहाँ

शेणी की याद विजानंद को सताती थी

तब वह

गीतों के तूफान उठाता था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत - १६

सां

विजानंद— सां सां सां सां नि रें सां ध ध – प पधप म ग सासा ग म ध – प

अ रे थो ड़ी धू ऽ ल ला दो ऽ ऽ कोःई उ स घर ती ऽ की ऽ ऽ

सां सां सांनिधप ध प

थो ड़ी धऽऽल ला दो

सा सा रे ग ग रे म ग ग ग मप प मप म ग

को ई र ख दे ऽ ला क र मे रीऽ चि ताऽ प र

ग म ध ध ध ध – म ध ध ध नि ध नि पध प –

गो ब र मा टी से ऽ लि पे उ स आं ऽ ऽ गन की ऽ

सां सां सांनिधप ध प

थो ड़ी धूऽऽल ला दो

सा सा सा रे रे रेग रेग प म ग

मे रे खे तों की धर ती– ऽ सू खी

सा सा सा रे रे रेग रेग प म ग

सू खे सू खे प त्तोंऽ मेंऽ ऽ सू ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत - १६]

विजानंद— अरे थोड़ी धूल ला दो कोई उस धरती की

कोई रख दे लाकर मेरी चिता पर

गोबर माटी से लिपे उस आंगन की

थोड़ी धूल ला दो उस धरती की

मेरे खेतों की धरती सूखी

सूखे सूखे पत्तों में सूती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां
प ध ध सां सां – सां सां – सां नि रें सां निधप

मे री शो ऽ षि ऽ त ज ऽ न्म भू ऽ मि कीऽऽऽ

सां सां सांनिधप ध प

थो ड़ी धूऽऽल ला दो

मुखिया:-- क्यों जोग लिया ... ... लेलो। [घण्टियों की ध्वनि]

[हर्ष विभोर-कृतज्ञ विज्ञानन्द मुखिया के पैर पकड़ लेता है। प्रकाश क्रमशः मन्द होता है और अस्त हो जाता है। पुनः प्रकाश लौटने पर केवल प्रसन्नता से झूमता घर लौटने को तत्पर विज्ञानन्द दिखाई पड़ता है। नेपथ्य से भैंसों के गले में बँधी घण्टियों की ध्वनि सुन पड़ती है।]

[भूपाली]

सां
क ख ग सा रे रे ग – रे ग ग प – धसांधप ध सां

घ ङ : वी ऽ ते ऽ ऽ वी ऽ ते ऽ ऽ वीऽऽऽ ते ऽ

ग - रें गं – रें रें रें गंरें सां सां ध सां – सां

तौ ऽ न सौ ऽ उ न स ठऽ ऽ दि न वी ऽ ते

क : सां – सां सां सां
पू ऽ गी हु ई
सां सां सां सां – सां नि नि सां – सां नि सां नि ध
ए क सौ ए ऽ क न व चं ऽ द म हि षि याँ
ध ध – ध – ध ध नि ध – प –
वि जा ऽ नं ऽ द वि ज यी ऽ हो ऽ
ग प धनिपध सां सां सां

लौ टा निऽजऽ घ र को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरो शोषित जन्मभूमि की
थोड़ी धूल ला दो । अरे०

मुखिया— क्यों जोग लिया है बचपन में
क्यों यौवन से वैराग्य हुआ
भिक्षुक बालक यह भेस उतारो
यह नवचन्द्री लो और घर बसा लो
यह धन गीर का है—मत संकोच करो
ले लो—जितनी चाहे ले लो

वाचक— बीते बीते बीते
तीन सौ उनसठ दिन बीते
पूरी हुई
एक सौ एक नवचन्द्र महिषियाँ
विजामंद विजयी हो
लौटा निज घर को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प प घ सां सां गं – गं रें गं गंरेंसांघ सां – सां सां
म न में ऽ सं जो ऽ ये हु ए आऽऽऽ शा ऽ य ह

विजानंद— प प नि सां निसांमंरें रें – रें [वृंदावनी सारंग]
अ ब मि ल जाऽऽऽ यें ऽ गे

रें मं रें सां सां – रें नि सां सां –
मा ऽ द क सौं ऽ द ऽ यं से ऽ

नि सा नि प प प प नि प
मो ऽ ह क म धु र स्व र

म प म रे रे मरे सा – नि़ सा
मे ऽ रे ऽ सं ऽऽ गी ऽ त के

नि़ सा रे सा प नि निसारें रें – रें –
मे ऽ रे ऽ अ ब हाऽऽ थों ऽ में ऽ

मंरें मं रें सां रेंसांनि नि सां सां
हाऽ थ शे णी काऽऽ हो ऽ गा

प – निसांरें रें सां रें सां रें रें
वी ऽ णाऽऽ का स र स स्व र

रें मं रें मं रें सां रें नि नि नि सां सां [पट परिवर्तन]
शे ऽ णी ऽ के ऽ सा ऽ थ हो ऽ गा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन में संजोये हुए आशा यह

अब मिल जायँगे

मादक सौंदर्य से

मोहक मधुर स्वर

मेरे संगीत के

मेरे अब हाथों में

हाथ शैणी का होगा

वीणा का सरस स्वर

शेणी के साथ होगा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दृश्य - ४

[वेद्दा का घर। शेणी बिजानन्द की प्रतीक्षा में आकुल है। अवधि शेष प्रायः है। सहसा उसे भ्रम होता है कि भैंसों का झुण्ड आ रहा है, घण्टियाँ सुनाई पड़ती हैं, हर्ष विभोर हो बावली सी वह दौड़ पड़ती है पर भ्रम-ध्वनियाँ मौन हो जाती हैं और वह निराश हो अपने स्थान पर आ बैठती है। पुनः वही भ्रम होता है और वह भाग कर दूसरी ओर दौड़ती किन्तु निराशा ही हाथ लगती है। तीसरी बार पुनः वही आवाहन—वही निराशा और तब वह भूमि पर गिरकर बिलखने लगती है। वेद्दा वहाँ आता है। बेटी के सिर पर हाथ रखकर उसे आश्वस्त करने की चेष्टा करता है। पिता को देखकर शेणी उसे धिक्कारने लगती है।]

[शेणी के संलाप के साथ पृष्ठभूमि से सितार पर राग दरबारी का आलाप चलता रहता है।]

शेणी— राम राम बापू ... ... वामन मनुष्य यह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[सर्ग - ४]

तीन सौ साठ प्रभात बीत गये पर विजानंद का कोई पता नहीं था । शेणी का धैर्य टूटा, पिता पर रोष कर वह विरही तन को हिलालय में गला देने को चल पड़ी । उधर विजानंद विजयी हो लौटा तो वेद्दा लज्जित हो मौन खड़ा अश्रु बहाता मिला । विरही को भी हिम-पथ सूझा ।

शेणी— "राम राम बापू
यह क्या किया ?
अब तक न आये राम बापू, मेरे जीवन के
व्यर्थ मेरा यह तन, व्यर्थ यह प्राण भी
व्यर्थ ही विधाता ने जन्म दे दिया मुझे
बापू, यह क्या किया ?
कितने अनादर से तुमने दुत्कार दिया
द्वार से ही अपने उन्हें
ओ हो !
नभ से बरसा दिया था
विद्युत का तेज किंतु
संचित न कर सके
तुच्छ जन धरती के
वामन मनुष्य यह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रेणी— आवे जो विराट ... ... बापू ओ हो ?

वेद्दा— बेटी

श्रेणी— नहीं, नहीं ... ... विधि ने बनाया था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आवें जो विराट भी तो
उनको लौटायेगा
बापू ओ हो !

वेद्दा— बेटी !

शेणी— नहीं ! नहीं !
तुमने उन्हें आंगन से अपने लौटा दिया।
मुझसे न पूछा यह
शेणी कौन पकड़ेगा
हाथ तेरा बेटी,
कह तो !
बिजली बन बादल की
बापू तेरे घर में
उस दिन मैं आयी थी
मेघ बन इंद्र का
छाया सा पीछे लगा
आँगन तक मेरे बापू
वह भी चला आया,
उसके हित मुझको
मेरे हित उसको
विधि ने बनाया था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शेणी— अम्बा हूँ..............................

........................मेरा परमेश्वर जो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अम्बा हूँ, भवानी मैं तो
वह भी सदाशिव है
निर्जन मसानवासी
राम राम, बापू
यह क्या किया ?
हिम के बिहारी हम
हम हैं गगनचारी
हिम गिरि तुंग शृंग कंचन कैलास ही तो
धाम है हमारा भी
अस्थि चर्म वर्मधारी
काम ही क्या
शेष इस तन का
इसको गला डालूंगी
जाकर हिमालय में
करके तपस्या मिली
जैसे परमेश्वर से
अंबिका भवानी उमा
वैसे ही मिलूंगी मैं
अपने विजानंद से
मेरा परमेश्वर जो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[नेपथ्य से घण्टियों की ध्वनि]

[भटियार]

क घ : सा – सां | सां नि सां सां – सां सां सां सां – निसांगंरें रें रें
ओ ऽ र | ए क सौ ए ऽ क न व चं ऽ द्रीऽऽऽ लि ये

सां – सां सां – नि सां – सां सां सांध प म म –
धू ऽ म के ऽ न्द्र पी ऽ छे प्र काऽ ऽ श सा ऽ

सा सा रे सा ध – धु ध ध ध सां सां – सां
ब ढ़ ता ऽ आ ऽ र हा वि जा ऽ नं ऽ द

रें रें रें रें सां रें गं रें सां सां – सां
गो र वि या ऽ ली ऽ की ऽ ओ ऽ र

[शेणी पिता को प्रणाम करती है—वेद्दा रुकने का आग्रह करता है पर वह चली जाती है। वेद्दा का भी प्रस्थान।]

ग ङ : सां – नि सां – सां नि – नि नि नि सां नि सां – पनिसांरें सां रें नि ध प –
औ ऽ र शे ऽ णी मा ऽ न व हृ द य की ऽ आऽऽऽ ऽ ऽ शा ऽ सी ऽ

प प प प धपमप ध म ग रे रे ग नि सा
प्र ति प ल दूऽऽऽ ऽ र हो ती जा ऽ र ही

रे म – प प नि – नि सां नि सां
हि मा ऽ ल य के ऽ प थ प र

[शेणी और शोकाकुल सहेलियों का प्रवेश। गीत समाप्त होने पर शेणी साग्रह सहेलियों को वापस भेज देती है और तब धरती से विदा लेती है।]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और

एक सौ एक नवचन्द्रो लिये

धूम केन्द्र पीछे प्रकाश सा

बढ़ता आ रहा विजानंद

गोरवियाली की ओर

और शेणी मानव हृदय की आशा सो

प्रतिपल दूर होती जा रही

हिमालय के पथ पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत - १७

शेणी— नि – नि ध नि ध नि – ध नि ध प पध ध प ध प ध नि पध – प

सुं ऽ द र व न गी ऽ र के ऽ ऽ सुंऽ द र डों ऽ ग री याऽ ऽ रे

ध – पधप मगरे सांनि़ रे – रे रे – रे

मे – राऽऽ ऽलोऽ ऽ ऽ रा – म रा – म

प – मगरेसा रे सानि सा – सा सा – सा

अं ऽ तिऽमऽ य हृऽ रा ऽ म रा ऽ म

म – म म – म प म म म – नि नि ध ध ध प म प प – प –

मे ऽ रे वी ऽ र के ऽ स री ऽ ह् री ऽ म री ऽ बं स वा ऽ री ऽ

प ध सां नि सां – नि सां – सां – निसा रें सारें सां सांनिधप ध प

मे री ऽ स हे ऽ लि याँ ऽ गँ ऽ याँऽ ऽ ऽऽ हो प्याऽऽऽ ऽ री

[सहेलियों को विदाकर शेणी का पुनः प्रवेश]

[प्रत्येक पक्ति के बाद वाद्यों पर क्रमशः वढ़ती हुई आंदोलित गति में झाला वजता है जो शेणी की घर त्यागने की विकलता प्रगट करता है ।]

रव : ग ग ग ग ग – ग सा ग – ग – ग ग ग

दि ग् व धु ओं ऽ को न म ऽ स्का ऽ र क र

ग – ग मं – ग मं मं मं ग मं – मं

हा ऽ थ जो ऽ ड़ क र न भ को ऽ भी

मं मं मं मं ध – ध ध – मं ध - ध ध ध

ध र ध र ती ऽ की धू ऽ ल शी ऽ श प र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत - १७]

शेणी— सुन्दर वन गीर के सुन्दर डोंगरिया
मेरा लो राम राम, अंतिम राम राम
मेरे वीर केसरी, हरी भरी बंसवारी
मेरा लो राम राम, मेरी सहेलियाँ
गैया हो प्यारी, मेरा लो राम राम
अंतिम यह राम राम।

दिग् वधुओं को नमस्कार कर
हाथ जोड़कर नभ को भी
धर धरती की धूल शीश पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा सां सां – सां सां सां ध सां – सां सां – सां सां
प द वं ऽ द न क र मा ऽ तृ भू ऽ मि का

सां – सां सां गं सां गं ऽ गं सां गं – गं गं गं
औ ऽ र म हि षि यों ऽ को दु ला ऽ र क र

सां सां सां गं – गं गं – सां गं मं गं मं गं सां
वं ध अ नं ऽ त के ऽ आ ऽ ऽ लिं ग न में

सां गं सां गं – गं गं गं – मं गं मं गं सां –
च ली हि मा ऽ ल य में ऽ ग ल ने ऽ को ऽ

सां सां सां – सां सां सां – नि सां सां नि – सां ध ध
हि म के ऽ प थ की ऽ प थि क आ ऽ ज व न

ध ध सां सां गं – सां गं – गं
प्र ति प ल क्षी ऽ ण हो ऽ ती

सा गं मं – गं मं गं मंगं सां ध सां
आ ऽ शा ऽ की ज्यो ऽ ऽ ऽ ति लि ये

[श्रेणी का प्रस्थान— मञ्च पर पूर्ण अंधकार]

दृश्य - 8 (ख)

[ग्राम पथ। पृष्ठ भाग में गिरनार पर्वत और उसके शिखर पर अम्बा माता का मन्दिर और उसकी ध्वजा के दर्शन होते हैं। प्रकाश आने पर चार पंक्तियों के पाठ के बाद गीत आरम्भ होता है और नाचता गाता मुदित मन विजानन्द प्रवेश करता है, नेपथ्य से निरंतर एक सौ एक भैंसों के गले में बँधी घण्टियों की टनकार सुनाई देती रहती है।]

क घ : सा – रे म म ध – ध ध ध ध ध सां ध प म – म – म [पहाड़ी]
गो ऽ ऽ र वि या ऽ ली के ऽ प थ प र ज ल्दी – ज – ल्दी

सा रेसा म म ध – ध ध ध ध सां – सां सां सां
आ गेऽ न व चं ऽ द्रि यां श त ए ऽ क लि ए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद वंदन कर मातृभूमि का

और महिषियों को दुलार कर

बँध अनंत के आलिंगन में

चली हिमालय में गलने को

हिम के पथ की

पथिक आज बन

प्रति पल क्षीण होती

आशा की ज्योति लिये

गोरवियाली के पथ पर जल्दी जल्दी

आगे नवचन्द्रियाँ शत एक लिये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म – ध ध सां – सां सां सां सां सां ध सां गं रें सां रें गं रें सां ध
आ ऽ शा के सा ऽ ग र प र ल ह रा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ता ऽ

सां धपमप म – म, सा – रे म म ध – ध प ध
वि जाऽऽऽ नं ऽ द, गो ऽ ऽ र वि या ऽ ली के ऽ

गीत-१८

विजानंद— ग रे सा ध़ सा – ग रे ग सा रे ध़ सा –
म न म त चं ऽ च ल हो ऽ इ त ने ऽ

ग – म पधनिसां सां सां प प प ध म प म ग
ग्रा ऽ म दूऽऽऽ र है ऽ अ व ऽ ग कि त ने

प प प – – प प प ध प प प प प प प
गि रि के ऽ उ स उ त्तुं ऽ ग शि ख र प र

ध सां सां – सां – सां – रें सां सां ध सां – सां
वँ ऽ ठी ऽ है ऽ माँ ऽ अ ऽ व भ वा ऽ नी

नि़ – नि़ नि़ नि़ – नि़ – ध नि़ – ध नि़ – नि़ नि़ ध प ध प ध –
पू ऽ णं क रे ऽ गी ऽ व ही ऽ म नो ऽ र थ जी ऽ व न के ऽ

म म म ध ध – ध – ध ध नि़ नि़ धप ध प प –
य ह ए ऽ का ऽ की ऽ सू ना ऽ प नऽ भ र दे ऽ

ध सां सां रेंसां नि़ ध प प प ध प म प म ग –
शे ऽ णी ऽऽ के ऽ उ स म धु र मि ल न से ऽ

क ध : सां सां सां – सां सां सां – नि नि सां रें सां सां निधधप प
ब ड़ वा ऽ न ल सा ऽ व न ल ऽ क्ष्मी को लेऽऽऽ ने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आशा के सागर पर लहराता विजानंद

गोरवियाली के पथ पर जल्दी जल्दी

[गीत - १८]

विजानंद— मन मत चंचल हो इतने

ग्राम दूर है अब डग कितने

गिरि के उस उत्तुंग शिखर पर

बैठी है माँ अम्ब भवानी

पूरण करेंगी वही मनोरथ जीवन के

यह एकाकी सूनापन भर दे

शेणी के उस मधुर मिलन से

बड़वानल सा वन-लक्ष्मी को लेने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग ग प – ध ध प ध सां सां
व ह आ ऽ गे ब ढ़ ता ऽ है

[विजानन्द का प्रस्थान]

गङ: प नि रें रें रें – रें रें नि रें नि प नि रें गं गं गं
औ र व न ल ऽ क्ष्मी ऽ दू ऽ र च ली जा ऽ र ही
सां गं पं ध पं गं गंरेंसां रें सां सां –
हि मा ल य में ग लऽऽ ने ऽ को ऽ

[जोगन वेश में एकतारा लिए शेणी का प्रवेश]

गीत - १९

म
शेणी— सा ग ग ग – रे ग प प धप म म प म ग – ग ग म ग रे सा सा – सा –
तूं ऽ हि तूं ऽ हि गा ऽ रे ऽऽ मे ऽ रे ऽ ऽ ऽ म न के ऽ ए क ता ऽ रे ऽ
(तन)
प सां सां सां सां – सां रेंसां नि – नि ध – प –
प्री ऽ त म प्या ऽ रा ऽऽ आ ऽ मि ले ऽ गा ऽ

प प ध प ध प ध प ध प म प ग –
अ ग ले ऽ औ ऽ ता ऽ ऽ र रे ऽ ऽ ऽ
ग – ग ग – ग – ग प प धप
तूं ऽ हि तूं ऽ हि ऽ गा ऽ रे ऽऽ

[शेणी का प्रस्थान]

दृश्य - ४ (ग)

[वेद्दा का घर। हताश वेद्दा—घण्टियों की आवाज सुनकर चौंकता है। विजानन्द का प्रवेश।]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वह आगे बढ़ता है

और वन-लक्ष्मी

दूर चली जा रही

हिमालय में गलने को

[गीत - १८]

शेणी— तूंहि तूंहि गा रे मेरे तन के इक तारे

तूंहि तंहि गा रे मेरे मन के इक तारे

तूंहि तूंहि गारे

प्रीतम प्यारा आ मिलेगा

अगले औतार रे, तूंहि तूंहि गा रे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क : प – प ग प प प – मं – ध ध नि ध प प –
अं ऽ ति म दि न का ऽ अं ऽ ति म प्र हा र था ऽ
सां सां सां (सां) नि प प मं ग रे – ग रे रेगमंप रे – सा –
ढ ल र हा था ऽ सू ऽ र्य गो ऽ र त्रि याऽऽऽ ली ऽ का ऽ

विजानंद— ध – ध प ध प ध – ध
लो ऽ य ह उ प हा ऽ र
धनि प – ध – निध धपमप म म – म
लाऽ या ऽ हूँ ऽ विऽ वाऽऽऽ ह का ऽ मैं

सां सां सां ध सां – सां सां सां
ले लो उ प हा ऽ र य ह
ध सां रें ग रें सां रें ग रें सां ध सांध धपमप म – म म
ला ऽ याऽऽ ऽऽऽऽ हूँ ऽ विऽ वाऽऽऽ ह का ऽ मैं

सां सां सां सां सां ध सां – सां सां – सां सां सां सां –
गि न लो इ से ऽ ए ऽ क ए ऽ क क र के ऽ
ध सां रेंगरेंसां ध प सां ध सां – सां
पू ऽ रीऽऽऽ हैं म हि षि याँ ऽ ये

म ध ध सां ध सां सां सां सां
दे खो इ न्हे ऽ गि न क र
ध सां – सां ध सां रें – रें – रें सां रें मं मं –
पू री ऽ हैं पू ऽ री ऽ हैं ऽ पू ऽ री ऽ हैं ऽ
मं – रें मं – मं – मं
ए ऽ क सौ ऽ ए ऽ क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतिम दिन का पहर था

ढल रहा था सूर्य गोर वियाली का

विजानंद— 'लो यह उपहार

लाया हूँ विवाह का मैं

ले लो उपहार यह

लाया हूँ विवाह का मैं

गिन लो इसे एक एक करके

पूरी हैं महिषियाँ ये

देखो इन्हें गिनकर

पूरी हैं, पूरी हैं, पूरी हैं

एक सौ एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें – रें रें रें सां – सां ध सां – सां
ओ ऽ र अ व मे ऽ री ऽ शे ऽ णी

ध सां रेंगंरें सांध धपमप म म – म
वा ऽ पाऽऽ अ व मेऽऽऽ री शे ऽ णी

म ध ध सां सां – सां सां
दे दो मु झे ला ऽ क र

ध – सां ध सां – सां – सां
शे ऽ णी क हाँ ऽ मे ऽ री

ध सां रें – रें – रें सां रें मं मं –
बो ऽ लो ऽ वा ऽ पा ऽ बो ऽ लो ऽ

मं – मं रें मं – मं रें रेंमंपं मं पं –
शे ऽ णी क हाँ ऽ शे ऽ णीऽऽ क हाँ ऽ

वाचक— वह गौरव भरा.........अनुत्तर खड़ा

विजानंद— वेद्दा बापा, शेणी देदो, उपहार ले लो।

स्व : सा म – म – म म – म म म (म) ग ग प प –
र हा ऽ मौ ऽ न वे ऽ दा बि ना वै न बो ऽ ले ऽ

मं प प – धनिसां ध प प प प मंधपप
म ग र ऽ सिंऽऽ घु से छ ल छ लाऽऽऽ

ग गध प रे – सा –
नै ऽऽ न बो ऽ ले ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और अब मेरी शेणी
बापा अब मेरी शेणी
दे दो मुझे लाकर
शेणी कहाँ मेरी ?
बोलो बापा बोलो
शेणी कहाँ, शेणी कहाँ ?'

वह गौरव भरा मुखिया गोरवियाली का
नत मस्तक लज्जित हो मौन खड़ा
रोता अश्रु बहाता
वह गौरव भरा मुखिया गोरवियाली का
मौन अबोल लज्जित हो अनुत्तर खड़ा

विजानंद— 'वेद्दा बापा, शेणी दे दो
उपहार ले लो'
रहा मौन वेद्दा
बिना बैन बोले
मगर सिंधु से छल छला
नैन बोले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क : प प – प – प म धु प – धु धु – प – धु प धु म
विजा ऽ नं ऽ द भी ऽ था ऽ ल गा ऽ व्य ऽ स्त हो ऽ ने
म म – म गु म – गु म गु गुमप गु म रे – सा

कि शे ऽ णी क हाँ ऽ छि प र हीऽऽ कि स को ऽ ने

प प धु नि धु नि सां सां सां – नि नि सां निसांरें नि धु धु प प

ग या ऽ थ क पृ थ क हो ऽ भ व न सेऽऽ नि क ल क र

प नि – धु – प म – गु – गु म म – – गु रे मगु रे सा सा

ल गा ऽ पू ऽ छ ने ऽ वि ऽ श्व को ऽ ऽ ऽ ऽ वि कऽ ल क र

विजानंद— "शेणी कहाँ है...........उसका आलय"

वेद्दा— हिमालय.........[वेद्दा वेहोश होकर गिर पड़ता है]

विजानंद— हिमालय !!

ग : मं – – (म) रेंसांनिधु नि धु – धु धु प धु धु

लो ऽ ऽ गिऽरऽ ग या ऽ गि रि शि ख र
लो ऽ ऽ झुऽकऽ ग या ऽ ग र्व का स र

ख ङ : धु धु धु धु धु धु नि धु सां – सां – सां – नि धु सां – सां
किं तु प्रे ऽ म वि ह्व ल प्रा ऽ णों ऽ को ऽ अ र्थ वू ऽ झा
सां सां सां (सां) धु धु – म म गु म सागु म गु सा

वि र ह के पै रों ऽ को ऽ प थ सू ऽ ऽ झा ऽ

[मञ्च पर अन्धकार]

दृश्य - ४ (घ)

[मंच के अग्रभाग में एक काला परदा आ जाता है। निराश विजानंद हिमालय की ओर जाता दिखाई पड़ता है, नेपथ्य से यह गीत चलता है। परदे के पीछे पांचवें दृश्य की तैय्यारी होती है।]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजानंद भी था लगा व्यस्त होने
कि शेणी कहाँ, छिप रही किस कोने
गया थक पृथक हो भवन से निकल कर
लगा पूछने विश्व भर को विकल कर

विजानंद— 'शेणी कहाँ है
बापा कहाँ है उसका आलय ?'

वेद्दा— हिमालय !

विजानंद— 'हिमालय !!'

लो गिर गया गिरि शिखर
लो झुक गया गर्व का सर
किंतु
प्रेम विह्वल प्राणों ने अर्थ बूझा
विरह के पैरों को पथ सूझा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत - २०]

म – ग़ सा ऩि सा ध़ ऩि सा म म ग़ म –
ढूं ऽ ढ अ ल ख को ऽ ढूं ऽ ऽ ढ तूं ऽ

ग़ म ग़ सा ऩि सां ध़ ऩि सा – – ऩि सा –
घूं ऽ घ ट के ऽ प ट खो ऽ ऽ ल तूं ऽ

म म म म म म म – ध़ ग़ म – म –
घूं ऽ घ ट की ऽ ओ ऽ ट किया ऽ है ऽ

नि नि – ध़ नि – नि – नि नि ध़ ध़ नि सां सां –
उ से ऽ हृ टा ऽ दे ऽ उ से ऽ उ ठा ऽ दे ऽ

सां सां सां सां सां सां सां नि ध़ ध़ नि ध़ म म ध़मम ग़

अं ऽ त र प ट ऽ ऽ ऽ भे ऽ द क र ऽऽऽ

ग़ म ग़ सा ऩि सा ध़ ऩि सा म म ग़ म –
ढूं ऽ ढ अ ग म को ऽ ढूं ऽ ऽ ढ तूं ऽ

ऩि ऩि ऩि ऩि सा – सा – सा ग़ सा ग़ मग़ ग़ – सा –

अ व स र बी ऽ ते ऽ प छ ता ऽ ऽऽ ये ऽ गा ऽ

घूं ऽ घ ट य हृ फि र ढ क जा ऽ ऽऽ ये ऽ गा ऽ

सा म म म म म म ध़म ग़ म ग़ म

दे ख स म य प हि चाऽ ऽ ऽ न ले

ध़ – ध़ – ध़ ध़ ध़ ध़ – ध़ ध़ – नि – ध़ ध़
चू ऽ का ऽ फि र न दे ऽ ख पा ऽ ये ऽ गा ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत - २०]

ढूंढ अलख को ढूंढ तूं
घूंघट के पट खोल तूं
घूंघट की ओट किया है
उसे हटा दे, उसे उठा दे
अन्तर पट भेदकर
ढूंढ अगम को ढूंढ तूं
अवसर बीते पछतायेगा
घूंघट यह फिर ढक जायगा
देख समय पहिचान ले
चूका फिर न देख पायेगा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि नि नि – नि नि नि – नि सां धनिसां सां – सां –

हि म के ऽ प ट में ऽ छि प जाऽऽ ये ऽ गी ऽ

सां गं गं गं गं गं सां सां गं मं गं सां –

छ वि घूं घ ट की ऽ ओ ऽ ऽ ट में ऽ

(घ)

मं – मं मं मं मं मं गं गंमंगंसां गं सां सा सानिधु म

अं ऽ त र प ट ऽ ऽ चीऽऽऽ र ऽ क रऽऽ ऽ

ग म ग सा नि सा धु नि सा म – ग म –

ढूं ऽ ढ अ ल ख को ऽ ढूं ऽ ऽ ढ तूं ऽ

दृश्य - ५

[हिमालय ! पृष्ठ भूमि में धवल हिम श्रृंग दिखाई पड़ते हैं। अग्रभाग में अंधेरा है। हिमश्रृंगों पर बादल और धूमपुंज मंडराते हैं; आकाश से हिमपात होता रहता है। काला परदा हटने से पूर्व ही नेपथ्य से गम्भीर स्वरों में प्रतिध्वनित होता 'ॐ नमः शिवाय' का जप सुनाई पड़ता है। परदा हटने पर जाप के बीच से महाकवि कालिदास विरचित हिमालय की यह वंदना सुन पड़ती है।]

सा – सा सा सा सा सा सा

ग – ग ग ग ग ग ग

प – प प प प प प

सां – सां सां सां सां सां सां

ओं ऽ न मः शि वा ऽ य

श्लोक— सा रे ग म प ध सां रें गं रें गं – गं गं रें गं रें सां गं – गं

अ ऽ ऽ ऽ स्त्यु ऽ ऽ ऽ त्त र ऽ स्यां दि शि दे ऽ व ता ऽ त्मा

घ

रें गं – गं रें पं गं सां प पं ध प सांध सां

हि मा ऽ ल यो ऽ ना मऽ न गा धि राऽ जः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिम के पट में छिप जायगी

छवि घंूघट की ओट में

अन्तर पट चीर कर

ढंूढ अलख को ढंढ तूं

[सर्ग - ५]

विजानंद जब हिमालय पहुँचा तो शेणी गल चुकी थी, उसकी भटकती आत्मा प्रेमी को लौट जाने का अनुरोध कर रही थी, किंतु जो मिलन के गीत लेकर आया था वह लौटता कैसे। विजानंद भी हिम-खण्ड बन गया, 'दुई' दूर हुई और 'तूं में मैं' जा समायी।

ॐ नमः शिवाय

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम

नगाधिराजः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध ध – प ध – ध – ध प ध प ग प प – धसां ध

पु र्वा ऽ प रौ ऽ तो ऽ य नि धी ऽ ऽ व गा ऽ ऽ ऽ ह्य

प ध सां सां गं – गं सां सां सां गरें सांध सां – सां –

स्थि त ऽ पृ थि ऽ व्यां इ व मा ऽ ऽ न ऽ द – ण्डः ऽ

[श्लोक समाप्त होने पर—शेणी हिमालय के उस आंगन में जोगन वेश में, एकतारा लिए आती है । नगाधिराज को प्रणाम करती है ।]

[शेणी का प्रवेश ! अपना निवेदन प्रस्तुत करती है । उत्तर में जब हिमालय बोलता है तो समूची पर्वत माला के पीछे से ध्वनि के समानुपात में प्रकाश जगमग करता है । वार्तालाप के दौर में भैरव के स्वरों में वाद्ययंत्रों पर 'नमः शिवाय' का जाप चलता रहता है ।]

[भैरव]

क : सा रे॒ म – म म म म म म

हि म के ऽ अ र ऽ ण्य में ऽ

प – प प प प – म ध॒ ध॒ प से

शी ऽ त ल नि ष्प्रा ऽ ण त न से ऽ

प – ध॒ नि – नि ध॒ नि – नि

वा ऽ स ना ऽ स ब त्या ऽ ग

सां – सां सां नि सां – सां ध॒ ध॒निसां नि सां – सां –

आ ऽ स न ज मा ऽ या ऽ जो ऽ ऽ गि नी ऽ ने ऽ

सां सां रें मं – मं – गं मं मं मं – गं मं रें॒ सां ध॒ सां – सां

स न स ना ऽ ते ऽ प व न की ऽ वी ऽ णा ऽ ज गा ऽ यी

[एकतारा मंच के मध्य में स्थापित करके शेणी पहाड़ पर चढ़ना शुरू करती है ।]

[जोग कंस]

ङ : सा रे॒ म – म – म प – म म –

ज प ती ऽ ए ऽ क ध्या ऽ न हो ऽ

म ध॒ ध॒ ध॒ – ध॒ ध॒ प ध॒ म प – प –

वि जा ऽ न ऽ न्द ना ऽ म की मा ऽ ला ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्वांपरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितिः पृथिव्या इव
मानदण्डः ॥

(महाकवि कालिदास विरचित 'कुमार सम्भव'-प्रथम सर्ग)

शेणी— हे गिरिराज, मोक्षपुरी के द्वारपाल
हे सती के पिता
मैं भी तेरी बेटी हूँ और आज तेरी गोद में
समाने आयी हूँ ।
मुझे जल्दी अपनी शरण में ले ले ।

हिमालय— हे कुमारिके, यहाँ अकेला कोई गल नहीं सकता ।
तेरे हृदय में कोई और बैठा है
जा, उसे लेकर गलने आना ।

शेणी— अब क्या लौटूंगी गिरिराज ?
वह कहाँ मिलेगा ? पिता
राम ने जानकी की स्वर्ण प्रतिमा बनवाई थी ।
मैं भी अपने संकल्प की प्रतिमा के रूप में
उन्हें यहाँ स्थापित करती हूँ ।

हिमालय— एवमस्तु ।
हिम के अरण्य में
शीतल निष्प्राण तन से
वासना सब त्याग
आसन जमाया जोगिनी ने
सनसनाते पवन की वीणा जगायी ।
जपती एक ध्यान हो
विजानंद नाम की माला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प धु नि – नि नि – धु नि –
क ल्प ना ऽ में ध्या ऽ न में ऽ

सां – सां – सां (सां) धु – म ऽ ग – म सा ग सा –
तूं ऽ है ऽ उ सी तूं ऽ का ऽ जा ऽ प क र ती ऽ

[गीत - २१]

शेली— सा म म म म – ग म धुम ग सा सा ग म – म म –
तुं ही ऽ तुं ही ऽ तुं ही ऽ ऽ रा ऽ ऽम तुं ही ऽ तुं ही ऽ

म
म म म नि नि नि नि धु नि धु प ग ग म म म
क्ष क्ष य य ह धा ऽ म रा ऽम तुं हिं तुं हिं

सां सां सां – सां नि सां धु – नि नि सां सां सां
न य नो ऽ में ब स तूं ऽ ब सा ऽ है ऽ

सां – सां सां नि सां नि धु धु धु नि – नि
दे ऽ ख ती भ व सा ऽ ग र पा ऽ र

सां – सां ऽ सां नि सां नि धु नि – म नि नि – नि – धु नि – ध प ग म – –
मैं ऽ हो ऽ र ही ऽ हूँ ऽ तूं ऽ तूं ऽ हो ऽ र ऽ हा ऽ ऽ ऽ है ऽ मैं ऽ ऽ

म – म म म ग म – ग सा – ग – म म म – म ग म –
मैं ऽ ग ल र ही ऽ ऽ हूँ ऽ ऽ ब ऽ न र हा ऽ है ऽ तूं ऽ

नि – नि नि – नि धु नि धु प ग – ग म – म म –
मु ऽ क्त हों ऽ गे य ह ऽ प्रा ऽ ण तुं ही ऽ तुं ही ऽ

सा म – म म – ग सा – ग म – म म –
तुं ही ऽ तुं ही ऽ ब स ऽ तुं ही ऽ तुं ही ऽ

[गीत समाप्त होने पर शेणी हिमश्रृंग के पास आसन जमाकर बैठ जाती है ।]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कल्पना में ध्यान में

तूं है

उसी तूं का जाप करती

[गीत - २१]

शेणी— तुंहि तुंहि तुंहि राम तुंहि तुंहि

तेरा अक्षय यह धाम, राम तुंहि तुंहि

नयनों में बस 'तूं' बसा है

देखती भव सागर पार

'मैं' हो रही हूँ 'तूं' 'तूं' हो रहा है मैं

'मैं' गलरही हूँ बन रहा है 'तूं'

मुक्त होंगे यह प्राण

तुंहि तुंहि बस तुंहि तुंहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजानंद— (नेपथ्य से) शेणी ! शेणी !

दिशाएं— (प्रतिध्वनि) विजानंद ! विजानंद !

ख : [मालकोश]
सां
गं – गं – गं – सां गं मं गं सां –
तूं ऽ ही ऽ के ऽ ना ऽ ऽ द से ऽ
सां – सां (सां) नि ध ध निसांनिध नि सां
आ ऽ या खिं चा ऽ वि जाऽऽऽ नं द

दिशाएं— सा – सा म – म सां – सां
आ – आं आ – ओ आ – ओ

विजानंद— (प्रवेश करके) शेणी ! शेणी !

ख ग ङ : प – ध निसांरेंगं गं गं – रें गं – रें गं सां सांरेंगं गं
इं ऽ द्रि योंऽऽऽ के दे ऽ व ता ऽ सो ऽ ग येऽऽ थे
गं – गं गं गं गं – गं - रें गं – गं मं रें मंगं रें सां –
श्वे ऽ त हि म में ऽ अ ऽ ग थे ऽ स व खो ऽऽ ग ये ऽ
नि नि नि सां नि सां – नि सां रें ध – प – प प ध रें –
उ स अ च ल में ऽ स च ल का ऽ या ऽ ग ल च ली ऽ
रें – रें रें – रें सांरेंगं मं मं मं गं रें रें रें रें सां ध सां
ओ ऽ र शे ऽ णी नाऽऽ ऽ फं हो ऽ ऽ प्र ति प ल च ली

शेणी— कौन बुलाता है मुझे !

विजानंद— शेणी इधर देखो मैं आया हूँ !

शेणी— आये हो देव आओ !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजानंद— शेणी ! शेणी !

दिशाएँ— विजानंद ! विजानंद !

तुंही के नाद से
आया खिंचा विजानंद

दिशाएं— आ ऽ ओ ऽ आ ऽ ओ ऽ

विजानंद— शेणी ! शेणी !

इंद्रियों के देवता सो गये थे
श्वेत हिम में अंग थे सब खो गये
उस अचल में सचल काया
गल चली
और शेणी बर्फ हो
प्रतिपल चली

शेणी— कौन बुलाता है मुझे ?

विजानंद— शेणी, इधर देखो, मैं आया हूँ

शेणी— आये हो देव, आओ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क : [भैरवी]

प धु निसांरेंगं रें गं सां – रें सां –
स प नेऽऽऽ हु ए मू ऽ र्ति मा न्

नि नि सां नि सां – प नि सारेंनिसां धु प –
अ ल ख ल खा ऽ ऽ ई ऽऽऽऽ प ड़ा ऽ

धु – धु धु धु प धु म – म म
औ ऽ र ध्व नि जा ऽ गी ऽ य ह

गु – म म सा गुमप– म रे – सा –
आ ऽ ये हो ऽ देऽऽऽ व आ ऽ वो ऽ

म – म म म – म - म म गु गु म म गु प प म धु प –
जा ऽ गी वि जा ऽ नं ऽ द की ऽ वी ऽ णा ऽ फि र स ह सा ऽ

प – प – प धु निसांनिधु नि नि सां सां
जा ऽ गे ऽ अ नु राऽऽऽ ग रा ऽ ग

गं – गं गं रें गं – सां सांरेंगं गं – गं सां नि धु प म प
ढां ऽ घ न क टे ऽ ऽ माऽऽ या ऽ के ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ –

गु म धु – धु नि ध नि सां नि सां –
मु क्त प्रा ऽ ण गा ऽ ने ऽ ल गे ऽ

[शेणी प्राण त्याग देती है और उसकी आत्मा का संदेश अगले गान में ध्वनित होता है और गीत के स्वरों के समानुपात में शेणी की जड़ काया के पीछे से प्रकाश छिप छिप करता है ।]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सपने हुए मूर्तिमान

अलख लखाई पड़ा

और ध्वनि जागी यह

आये हो देव - आओ

जागो विजानंद की

वीणा फिर सहसा

जागे अनुराग राग

बंधन कटे माया के

मुक्त प्राण गाने लगे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत - २२

श्रेणी— सा सा धु - धु - धु - प नि धु - धुपमग ग म - म -

जा ओ जा ऽ ओ ऽ प्रा ऽ ण मे री ऽ लौऽऽऽ ट जा ऽ ओ ऽ

नि - नि धुपमग ग - ग म पधुपम ग रे - सा -

लौ ऽ ट जाऽऽऽ ओ ऽ घ र लौऽऽऽ ट जा ऽ ओ ऽ

सां सां नि सां सां सां - निसांरें सां रें नि धु म धु नि सां नि सां - सां

ह म मि ल न के ऽ लेऽऽ ऽऽ ख ले ऽ क र ऽ न आ ऽ ये ऽ

सां सां सां - सां सा रें नि नि - नि धुपमग ग प - प

इ स जी ऽ व न में ऽ हा ऽ य मिऽलऽ न पा ऽ ये

नि नि ध नि - नि - नि - धनि सां नि धुपमग मप म

ह म मि ले ऽ ज्यों ऽ मा ऽ लाऽ ऽ के मोऽऽऽ ऽऽ ती

प - प धु पप म ग ग ग म पधुपम ग रे - सा

ए ऽ क डो ऽऽ र ऽ ऽ प र दूऽऽऽ र दू ऽ र

नि नि - सा नि सा नि सा ग रे सा

लि खा ऽ था न हीं नि य ति ने ऽ

प - प धु पप मग ग म - म

हा ऽ य मि ऽऽ लऽ न पा ऽ ये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[गीत - २२]

शेणी— जाओ जाओ मेरे प्राण लौट जाओ

लौट जाओ, घर लौट जाओ

हम मिलन के लेख लेकर न आये

इस जीवन में हाय मिलन न पाये

हम मिले, ज्यों माला के मोती

एक डोर पर दूर दूर

लिखा था नहीं नियति ने,

हाय मिल न पाये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां सां रें – रें सां रें सां नि ध प म ग ग म पधपम ग रे – सा

घ र लौ ऽ ट जा ऽ ऽ ऽ ओ ऽ ऽ ऽ , घ र लौऽऽ ट जा ऽ ओ

[विकल विजानंद वीणा एकतारे के साथ रखकर पहाड़ पर चढ़ने लगता है और अपना गीत शेष होने के साथ साथ शेणी के दाहिने बैठ जाता है और समाधिस्थ हो जाता है।]

गीत - २३

विजानंद— ग ग ग – ग म ग रेग म – म, ग म पमग रे सा सा – सा

फि र लौ ऽ ट जा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऊँ, घ र लौऽऽ ट ऽ जा ऽ ऊँ

ध म रे

ग – ग ग म – प – प प ग म मप ग सा सा – सा

प्रा ऽ ण मे री ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ घ र लौऽ ऽ ट जा ऽ ऊँ

म म म – म म पम ग ग – गम प प मं प – प

चि र जी ऽ व न काऽ ऽ सं ऽ वंऽ ऽ ध ह मा ऽ रा

नि नि नि नि नि – नि नि नि सांनिधम धनिसां सां

मि ल मि ल के ऽ बि छु ड़ जाऽऽऽ ऽ ऽ॰ऽ ना

सां – (सां) नि नि – नि ध नि – ध नि ध प म प ध प

है ऽ ये ऽ खे ऽ ल ह मा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ रा

ध ध प ध – ध ध – ध नि – ध निधपम पध प

ह म मि लें ऽ गे ज्यों ऽ मा ला ऽ के मोऽऽऽ ऽ ऽ ती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घर लौट जाओ घर, लौट जाओ

[गीत - २३]

विजानंद— फिर लौट जाऊँ–घर लौट जाऊँ ?

प्राण मेरी घर लौट जाऊँ ?

चिर जीवन का संबंध हमारा

मिल–मिल के बिछुड़ जाना

है ये खेल हमारा

हम मिलेंगे ज्यों माला के मोती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धु – धु धु – धु धु – पधुनिसांनि धुपधु प प प

ए ऽ क आ ऽ त्म की ऽ डोऽऽऽऽ ऽऽऽ र नं धी

प प प – प प धु पप म गु गु मपनिधु नि प

वि ध ना ऽ के तो ड़ ऽऽ ना ऽ टू टेऽऽऽ ऽ री

म प गु – गुम पधुपमगु रे – सा

कै ऽ से ऽ फिर लौऽऽऽट जा ऽ ऊँ

सा रे गु म सा रे म म प – प म प – प म धु – प
आ ऽ ऽ ऽ मि ल जा यें ए ऽ क में ए ऽ क स मा ऽ यें

नि – नि – नि – नि नि सां निधुनि सां सां –

दो ऽ को – ए ऽ क ब ना ऽऽऽ ऽ यें ऽ

सां — — सानिधुमपगु – गु म पधुप म गु रे – सा

आ ऽ ऽ ऽऽऽऽऽ ऽ आ ऽ ऽऽऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ

[शेणी और विजानंद पर दो प्रकाश पुंज प्रगट होते हैं। एक प्रकाश पुंज मंच पर पड़े एकतारे और वीणा पर पड़ता है।]

क ख ग घ ङ : सा सा म – म म म म गु म – म म म
शां ति शां – त थे हि म अ र ऽ ण्य स ब

म – म म – म म – म प म प – प
शां – ति शां ऽ त शे ऽ णी की ऽ का ऽ या

प – प प – प प – प पम म धु – धु धु धु

शां – ति शां – त बी – न थीऽ वि जा ऽ नं द की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक आतम की डोर बँधी

विधना के तोड़े ना टूटे री

कैसे फिर लौट जाऊँ ?

आ मिल जायें

एक में एक समायें

दो को एक बनायें

आ ऽ ऽ आ ऽ ऽ आ ऽ ऽ

शांति–शांत थे हिम आरण्य सब

शांति–शांत शेणी की काया

शांति–शांत बीन थी विजानंद की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध – ध धु – धु धुधुप निधु निधु– नि सां – सां
शां – ति शांऽति सुतनु नेऽ उसके पाऽयाऽ

सा – सा सा – सा सा – सा
ॐ शां – ति शां – ति शां – ति

ख : प – पधुनिसांरेंगं गं – गं रें गं –

दुऽ ईऽऽऽऽऽ ऽरहुईऽ

सांरेंगंमं मं – गंरें– मंगं रें – सां – सां

तूऽऽऽ मेंऽ मैंऽऽ ऽऽ सऽमाऽई

[दोनों प्रकाश पुंज मिलकर एक हो जाते हैं और मंच पर आँखें चौंधियाता एक विशाल प्रकाश पुंज प्रगट होता है ।]

क : पपधु निसानिधु नि सां सां – सां, सां सां सां सांनि रें – नि धु प –

जगति केऽऽऽ नरनाऽरी, रहगये ऽ रोऽतेऽहीऽ

पपपधुऽपधुपमम –
चमकतीऽअमररहीऽ

गु – गु ममम – गु मगुमप गुम रे – सा

ब्रऽह्म औरब्रऽह्म कीऽऽऽ ऽऽ ज्योऽती

सा – रे म – म – म – गु – म धु – धु – धु
ब्रऽह्म कीऽज्योऽतीऽ; ब्रऽह्म कीऽज्योऽती

धु – धु निसांनिधु नि सां सां –

ब्रऽह्म कीऽऽऽ ज्योऽतीऽ

[परदा गिरता है]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शांति–शांति सुतन्तु ने उसके पाया

ॐ–शांति–शांति–शांति

(दुई) दूर हुई

'तू' में मैं समाई

जगती के नर नारी

रह गये रोते ही

चमकती अमर रही

ब्रह्म और ब्रह्म की ज्योति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काव्य में आये कुछ शब्द :

गोरवियाली— जूनागढ़ के निकट गिरनार पर्वत की तराई में चारणों का एक गांव जो आज भी वर्तमान है।

गिरनार— काठियावाड़ का प्रसिद्ध पर्वत

गीर— विश्वविख्यात जंगल जिसमें सिंह पाये जाते हैं।

मेह-जेठवा, ऊजली– जेठवा अत्यन्त प्राचीन राजपूत कुल है जिसमें पोरबंदर के महाराज आते हैं। मेह इसी कुल का वीर था जो अपनी प्राणरक्षिका चारण कन्या ऊजली से विवाह करना चाहता था पर समाज ने करने नहीं दिया।

खेंगार— और उसका पुत्र नौंधण १२ हवीं सदी में सौराष्ट्र के राजा थे।

सागर— पृथ्वीराज चौहान के प्रति द्रोह किया था और गोरी से जा मिला।

राणक— खेंगार द्वितीय की रानी (जूनागढ़)। गुजरात के सिद्ध-राज ने जूनागढ़ पर आक्रमण किया और रणभूमि में खेंगार वीर गति को प्राप्त हुआ सिद्धराज राणक को उठा ले गया पर वह अंत समय तक खेंगार के प्रति समर्पित रही और वढवाण में उसके शव के साथ सती हो गयी।

अंबा-भवानी और शिव— चारणों के इष्ट देवता, अनादि शक्ति, प्रलय और नूतन सृष्टि के प्रतीक।

तूं हि— वेदान्त सूत्र – "केवल तुम – एक तुम ही"

नवचंद्री— वह भैंस जिसके चारों पैर, पूंछ की छोर, एक थन, ललाट, मुँह और एक आँख पर सफेद दाग (कुल नौ) होते हैं। ऐसी भैंसें दुर्लभ होती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सेणी अने विजाणंद
(मूल गुजराती काव्य के कुछ अंश)

सर्ग १ लो— सृष्टि संगीत मय हती–
डुंगराने माथे वायरा सूसवे–
घेरी घेरी सरिता घूघवे
अमराई मां कोयल टुहुके–
वडलानी डाल्ये मोर केकारे,
मरवाडो वांसली बजावे;
अेकांत मां ब्रह्मनाद गाजे–
अे सर्व संगीत वीजाणंद सूणे

गीत— सारा गीर नी लीलवणी ने भेली करी
मारा ठाकर महाराजे पूतली घडी पूतली घडी
अे पूतलीनी झांखी करजो हो लोल, पूतली घडी
सारी वरखानी वीजली ने भेली करी
मारा ठाकर महाराजे पूतली घडी, पूतली घडी
अे वीजलीनी पूतली ने न्हालजो हो लोल, पूतली घडी

सर्ग ४ गरवा हो जीर, मारा गरवा डुगरिया
गीत— छेल्ला लियो राम राम,
सेणी केरा, छेल्ला लियो राम राम
गरवा सावजडा, लीलुडा वांसलडा
छेल्ला लियो राम राम,
सेणी केरा छेल्ला लियो राम राम
समाणी सहजायी मारी मेणी सहोदर
छेल्ला लियो राम राम,
सेणी केरा छेल्ला लियो राम राम

अंतिम— शांति-वरफनां वन शांत हतां
सेणी नो देह शांत हतो
वीजाणंदनुं जंतर शांत थयुं,
विजाणंद नो देह शांत थयो
सेणी विजाणंद समाणी
विजाणंद सेणी समाणो
ससारिलांओ सूना था रहयां
ब्रह्म अने ब्रह्म ज्योत
अेकमेक प्रकटयां.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शेणी बिजानंद

(अंग्रेजी अनुवाद का एक अंश स्वंय कवि द्वारा)

आरंभ —The Earth was filled with soft and tender melody,
Winds sang their sibilant songs on mountain tops,
Rivers raced in deep and rolling thunder,
The cuckoos cooed their dainty notes from depths
of mango-groves,
The peacocks miawed among the banyan branches,
The herds of kine and sheep played exquisite
tunes on flutes,
The Song of Spheres boomed eternal in high solitudes.
And all this music fell on Vijanands deep drinking ears.

अंत में—Peace–the snowfields lay in peace;
Sheni's flesh case lay in peace
Vijanand's harp lay quivering in
Life a while and then in peace
Vijanand's warm and yearning person,
Fell on the snow fields in eternal peace
Earth's men and women
Were thus left bereaved
Love and Love's Light
Shone transcedent above all.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बालापन की प्रीत

ले०--श्री झवेर चंद्र मेघाणी

विजाणंद आडो वींझणो ने शेणी आडी भींत
पड़दे थी वातुं करे, बालापणनी प्रीत । १

बचपन से मातृ पितृ विहीन अनाथ बालक औरों के पशु चराकर अपना भरण पोषण करता था। गीर के चरागाहों में भटकते-भटकते वह बड़ा होता जा रहा था किन्तु इस मातृहीन बालक को मलमल कर नहलाने धुलाने वाला कोई नहीं था। उसके माथे पर जूंए रेंगती थीं। यह उपेक्षित बालक बड़ा होते-होते इस प्रकार अपना वास्तविक रंगरूप खो बैठा था।

मित्र सम्बन्धी विहीन इस भटकते बालक ने आखिर एक साथी पा ही लिया। गीर के सघन वन में भटकते हुए उसने तुंबी की लता पर से दो बड़ी गोलाकार तुम्बियाँ उतार लीं। पवन की लहरों से जिसके खोखर में से दिन रात अनेक अलौकिक स्वर गूंजते रहते ऐसे एक बाँस से पाँच पोर का एक टुकड़ा काट लिया। बाँस के दोनों छोरों पर तुम्बियाँ बाँध कर लड़के ने उस पर तार और ताँतें बाँधीं। किसी वृक्ष के तने से झरते रस को जंतर पर पोत दिया। एक ओर मोरपंख का गुच्छा लगाया। ऐसी सुंदर बीन बना कर जब पहली बार उस लड़के ने जतर के तार पर अपनी अंगुलियाँ फेरीं, तो उस समय बाँस और तुंबी के खोखर में जैसे कोई युग युग का पुराना संगी बैठा हो और प्रत्युत्तर में हुंकारी भरता हो ऐसे सुर सुनायी देने लगे। कुछ दिनों बाद तो लड़का जंतर को कंधे पर रख कर सिर्फ हृदय के निर्देशानुसार अंगुलियाँ फिराकर, पेड़ पौधों झरनों निर्झरों और गीर के कोने-कोने को गीतों से गुंजाने लगा। जंतर पर अनूठी त्वरा से उसका हाथ सध गया। छत्तीसों राग रागिनीयाँ उसके सामने हाथ जोड़ कर आ खड़ी हुई।

जंतर मोटे तूंबडे बत्रीसे गमे
छत्रीस लवण रमे, विजाणंदने टेरवे । २

बड़े तुंबोंवाला वह बीन, उसमें बत्तीस तो परदे लगे थे और उसमें से छत्तीस भिन्न-भिन्न रागिनियाँ विजानंद की टेर के स्पर्श मात्र से कल्लोल कर खेलने लगतीं थीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीर से थोड़ी दूर गोरवियाली नामक एक गाँव बसा है। कभी-कभी अपनी पाँच भैसों से निवृत्त हो विजानंद इस गोरवियाली गांव में आता। पहली बार जब वह आया तो गाँव के बाहर स्थित पनघट पर जाकर उसने पनिहारिनों से कहा 'पानी पिलाओ जी ?'

दो में से एक पनिहारी अभी कुंवारी थी। कुमारिका ने इस पानी की याचना करने वाले लड़के की ओर देखा। देखते ही जो घड़ा अभी खींच कर भरा था वह भी गिरा दिया, मुंह बिचका कर अपनी सहेली से कहा 'बहन, इसे पानी पिला दे, मैं तो इसका मोहक रूप देखकर मर मिटी हूँ।'

ऐसा कह कर उस रूप-झरती कुमारिका ने अपने गोरे अंगों पर काली चूनर सिर से मुंह तक तान ली, सिर पर घड़ा रख कर जल्दी से गांव की ओर चल दी। पीछे से दूसरी पनिहारी ने आवाज दी कि 'अरी ओ, शेणीबा ! तेरी गागर कलमुँहा कौवा झुठारता है।'

विजानद ने तुरन्त उस स्त्री से कहा 'अरे बाई। आदमी से तो कौवा ही अधिक रूपवान होता है, है न ? कौवा तो समूचा घट झुठार गया पर मुझे तो चिल्लू भर पानी पिलाने में इसको रंचमात्र माया नहीं उपजी, ठीक ही है, होगा।'

प्यासा लड़का पानी पीकर गाँव में गया। गाँव में वेहा गोरवियाला नामक बड़ा धनवान श्रीमंत चारण रहता था। वेद्दा के आंगन में तीन सौ भैंसे लगती थीं। प्रभु के चारों हाथ इस चारण के मस्तक पर थे। इस वेद्दा गोरवियाला के द्वार पर जाकर विजानद ने अपना जतर टांग दिया, विश्राम किया, वेद्दा गढवी ने बालक का आदर सम्मान किया। रात के समय भोजन करते हुए विजानंद ने रेड़ी के तेल के दीपक के मंद प्रकाश में परोसने आयी कन्या को पहिचाना, 'कुंए पर मुझे कुरूप कहकर पानी पिलाये बिना चली आयी लड़की यही तो है' वेद्दा की सात संतानों में बची यह इकलौती बेटी है, बाप उस पर न्यौछावर है, 'शेणी, बेटा शेणी' कहकर पुकारता रहता है। 'ठीक है जीतवा। वेद्दा की बेटी मुझ भिखारी को पानी न पिलाये इसमें आश्चर्य क्या ? कहाँ मैं बिना माँ बाप का निर्धन प्राणी और कहाँ बादशाही बगीचे की यह चम्पाकली।'

ब्यालु करके सब लोग चांदनी के प्रकाश में आंगन में खटिया डाल के बैठे हैं। गरमी की रात है अतः प्रकाश जैसे हीरे जड़ा हो। शीतल पवन वृक्षों की डालियों से भांति भांति के खेल कर रहा है। ऐसे में अपनी पाँच भैसों से घिरी खाट पर बैठे विजानंद ने जंतर कंधे पर रखकर बजाना आरम्भ किया। जंतर के पोले भाग में सोई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोई वनदेवी जिसे अपने बंधु के कोमल स्पर्श की देर थी, उठ बैठी, अपने अतीत की बात करती हो ऐसे विलाप के स्वर सुनाई देने लगे। सुतहीन माता रोती हो, पिया की वियोगन अबला सिसकती हो, और भाई से विछुड़ी बहन झंखती हो, प्रभु द्वारा त्यक्त भक्त बिलखता हो, और स्वामी विना पशु चीत्कार करते हों ऐसी ऐसी ध्वनियाँ निकलने लगी। बीच-बीच में जंतर के तार में से मींड के सुर निकलते तो सब सुनने वालों के कलेजे में अकथ्य, अकल और असह्य ऐसा कुछ-कुछ होने लगता। हाथ में हुक्के थे उनके दम लगने बंद हो गये। कुत्तों ने भूँकना वंद कर दिया। भैंसों ने जुगाली करना रोक दिया, और वेद्दा के घर के अंदर से जैसे गहन गहरा निःश्वास निकला हो ऐसी आवाज सुनाई दी—

जंतर झाल्युं हाथ, भाँचलिये भाँगतीरात्युनुं,
साथ ले संगाथ, बाढेल सढ विजाणंदे। ३

(पाठांतरः जंतर वायुं जे, आंगणिये आवोने,
कालज करवतए, वाढी गियो विजाणंदो।)

भाँचलिया शाखा के चारण विजानंद ने भग्न रात में बीन हाथ में लेकर वजाया, मानों हमें अपने साथ संगीत के गहरे दरिया में ले जाकर फिर वहाँ उसने हमारी नौका का पेंदा छेद डाला।

वेद्दा गढवी को मोहित कर विजानंद चल पड़ा। पर फिर तो बारंबार उसे निमन्त्रण मिलने लगे। जंतर लेकर बारबार विजानंद गोरवियाली आने जाने लगा। ऐसी अनेक कचोटती रातों में दीवार की आड़ में बैठी कन्या शेणी के जीवन की नौका के तल विदीर्ण हुए और—

गमे गमे गोठडी नव तांत्युंमां नेह,
हैयामां हलकेह विजाणंद ना तूबंडां। ४

उस जंतर की प्रत्येक तरब गा गाकर मानो शेणी के साथ गुप्त मंत्रणा कर रहीं थीं। नौ ताँतें मानो शेणी के साथ ही स्नेह बांध रही थीं। और उस बीन के तुंबे गहरी प्रतिध्वनि करके मानो केवल शेणी के हृदय में ही हाँक लगाते थे।

जिसे कुरूप कहा, जिसकी मुखाकृति से डरकर शेणी कुंवे की जगत से भाग चली थी, उसका अंतः स्वरूप अब शेणी ने उसके गुनभरे सगीत में निरखा, और निरख के गांठ बांध ली कि और सब तो भाई-बाप है। पर चारण की बेटी मुँह पर तो किसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से मन की बात कह नहीं सकती। गांव में कोई हम उम्र सहेली नहीं है। घर में कोई बहन भौजाई नहीं है। गांव के नरनारी शेणी आई को जोगमाया का अवतार मानते हैं। शेणी आई ने चिरकुमारी रहने का निर्णय किया है ऐसी सबको खबर थो। बाप को तो स्वपन में भी धारणा नहीं थी कि ऐसे कुरूप युवक पर उसकी लाडली बेटी का दिल आ सकता है। सिर्फ विजानंद ने ही शेणी की नीचे ढलती पलकों में और थर थर कांपते होंठों में प्रीति की गुप्त बात पढ़ ली।

ऐसी ही एक रात चौथा प्रहर है। विजानंद की वीणा के स्वर विस्तार में सारा क्षेत्र भींज रहा है। जोर से साँस लेने पर भी मानो पाप लगे, ऐसी राग रागिनी की गहरी जमावट रात के हृदय पर छा गयी है। कमरे में दीपक की बाती जल गयी है पर उठ कर उसे झाड़ने के लिए कमरे की छाँह में बैठी कन्या का मन नहीं मानता। जम्हाई भी नहीं आई और रात बीत चली है। सबेरे वेद्दा गोरवियाने सभा बुलाई, कसुंबा देकर, विजानंद से कहा :

'भाँजे। बहुत दिन तक तूने हमें मौज करायी, आज तो अब तेरी बारी है मौज करने की। ये मेरे घर में इतनी गाय भैंसे हैं, ऋद्धि-सिद्धि है, उसमें तुझे जो मौज आये वह चीज माँगले, भाँजे।'

विजानंद ने माथा धरती पर टेक दिया। कोठरी में शेणी के हृदय में साँस समाता नहीं, कलेजा फड़फड़ाता है, कौन जाने चारण कौन सी चीज माँगेगा।

'क्यों भाई। क्यों, सिर नीचे क्यों झुका लिया?'

'मामा। क्या माँगु? ऋद्धि-सिद्धि की कामना नहीं रही। भैंसे भी मैं देखभाल कर सकूँ इतनी तो जगदम्बा ने दी ही हैं। अब भार किसके लिए बढ़ाऊँ?

'विजानंद। कहता हूँ, माँग ले। मेरी मौज, मेरा आनन्द व्यर्थ न जाय, मुझे असद्गति मिलेगी, झट से माँग ले।'

'पर मामा, मैं जो माँगूगा वह आप दे नहीं सकेंगे।'

'मैं अपनी देह बेचकर भी तेरा सवाल पूरा करूँगा। मत संकोच कर। माँग ले, नहीं दूंगा तो यह देह त्याग दूंगा'

'मामा! एक ही चीज माँगता हूँ, शेणी का हाथ..............'सुनते ही वेदा गढवी के चेहरे पर से रंग उड़ गया। हथेली में कसुंबे की भरी अंजली थी वह धरती पर गिरा दी। ललाट पर पसीने के बिंदु चुहचुहा आये। तिलमिला कर वेद्दा ने कहा :

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'छोकरे, माँगने के तरीके से माँगना चाहिये, आज तूने मेरी मौत बिगाड़ी है, वेद्दा की मुँह बोली बेटी तेरे जैसे भटकते भिखारी को मिलेगी ? जिसके नहीं हैं मां बाप, नहीं हैं रहने को घास की एक झोपड़ी।'

'कुछ नहीं मामा, मेरी भूल हुई।'

इतना कहकर जंतर कंधे पर रख कर दीन भाव से विजानंद खाये पिये बिना ही चल पड़ा। और समूची चारण सभा ने वेद्दा गोरवियाला पर फिटकार बरसाना शुरु किया :

'वेद्दा गढवी जब वचन पालना नहीं था तो वचन दिया किसलिए ? चारण तेरे आँगन से निश्वास भरता निराश चला गया, मलूम है ? तेरा सत्यानाश हो जायगा ?"

पछता कर के वेद्दा ने कहा 'उसे वापस बुला लाओ।' गाँव के छोर से वे विजानन्द को वापस बुला लाये। वेदा ने फिर कहा 'अच्छा ठीक है भरवाड़े, मेरी मुँह बोली शेगी इस प्रकार नहीं मिल सकती, शेगी का हाथ पाना है तो जा, नवचंद्री भैंस-एक सौ एक-इकट्ठी कर ले आ, एक वर्ष की अवधि देता हूँ। देखना इसमें रंचमात्र की भी गलती न हो, जो एक दिन की भी देर हो गई तो जान लेना कि इस जनम में शेगी का मुँह भी देखने को नहीं मिलेगा। नहीं तो एक वरस की अवधि में आना और एक सौ एक नवचंदरियाँ खाली खूंटों से बांध जाना, और खुशी से शेगी को ब्याह ले जाना, मंजूर है ?"

'मंजूर है मामा ?'

इतना कहकर विजानंद पुनः निकल पड़ा। पाँच भैंसे थीं उनको दुलार कर किसी परिचित के टोले में मिला दिया। पाँचों के संमुख हाथ जोड़ कर बोला 'मेरी माताओं ! आराम से चरना, मैं तुरत आता हूँ। साल बीतते देर नहीं लगेगी। और बाद में तो फिर तुम्हें दानापानी देने वाली, दूध दुहने वाली, बछवा को पालने वाली, छाछ बिलोनेवाली शेगी अपने घर आवेगी, कहीं नदी किनारे सुन्दर घर बनाकर रहेंगे, दुखी न होना, हाँ।'

भैंसों की आखों से आँसू की बड़ी-बड़ी बूदें टपक रहीं हैं, विजानन्द की छाती भी भर आई पर वह हिम्मत बाँधकर निकल पड़ा। उसे तो विश्वास था कि 'मेरा जंतर जिस गाँव में जाकर बजाऊँगा, वहाँ से पाँच-पाँच नवचंद्री भैंसे भी क्या मुझे नहीं मिलेंगी ? ऐसे बीस ग्राम तो मैं पाँच महीने में घूम आऊँगा।'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजाणंद हाली नीकल्यो पोठीडा पलाणे
डाबो थाने गणेश ! (तो) विजाणंद पाछोवले ।५

बैल पर सवार होकर विजानंद चल पड़ा। विसुरती शेणी जंगल के तीतर से विनती करती है कि 'हे गणेश, पंखी ! तू मेरे प्रियतम के सामने बांयी ओर उतरना, कि जिससे अपशकुन समझ कर वह वापस लौट आये।' पुनः शेणी ने पुकारा—

हरणां तारी डोकमां घडावुं घूघरमाल
सोने मढ़ावुं शींगडी, विजाणंद पाछो वाल्य ।६

'हे हिरन तू बायें उतर कर विजानन्द को अपशकुन कर तो मैं तेरे कंठ में घूघरमाल पहनाऊँगी, तेरी सींग सोने से मढ़वाऊँगी।'

गाँव-गाँव जाकर विजानंद जलधारी रात का जंतर बजाता है और मनुष्यों की आँखों से नींद उड़ा देता है। हर सुबह भरी सभा में विजानंद को भेंट देने की बातें होती हैं पर नवचंद्री भैंस का नाम आते ही ग्रामवासी लाचार हो जाते हैं। चार पैर धोले, पूँछ के छोर पर सफेद बाल, एक थन सफेद, ललाट पर टीका, मुँह सफेद, एक आँख सफेद ऐसे नवश्वेत रंगी चन्द्र चिह्नों वाली भैंसों को नवचन्द्री कहते हैं, ऐसी भैंसे कहीं मिलती हैं, कहीं नहीं मिलती। नव में से एक भी कम दाग हो तो फिर काम नहीं चलेगा।

विजानंद की गणना झूठी हो गयी। जहाँ से पाँच पाँच की उम्मीद थी वहाँ से एक भी मुश्किल से मिल पायी। ज्यों-ज्यों भैंसें मिलती गयी विजानन्द उन्हें हाँकता भ्रमण करने लगा, बहुत दूर दूर तक चला गया। कितना दूर निकल आया इसका उसे ध्यान न रहा। खाता पीना, नहाना धोना, कपड़े बदलना कि हँस बोल कर बात करनी, यह सब विजानंद भूल गया है। दिन रात जंतर पर उसकी अंगुलियाँ फिरती रहती हैं, और 'नवचंद्री भैंसे', बस इतनी ही बात मुँह से निकलती है। गीर पारकर विजानंद बरडा, हालार, झालावाड़, जहाँ-जहाँ से भी किसी नवचंद्री का पता मिलता है वहाँ वहाँ जा पहुँचता है। दिन पर दिन की और फिर पहर पहर की गिनती करता है। ऐसा करते एक वर्ष में थोड़े ही दिन बाकी रहे। वेद्दा द्वारा दी अवधि पूरी होने जा रही थी।

यहाँ गोरवियाली ग्राम में शेणी के यौवन की कलियाँ खुल गयी थीं, प्रेम का खेत पक गया था। शेणी की तड़पन क्या कहती थी—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खेतर पाक्यु कण झरे, मन बेठुं माले,

वल्य वेलो विजाणंद, (मने) रोझड़ां रंझाडे ।७

हे विजानंद मेरे जीवन का खेत पक गया है, यौवन रूपी दाने नीचे झर जाते हैं, अंतःकरण तुम्हारी राह देखता नीड़ पर बैठा है, अब तू झट वापस लौट आ. क्योंकि नादान चारण उम्मेदवार रूपी जंगली पशु मेरे जीवन खेत को रौंद रहे हैं (मुझसे विवाह करने का प्रयत्न कर रहे हैं) ।

खेतर पाक्यु पोंक थियो, मन बेठुं माले

अधवच मेल्यां एकलां, हाल्य हैडा हिमाले ।८

जीवन का खेत पक गया है, यौवन रूपी पोंक (हरे दाने) सिककर खाने के हित तैयार हो गये हैं। मेरा मन नीड़ में बैठा प्रतीक्षा करता है। विजानंद ने तो मुझे बीच राह में भटका दिया है। अतः हे हृदय, चल अब हिमालय में गल जाँय।

वरस वल्यां बादल वल्यां, धरतो नीलाणी,

(पण) एक विजाणंद ने कारणें, शेणी सुकाणी ।९

वर्ष भी लौट आया, बादल भी पूरे बारह महीने की मुद्दत पूरी करके हाजिर हो गये हैं, पृथ्वी सबके पुनर्मिलन के लिये हरी वनस्पति के यौवन रंग में विहँसकर उल्लसित हो उठी है। हाय, ये सब तो हरे हो गये, क्योंकि मिलन का सुख पा गये, सूख कर शोषित हो सुलग गई एकमात्र शेणी, कारण कि केवल वह प्यारे विजानंद की वियोगिनी है।

उस दिन गाँव के छोर पर पानी खींचती पनिहारी शेणी चतुर्दिक् गावों की ओर से आती लम्बी लम्बी पगडंडियों पर दृष्टि गड़ा कर देखा करती है कि कहीं विजानन्द आ तो नहीं रहा है ? कहीं एक सौ एक नवचंदरियों का झुण्ड गोरज के बादल उड़ाता आता न हो ? कही जंतर के संदेश ले पवन की लहरें न आती हों ?

जो आ जाय तो आज कुंए पर पेट भर कर पानी पियें इतना पानी पिलाऊँगी, उसकी एक सौ नवचंदरियों को भी अपने हाथ पानी खींच-खींच कर पिलाऊँगी, लंबी यात्रा करके आते प्रियतम को जी भर कर नहलाऊँगी, उसके मैले वस्त्र इस ओझत नदी की श्वेत धूल में मलकर उजले दूध से बना कर सुखाऊँगी, उस दिन पानी नहीं पिलाया था उसका आज प्रतिकार कर दूँगी। दिन पर दिन बीतते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाते हैं पर विजानन्द तो आता ही नहीं ! ग्राम के छोर पर बहती ओझत नदी को शेणी पुकारती है—

चढ टींबा चढ टींबडी, चढ गुंदारी धार।
ओझत, उछालो लई, विजयानंद पाछो वाल।१०

ओ बहन ओझत। तू ऊँचे टीले टेकरों पर चढ़ने वाली है, तू विजानंद को कहीं बहुत दूर पर देख सकती होगी, भली बन कर एक बार उछाल मार कर, उसका पथ रोक कर तू उसे झट वापस बुला दे।

दिन बीत गया, ओझत के तट पर आस छोड़ शेणी गगरी भर कर घर लौटी। जाकर देखा कि बेहा हर्ष से पागल हुआ बठा हैं।

'बेटा शेणी' वेद्दा बोला 'अब इस समय हलुवा बनाना गीगी। वह कलमुँहा नहीं लौटा री और हम उबर गये। अरे मेरी मिठबोली बिटिया उस कौवे के हाथ पड़ जाती तो मेरी मौत बिगड़ जाती। चढ़ा दे बिटिया, हलुवा बनाने के लिए कढ़ाही चढ़ा दे।'

आंसुओं से आटा सान कर बेटी ने बाप को हलुवा खिलाया। खा पीकर बाप तो प्रगाढ़ निद्रा में सो गया। पर शेणी कौन से सुख से सोती ? सारी रात पवन द्वार खड़खड़ाते तो चौंक उठती कि वह विजानंद आया। पवन सनसनसनाता है तो लगता कि विजानन्द की वीणा रो रही है, और पलभर को झपकी आते ही स्वप्न में विजानंद से शिकवा करने लगती किं 'अरे दुर्जन। राह में इतनी देरी ? कौन मोहिनी तुझे मिल गयी थी ?'

सारी रात आँखों में कट गयी। प्रभात में उठकर शेणी ने अपनी पोटली वांधी, बाप के सामने हाथ जोड़ कर बोली 'बापू ! बहली जुतवा दो ?'

'क्यों बेटा ? कहां जाना है ?'

'हिमालय गलने !'

'अरे ! बिटिया' पागल हो गयी है। इस उमर में वैराग्य कहाँ से आ गया। सुन बेटी, तू भय न कर, अब अपना सब डर दूर हो गया। अब तेरे लिए मैं अच्छा घर ढूंढने निकलूंगा, ऐसे कहीं हिमालय गलने जाते हैं मेरे कलेजे की टुकड़ी ?'

'बापू' शेणी ने धरती कुरदते हुए कहा 'बापू, अब वह सब आशा त्याग दो, अब तो'–

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजाणंद नी वरमाल, बीजानी बाँधुं नहि,
चारण होय लखचार, बांधव कहीं बोलाविए ।११

उस दिन बाप ने जाना कि बेटी तो विजानंद के नाम की ही माला फेरती है। बापू ने बहुत समझाया। अंत में उसने निर्णय सुना दिया :

'बापू, वह आवे या न आवे, अब तो अवधि पूरी हुई। अब या तो मिलेंगे हिमालय की गोद में, नहीं तो अगले जनम में। अब मेरा रास्ता मत रोकना।'

गाँव के लोग हजार हजार बातें कह कर मनाने लगे कि 'बहन, रुक जा, अभी वह आयेगा।'

'आया बापा। अब आकर क्या मुँह दिखायेगा।' किसी ने कहा 'अरे गीगो। अता पता लगायें।'

सुन सुन कर शेणी ने कहा :

मृत्यु शुं दियो मानवी, जग जगनी जूज वी,
डाह्यप एवडी हती (ते) विजाणंद कां वाल्यो नहिं ।१२

अरे, मानवीओ। अब इस प्रकार मुझे हर कोई अलग अलग प्रकार की सीख किस मुँह से दे रहा है। इतना सयानापन था तो उस दिन ही क्यों विजानंद को लौटा नहीं लाये ?'

'अरे बाई, विजानंद से मैले कुचैले पागल पर तूं क्या मोह गयी है ? क्या और नहीं हैं ?'

'होंगे–

धोबी लूगड धोय रुपाला से राचुँ नहिं,
मर मेलडीओ होय, (तोय) वर वालो विजाणंदो । १३

धोबी के धुले सफेद कपड़े पहनने वाले किसी सुन्दर पुरुष पर मैं मोहित नहीं हो सकती, मैला कुचैला पागल है फिर भी वह विजानंद मुझे प्यारा है, और फिर–

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छालाना चाटेल, खोरां घी खवाय नँ,
मेयुनां मथेल, वालां घी विजाणंदनां ।१४

ओ मुझे सलाह देने वाले लोगो, बकरों के चाटे बिगड़े घी मैं खा न सकूंगी। मुझे तो विजानंद की भैंसों के दुग्ध से उतारा शुद्ध घी ही प्रिय है (व्यंगार्थ यह कि अन्य चारणों के मलिन स्नेह की मुझे जरूरत नहीं है। ।'

बहली में बैठकर अट्ठारह वर्ष की शेणी चल पड़ी। मार्ग में विभिन्न देशों की सीमा लांघती जाती है और वियोग में विलखती जाती है।

मारग कांठे मढी करुँ, वोरुँ जोगणना वेश
गोतुं देश विदेश, (कोई) वावड द्यो विजाणंदना १५

राह के किनारे मैं मड़ैया बनाकर, जोगन का वेश धारण कर बैठूंगी, देश-देशान्तर में मैं विजानंद की खोज करूँगी। अरे कोइ मुझे विजानंद का अता पता दो।

राह में भाल प्रदेश आया। गांव की बाजार से निकल कर शेणी विलाप करती जा रही है कि—ओ भाइयो —

(कोई) जंतरवालो जुवान, भालमां भूलो पड़्यो
(हुं) सगडे पाडुँ साद, (मने) वावड द्यो विजाणंदना ।१६

'हाँ, हाँ, बाई, थोड़े समय पूर्व ही ऐसा एक जवान यहाँ से गुजरा था, नवचंद्री भैंसों का समाचार पूछता था' इस प्रकार लोग पता देने लगे।

'देखने में कैसा था? जवाब मिलता है—

लाल सुरंगी धोती ए, केसर भीने वान,
हाल्यो जातो हाटडे, जंतरवालो जुवान ।१७

माथे पर लाल फेंटा था, सहज श्याम रंग था, अभी थोड़े समय पहले ही फलां बाजार से गुजर रहा था।

'किस ओर ठहरा है?

'नवचंदरी संभालता लगता है इधर ऊपर के देश में चला गया है, बाई।'

सुनते ही वहाँ से शेणी दौड़ती भागने लगती है। वह जा रहा है। वह चला जा रहा है। इस प्रकार लोग संकेत देते जाते वैसे वैसे तो जल्दी उसे पकड़ लेने के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वास्ते बड़े वेग से आगे बढ़ने को दौड़ती है पर वह कितना दौड़ सकती है ? फिर मार्ग न दिखे तो दौड़ा कैसे जाय ?

चालु तो चूंकुं नीकले, धोडये लाजी मरुँ
विजानंद वागड ऊतर्यो, ऊभी पोत्यु करुं ।१८

मैं चलती हूँ तो विलम्ब होने से पेट में शूल उठता है, दौड़ने में लज्जा आती है और विजानंद तो लगता है वागड़ (कच्छ से पूर्व का एक प्रदेश) देश में चला गया। लठिया पर अपनी कमली बाँध कर मैं वनों में नाचती फिरती हूँ। मानो आगे कुछ दूर पर चला जाता विजानंद मेरी यह निशानी देखकर रुक जायगा।

इस प्रकार आधी पागल बनी पथ नापती सती शेणी हिमालय के चरणों में जा पहुँची। आशा त्याग कर ऊपर चढ़ने लगी। तीर्थों को पार करती ऊँचे शिखरों के क्षेत्र में प्रविष्ट हो गई। ऋषि-मुनियों की धूनी आठों पहर धधक रही है—'अलख'-'अलख'। और ओंकार के अति घोर नाद शिखर शिखर से प्रतिध्वनित होते हैं। अप्सराएं स्नान करने आती हों ऐसे सरोवर लहरा रहे हैं। कुटी कुटी में भगवाधारी या भभूतधारी तपस्वी खुले गले से हाँक लगा रहे हैं। ऐसे जागते जीते हिमालय की हरी, लाल, पीली और गुलाबी ऐसीं अट्ठार तरह की वनस्पतियाँ पार करती, शेर चीते की दहाड़ें सुनती शेणी बिना थके चलती गयी। कुटिया छोड़ी, मानव छोड़े, वनस्पति छोड़ी, शेर चीते छोड़े और कहाँ आ पहुँची ?

जहाँ चतुर्दिक बरफ के शिखर हैं. जहाँ ऊपर से भी बर्फ गिरती है—नीचे जहाँ नीर भी जमकर हिम हो गया है, सूरज की उष्मा जहाँ झाँकती भी नहीं, ऐसे अतिघोर एकान्त में अट्ठारह बरस की कुंकुंमवर्णी चारण कन्या के चरण पड़े। वहाँ शेणी गलने बैठी।

बैठी, बहुत समय तक बैठी रही, पर शरीर गलता क्यों नहीं ? पाण्डवों की लौह सी कठोर काया यहाँ गल गयी, तब यह मक्खन सी कोमल, नन्हीं सी देह क्यों लौह सी अखण्ड बनी है ?

'हे पिता हिमालय। हे मोक्षपुरी के द्वारपाल। हे सती पार्वती के पिता, मैं भी तेरी बेटी बनकर तेरे अंक में सामने आयी हूँ। मैंने ऐसे कौन से पातक किये हैं कि मुझे अपने पाषाणों से भी ज्यादा कठोर हृदय की मानकर तूने त्याग दिया है ? इस बरफ की चिता में बैठी बैठी इतनी वेदना मैं कहाँ तक सहूँगी ? मुझे झट अपनी शरण में ले ले।'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जवाव में मानो हिमालय प्रत्युत्तर देने लगा : 'बेटी तूं बालकुमारी कहलाती है, अकेला यहाँ कोई गल नहीं सकता और तेरे अंतर में कोई और मानव बैठा है। जा बेटी, ब्याह कर के फिर दोनों जन साथ-साथ गलने आना।'

'अब क्या वापस लौटूंगी। लौटूं भी तो उसे कहाँ ख़ोजूंगी ? पथ भूला वह जंतर-वाला अब मुझे कहाँ मिलेगा ? पिता। राम ने जानकी की प्रतिमा बनाकर यज्ञ के समय पास में बैठाई थी, तो मैं भी अपने संकल्पों के स्वामी का पुतला बनाकर यहीं परिणय कर लेती हूँ।'

हेमाले शेणीनां हाड गली यांनवगाल्ये,
(पछी) कासनां पूतल करे, पराणे परणी ऊतर्या।१६

'कास' अर्थात दर्भ का पुतला बनाकर शेणी ने उसमें प्रियतम विजानंद का संकल्प स्थापित किया। पुतले को अपनी गोद में लेकर अग्निकुण्ड से उस शिखर की चार बार प्रदिक्षणा की और फिर पुतले को गोद में ले कर शेणी बर्फ में बैठ गयी। आग लगी हो इस प्रकार अंग गलने लगे। पैर से रक्त सूख गया, अभी कुछ समय पूर्व ही पैरों से कुंकुमवर्ण काँति फूटती थी, वह पैर अब श्याम हो गये, पैरों से प्राण चले गये। देखते देखते ही घुटने तक की हड्डियाँ भी गलकर पानी हो गयीं। तभी तो दूर दूर के शिखरों में से "शेणी ! शेणी ! शेणी !" ऐसी पुकार सुनाई देने लगी।

'अरे, मेरा नाम लेकर कौन पुकारता है ?'

पुनः आवाज गहरी घाटियों में खो गयी।

'छीः अरे जीव, छीः। अभी भी उसी की झनकार। अरे अभागे जीव, अब चीथरे न फाड़'

तभी तो पुनः 'शेणी ! शेणी ! शेणी।' की पुकार पास सुनाई देने लगी।

'शेणी ! शेणी ! शेणी !' ध्वनि बराबर पास आती गयी। और सामने के शिखर प्रतिध्वनि देने लगे 'शेणी ! शेणी ! शेणी !' कमली समेट कर शेणी ने बरफ की कगारों से प्रत्युत्तर दिया—

'चले आव। चले आव। चले आव।'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आवाज के सहारे सहारे एक आदमी दौड़ा आता है, पत्थरों से ठोकर खाता, गिरता पड़ता, लहूलुहान होता, और फिर भी पुनः उठकर बदन झारकर दौड़ता, विश्वास भरा चला आता है 'मुँह में शेणी ! शेणी !' शेणी ! छोड़कर अन्य शब्द नहीं हैं।

बर्फ की ऊँची दीवारों वाली उन घाटियों से, मंद मंद प्रकाश में जैसे कोई दाल के दो दाने पड़े हों ? ऐसे दोनों ने एक दूसरे को देखा–जंतरवाला जवान नीचे कगार पर, और हाड़ गलती शेणी ऊपर बरफ के कुण्ड में।

क्षीण स्वर में शेणी बोली, 'चारण । आ गये ?' 'पहुँच गया हूँ मेरी प्राण । केवल एक दिन की देर हुई । पर तेरे पिता को पूरी एक सौ एक नवचंद्रियाँ गिन दी हैं। शेणी, अब चल, चल, ओझत के तीर पर घर बनायें।'

'अब तो वैतरणी के तट पर ही घर बनायेंगे, प्रियतम।'

'शेणी ! ओ शेणी ! क्या हुआ ?'

ऊपर से प्रतिध्वनि कहती है :

> हाडां हेमाले, गलियां जे गूडा लगे,
> विजाणंद वले घणमूला जाने घरे। २०

हे बड़मोले विजानंद । मेरी हड्डियाँ घुटने घुटने तक तो इस हिमालय में गल गयी हैं. निर्जीव हो गयी हैं, अब तो अनमोल प्रियतम । तूँ वापस लौट कर घर चला जा।'

'पैर पिघल गये ? फिकर नहीं !

> वल वल वेददानी, (तू) पांगली हो तोय पालशु,
> कांधे कावड करी, (तने) जात्रा बधी जुवारशु । २१

'खड़ी हो जा, वापस चल ओ वेद्दा की बेटी, तू पंगु हो गई होगी तो भी मैं तुझे काँवर में बिठा, अपने कंधे पर उठा अड़सठो तीरथ की यात्रा कराऊँगा। वापस चल, ओ प्राणाधार। वापल चल।'

'नही विजानंद । अब वापस नहीं लौटूंगी—

> वलु रहूं तो वांझणी, मूवा न पामुं आग,
> आलुको अवतार, वणसाड्यो विजाणंदा । २२

'अब देख मैं वापस लौटूंगी तो मेरा तेरा तन का सम्बन्ध नहीं हो सकेगा और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुत्र विना मरने पर कौन अग्नि देगा ? अतः यह जन्म बिगड़ जायगा, अतएव अब तो यह एक जन्म बिगड़ा इतना ही बस है ।'

'वापस लौट चल । वापस लौट चल ! वापस लौट चल !' ऐसी पुकार उठी ।

'अब मैं तेरे काम की नहीं रही विजानंद । क्योंकि अब तो—

गलियुं अरधूं गात्र, अरधामा अरधूं रियुं,
हवे मसलता हाथ, विजाणंद पाछा वलो । २३

'हे विजानंद, अब तो मेरा पौन भाग शरीर गल गया है । अब तूं व्यर्थ मेहनत न कर और वापस लौट जा ।'

पुनः उस धुंधसे घिरे कगार से क्षीण ध्वनि आई 'परन्तु चारण । अन्तिम एक इच्छा रह गई है, मरते मरते एक बार तेरा जंतर सुनना है ।

विजाणंद जंतर वगाड, हेमालो हलकुं दिये,
मोह्या माछलमार, माछलियुं टोले वले । २४

'एक बार बजा दे !'

कंधे से वीन उतार कर चारण ने तार पर अंगुली फेरी । मंद प्रकाश में जंतर के सुर रोने लगे, अंधेरा काप उठा । हिमालय पर्वत हुंकारी भरने लगा । दूर दूर नीचे सरोवर में जाल फेंकते मछुआरे थम गये और मछलियाँ वह गीत सुनने झुण्ड की झुण्ड पानी के ऊपर अपने चमकते मुँह निकाले खड़ी रहीं ।

जंतर वजता है और गीत के तालों पर बरफ में से 'राम ! राम ! राम ! राम !' ऐसा जप सुन पड़ता है । जप चलता रहा, जंतर बजता रहा । एक ओर से राम नाम के स्वर धीमे पड़ने लगे, दूसरी ओर जंतर के तार अधिकाधिक जोर से झनझनाने लगे । आखिरकार राम नाम के उच्चार रुक गये और कगार पर एक धमाका हुआ । अचेत जंत्री के हाथ से जंतर नीचे गिरा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जंतर भांग्युं जड़ पड़ी, त्रूटयो मोभी त्राग,
वेद्दानी शेणी हल गइ, जंत्री न काढे राग ।२५

जंतर गिर गया, अंदर चीर पड़ गयी, उसका मुख्य तार भी टूट गया, वेद्दाचारण की पुत्री शेणी के प्राण निकल चले, अतः अब वीणा वजाने वाला भी सुर नहीं निकाल रहा, और—

भुखे खाधुं भात, पेट भरी पामर जी
शेणी जेवो संगाथ, मेलीने विजाणंद मल्यो ।२६

शेणी जैसी संगिनी को हिमालय में बिदाकर विजाणंद चारण खाली हाथ वापस लौटा। और जब तक जीता रहा तब तक पामर मानव की भांति अपने भूखे पेट को भरता रहा। +

+ कितने ही चारण ऐसा कहते हैं कि शेणी द्वारा विजानंद से प्रेम करने की बात झूठी है। शेणी तो योगमाया का अवतार थी और उसने तो बचपन में ही अपने पिता से कह दिया था कि मेरा सम्बन्ध करियेगा ही नहीं, अतः वह तो विजानंद से बचने के लिए ही हिमालय की ओर भाग गयी।

मैंने जो इस कथा में दोनों पक्ष में प्रेम होने की वात स्वीकार की है, वह इन प्राचीन 'दूहों' के आधार पर। विवाह न करने के निश्चय के बावजूद शेणी के मन में विजानंद के लिए प्रीत उपजी, यह तो उल्टे उसकी प्रीति की उत्कृष्टता सिद्ध करता है। और ऐसे परम पवित्र प्रेमावेश से तो उसका सतीत्व या जोगमायात्व उल्टा और अधिक उज्ज्वल बनता है। अन्य अनेक चारण सतियाँ भी विवाहित थीं ही।

भाँचलिया चारणों को आज भी भरवाडो के विवाह के समय कोरी (लगभग १।४ रुपया) लाग (कर) मिलता है। वे भरवाड से ही मांगते हैं। लोक कथा यह है कि हिमालय में विजानंद उसके साथ मरने नहीं बैठ सका अतः शेणो ने शाप दिया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि 'जा, जीवन भर जलते रहना।' दूसरी लोक कथा यह है कि बाई के साथ हिमालय जाने में खीमड नामका रावल था। वह भी वापस लौट गया। इसलिये शेणी ने उससे कहा 'अरे ओ भुलक्कड' और तब से सभी रावल भुलक्कड़ होते हैं, और उनके विवाह में 'शेणी-खीमड की गेहुं की घुघनी' बाँटने का रिवाज है।

[सौराष्ट्रनी रसधार-भाग पाँचवां
ले० झवेरचंद मेघाणी-संस्करण ७ वां (१९५६)
'बालापणनी प्रीत' पृ० १३०-१४९
(गुर्जर ग्रंथ रत्न कार्यालय,
गांधी रस्तो, अहमदावाद)]
अनु०-भानु मेहता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शेणी विजानंद रंगमंच पर

संभवतः सन् १९५० की बात है ! पूण्य स्मरण ओझा जी काशी आये थे। साहित्य में मेरी रुचि देखकर उन्होंने अपने काव्य 'शेणी विजाणंद' का अनुवाद करने का प्रस्ताव किया और कवि न होते हुए भी मैंने यह दुःसाहस करने का निश्चय किया ! अनुवाद तैयार होने पर अपने वरिष्ठ मित्र श्री मोहन लाल गुप्त 'भैया जी बनारसी' को दिखलाया। वे इसे पढ़कर अत्यन्त प्रभावित हुए और इसमें अनेक संशोधन कर नवम्बर-दिसम्बर १९५१ में चार खण्डों में इसे साप्ताहिक *आज* में प्रकाशित कर दिया। पुनः इसमें बड़े भाई श्री अशोक जी और माननीय श्री काशीनाथ उपाध्याय भ्रमर वेधड़क बनारसी' ने कुछ संशोधन किये। ओझा जी अनुवाद पढ़कर बहुत प्रसन्न हुए। एक कार्य हो गया, बात आयी गयी हो गयी।

सन् १९५८ में श्री नागरी नाटक मण्डली की स्वर्ण जयन्ती में मण्डली ने 'गोपी विरह' और 'चडिया नुं स्वप्न' दो संगीत-नृत्य नाटक प्रस्तुत किये तो इस दिशा में कुछ नयी चीज प्रस्तुत करने की धुन लगी। सहसा ही विचार आया कि 'शेणी विजानंद' को मंच पर लाया जाय तो कैसा हो ? कैसे ? क्या इस कथा पर नाटक लिखा जाय ? तभी एक विचित्र बात मन में आई कि नाटक को दृश्य काव्य कहते हैं अतः काव्य को ही क्यों न मंच पर 'दृश्य' बनाया जाय ! वाल्ट डिसने (प्रसिद्ध कार्टून फिल्मों का शिल्पी) और चाईकॉस्की (संगीतज्ञ) ने मिलकर एक अद्‌भुत फिल्म बनाई थी 'फैंटेसिया' ! इस फिल्म में संगीत को साकार रूप देने की चेष्ट की गई थी, उनका कहना था कि संगीत तीन प्रकार का होता है– पहला अव्यक्त जिसे सुनते समय मन पटल पर कुछ रंग कुछ रेखाएं कौंधती है पर कोई रूप-आकार नहीं बनता; दूसरा वह जिसमें संगीत सुनते समय कुछ अनुमान अनुभव जागृत होते हैं जैसे बसंत राग सुनते समय मन के पर्दे पर बसंत ऋतु का समूचा चित्र अंकित हो जाता है; तीसरा कथा-संगीत होता है जिसे श्रवण करते समय श्रोता के मन पटल पर वह कथा साकार होती रहती है। तो यह 'फैंटेसिया' मेरे मन में थी, अतः सोचा अगर शेणी विजानंद काव्य का पाठ करे और श्रोता के मन में रुपायित होने वाले बिंबों को मंच पर रक्खें तो क्या एक नयी बात नहीं होगी ? इसका क्या नाम होगा ? नृत्य नाट्य, संगीत नाट्य, बैले, ऑपेरा ! इसका निर्णय नहीं कर सका, पर समझ में आया कि काव्य को दृश्य-मान कर रहा हूँ अतः इसे 'दृश्य काव्य' ही क्यों न कहूँ ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यही कहा भी ! प्रबुद्ध मित्रों ने उपहास किया कि तुम इतने बड़े मूर्ख हो कि इतना भी नहीं जानते कि नाटक को ही दृश्य काव्य कहते हैं। वे प्रयोग में निहित सूक्ष्म भेद को स्वीकारने को तैयार नहीं है। कभी काव्य में नाटक लिखा गया था तब सामान्य काव्य से भेद करने को उसे 'दृश्य काव्य' कहा गया, फिर नाटक पद्य छोड़कर गद्य बन गया मगर 'काव्य' की परिभाषा नहीं छोड़ सका ! आज पुनः उसी ओर लौट कर विशुद्ध काव्य को दृश्यमान बनाने की चेष्टा की, अतः उसे 'दृश्य काव्य' कहने का साहस किया अर्थ विशेष में, इसे स्वीकार करना विद्वतजन के हाथ है।

प्रयास आरभ हुआ ! काव्य का नाट्य रूपानन्तर नहीं करना था उसे ज्यों का त्यों मंच पर लाना था। तय किया कि कुछ लोग नेपथ्य से काव्य पाठ करेंगे। एक सर्ग- एक दृश्य बन जायगा। मंच पर पृष्ठ भूमि-साज सज्जा की कुछ कल्पना की, पात्रों की योजना निश्चित की ! संगीत भी आवश्यक था ! पहला प्रयास मंचस्थ हुआ सन् १९६० में ! संगीत निदेशक और काव्य पाठ का नेतृत्व किया श्री बालकृष्ण विश्वनाथ फड़के ने, गीत की धुनें तैयार की सुप्रसिद्ध संगीत निदेशक श्री नीनू मजमुदार (बम्बई) ने, संगीत और नृत्य निर्माण में श्री फड़के श्री नंद किशोर मिश्र और श्री जेडी सिडनी तथा श्री रघुनाथ प्रसन्न ने सहयोग किया। फलस्वरुप रूप ऐसा निखरा कि काव्य पाठ विभिन्न स्वरों में हो और काव्य में वर्णित पर्यावरण के अनुरुप राग रागिनी में निबद्ध हो, तथा गीत जैसा नीनू भाई ने उन्हें समयानुकूल लोकधुनों में बांध दिया था वैसे ही हों। स्थान स्थान पर ध्वनि प्रभाव दिये गये ! कलाकारों ने अपना कार्य सम्भाला और नाटक प्रस्तुत हुआ श्री नागरी नाटक मण्डली के खुले मंच पर ! दर्शकों ने इसे पसन्द किया ! फिर भी इसमें बहुत सी खामियाँ थी।

दूसरा प्रयास १९६२ में हुआ ! इस बार हमें डा० भालचन्द्र विष्णु पाटेकर का सहयोग मिला। संगीत में प्रौढ़ता आई। पाटेकर जी ने विजानंद को स्वर दिया। अंतिम दृश्य में महा कवि कालिदास कृत हिमालय की स्तुति ने दृश्य को नया रूप दिया। चौपाल के दृश्य में विजानंद के गीतों को और मुखर बनाने के लिए बालिकाओं के नृत्य रक्खे गये। यह प्रयास कैसा रहा, यह सुप्रसिद्ध साहित्यकार और कवि रुद्रकाशिकेय के उद्गार से स्पष्ट है। इसके बाद पुनः दस वर्ष तक हम श्री नागरी नाटक मण्डली के भवन निर्माण में व्यस्त हो गये। अपने प्रस्तुतिकरण से संतुष्ट नहीं थे, अवसर की तलाश थी।

श्री नागरी नाटक मण्डली का मुरारी लाल मेहता प्रेक्षागृह तैयार हो गया। और २ जनवरी १९७२ को उसका उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर के लिए हमने पुनः शेणी विजानंद चुना। इस बार काव्य पाठ का नेतृत्व डा० पाटेकर को दिया गया। प्रकाश योजना-दृश्य संयोजना में सुधार किये गये। अभिनय के लिए दो सुप्रसिद्ध कथक नृत्य कलाकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कु० अन्नपूर्णा तथा श्री राम कृष्ण का सहयोग लिया गया। नृत्य निदेशन में श्री सी. वी. चन्द्र शेखर जी का योगदान मिला, वाद्यवृंद में कुशल संगीतज्ञ जुटाये गये। तीन दिन तक काव्य संगीत की रसधार वही। काव्य में नया निखार था क्यों कि इस बार उसे श्री शिव प्रसाद मिश्र 'रुद्र काशिकेय' ने बड़े प्रेम और मनोयोग से सुधारा था। प्रस्तुत रूप उन्हीं की कृपा का सुफल है। दुर्भाग्यवश प्रस्तुतिकरण के समय आचार्य दिवंगत हो गये थे, अन्यथा वे इसे देखकर निश्चय ही वहुत प्रसन्न होते। एक और दुर्भाग्य हुआ कि उद्घाटन के समय हमारे प्रमुख दाता और संरक्षक श्री गिरधारी लाल जी मेहता रुग्ण हो गये और उपस्थित नहीं हो सके किंतु कलकत्ते में उन्होंने नाटक के चित्र देखे और टेप सुने, अपने प्रतिनिधियों (श्री शंकर लाल मेहता) से प्रशंसा भी सुनी अतः इसे देखने की उत्सुकता प्रगट की।

१७-१८ मार्च १९७२ को श्री मेहता जी के स्वागत में नाटक प्रस्तुत किया गया। इस बार प्रकाश-दृश्य व्यंजना में सुधार के लिए हमने कलकत्ता के दृश्य शिल्पी श्री सुरेश दत्त और प्रकाश नियोजन के अनूठे कलाकार श्री तापस सेन का सहयोग लिया। एक बार पुनः काव्य संगीत की रसधार प्रवाहित हुई। श्री तापससेन की प्रकाश व्यंजना ने उसमें अनूठा जादू भर दिया और प्रशंसा-आलोचना के बीच एक और प्रयास शेष हुआ।

यह है 'शेणी विजानंद' के नौ प्रस्तुतिकरणों की कथा। अभी भी हम संतुष्ट नहीं हैं— अभी बहुत कमी है, ऐसा प्रतीत होता है इस कृति में अभी वहुत संभावना है, बहुत सी रूप माधुरी छिपी पड़ी है जिसे हम प्रगट नहीं कर पाये हैं। शायद फिर कभी यदि साधन और अवसर का सुयोग हुआ, तो एक और प्रयास होगा जो शायद हमें सफलता की एक और सीढ़ी चढ़ा दे, जो शायद हमें उसे अलख की एक झलक लखा दे। आज जब यह कृति प्रकाशित हो रही है, अंतिम दा मंच प्रस्तुतियों की *बाळा-जोगन* की याद सभी को कचोटेगी। नृत्यांगना अन्नपूर्णा मिश्रा अपनी अनूठी और समर्पित भूमिका प्रस्तुत करने के बाद गतवर्ष (१९७६) अल्पायु में दिवंगत हो गयी। अन्नपूर्णा ने मुझसे कहा था जब तक मैं जीवित हूँ कोई और शेणी की भूमिका नहीं करेगा। आज केवल उसकी याद और चित्र बच रहे हैं। यदि वह हमारे बीच वर्तमान होती तो पुस्तक देखकर सबसे अधिक प्रसन्न होती, शायद अब नटराज के लोक में बैठी उसकी नृत्यात्मा अवश्य ही इसे देखकर सुखी होगी। यह कृति स्व० नृत्यांगना अन्नपूर्णा की स्मृति को अर्पित है।

—*भानु मेहता*

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'शेणी विजानंद' मंच पर

यह काव्य रूपक प्रथम बार २७ तथा २८ दिसम्बर १९६० को अभिनीत हुआ ! पुनः १९६२ में पहली तथा दूसरी दिसम्बर को भारत चीन युद्ध के समय राष्ट्रीय सुरक्षाकोश के लिए धन सग्रहार्थ खेला गया। श्री नागरी नाटक मण्डली के सुसज्जित नवनिर्मित श्री मुरारी लाल मेहता स्मारक प्रेक्षागृह के उद्‌घाटन के अवसर पर २, ३, ४, जनवरी १९७२ को इसे प्रस्तुत किया गया और पुनः श्री गिरधारी लाल मेहता के स्वागतार्थ १७ और १९ मार्च १९७२ को यह पुनः मंचित हुआ। इसमें भाग लेने वाले कलाकारों के नाम नीचे दिये जा रहे हैं।

कलाकार	१९६०	१९६२	१९७२ जनवरी	१९७२ मार्च
शेणी	कु० रत्ना दत्ता	कु० रत्ना दत्ता	कु० अन्नपूर्णा मिश्रा	कु० अन्नपूर्णा मिश्रा
विजानंद	कु० बंसरी मेढ़	कु० बंसरी मेढ़	श्री रामकृष्ण	श्री रामकृष्ण
वेद्दा	श्री विजय राय	श्री श्रीराम नागर	श्री श्रीराम नागर	श्री श्रीराम नागर
मुखिया	श्री रमेशकृष्णनागर	श्री रमेशकृष्णनागर	श्री रमेशकृष्णनागर श्री नंदलाल मोहिले श्री रामकिशोर जेटली	श्री रमेशकृष्णनागर श्री नंदलाल मोहिले श्री रामकिशोर जेटली
सखियाँ और नृत्यांगनाएं	कु० मंजरी मेढ़ कु० मधुर सेठ कु० आशा मेहरा	कु० इंदिरा खन्ना कु० अंजली त्रिपाठी कु० मधु सेठ कु० आशा मेहरा कु० ज्योती नागर कु० कुमकुम दवे कु० विशालाक्षी शापुरी कु० कुमकुम मजमुदार	कु० माला मिश्रा कु० सुधा श्रीवास्तव कु० अर्चना मिश्रा कु० अंजना नागर कु० कल्पना मजमुदार	कु० माला मिश्रा कु० सुधा श्रीवास्तव कु० अर्चना मिश्रा कु० मधु पाटेकर कु० रीनी सिडनी कु० विभा अग्रवाल कु० कल्पना मजमुदार
ग्रामवासी तथा नर्तक	श्री रविन्द्र जेटली श्री राजदीप	श्री रविन्द्र जेटली श्री विक्रम खन्ना	श्री बल्देवराम दिक्षित श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव	श्री बल्देवराम दिक्षित श्री कमलेश खन्ना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री गुलाब सिंह	श्री गुलाब सिंह	श्री श्यामकृष्ण नागर	श्री जयश्रीकृष्ण नागर
श्री श्रीराम नागर	श्री प्रेम वर्मा	श्री बनारसी दास	श्री बनारसी दास
श्री काशीनाथ दिगन	श्री गणेश प्रसाद सिंह	श्री गणेश सिंह	श्री गणेश सिंह
श्री नंदलाल मोहिले	श्री नंदलाल मोहिले	श्री वीरेन्द्र कुमार दिक्षित	श्री वीरेन्द्र कुमार दिक्षित
श्री हरिशंकर शर्मा	श्री हरिशंकर शर्मा	श्री प्रभाकर दिक्षित	श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव
श्री जीवन लाल सरीन	श्री पन्नालाल पांडे		
श्री राम मुरारी	श्री प्रेमचंद मेहरा	श्री अशोक भास्कर	श्री अशोक भास्कर
श्री महादेव प्रसाद मेहरोत्रा	श्री रामकिशोर जेटली	श्री गोविन्द प्रसाद	श्री गोविन्द प्रसाद
श्री डालूराम	श्री डालूराम	श्री सी. वी. चन्द्रशेखर	
	डा.दिनेश मजुमदार	डा. दिनेश मजुमदार	डा. दिनेश मजुमदार

काव्यपाठ

१. श्री बालकृष्ण विश्वनाथ फड़के	श्री बालकृष्ण विश्वनाथ फड़के	
२. श्री अवनीन्द्र कुमार मिश्र	डा. भालचन्द्र विष्णु पाटेकर	
३. श्रीमती सुहासिनी मेहता	श्री धर्मनाथ मिश्र	
४. सुश्री सुशीला मेहता	सुश्री शकुंतला सिडनी	श्रीमती नमिता श्रीवास्तव
५. —	श्री गोपेन्द्र त्रिवेदी	सुश्री शोभा पर्वतकर
६. श्री भानु मेहता	श्री भानु मेहता	

पार्श्व स्वर

शेणी गीत	श्रीमती आशा वरुणजी	डा. मनोरमा वर्मा	डा. मनोरमा जौहरी	श्रीमती आशा वरुणजी
संलाप	डा. कमलीनी मेहता	डा. कमलीनी मेहता	सुश्री शीला मेहता	सुश्री शीला मेहता
विजानंद गीत	डा. दिनेश मजुमदार	डा. भा. वि. पाटेकर	डा. संदीप कुमार सेन	डा. सेन
वेद्दा	श्री विजय राय	डा. दिनेश मजुमदार	श्री राजदीप	श्री राजेश्वर आचार्य

संगीत

वाद्यवृंद				
तबला	श्री नंदकिशोर मिश्र		श्री हरिनारायण त्रिक्खे	
हारमोनियम	श्री जालपाप्रसाद मिश्र	डा. भालचन्द्र विष्णु पाटेकर		श्री धर्मनाथ मिश्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरोद	श्री रघुनाथ प्रसन्न		श्री राजेश मैत्र	
वार्दालन	श्री जॉन डेविड सिडनी		श्री पूर्णेन्दु भट्टाचार्य श्री अवनिन्द्र कुमार मिश्र	
सारंगी	—		श्री नारायण मिश्र	
सितार	श्री अभय पदो मिश्र	श्री टी. एन. नागर श्री अ० प० मित्र	श्री शिवनाथ मिश्र	
दिलरुबा	श्री निरंजन बैनर्जी			
मैंडोलिन	श्री शशीकुमार सिडनी			
गिटार			श्री शिवनाथ भट्टाचार्य	श्री अशोक कुमार बैनर्जी
शहनाई			श्री खादिम अली	
बांसुरी	श्री रघुनाथ प्रसन्न		श्री खादिम अली	श्री मोहन लाल
क्लारियोनेट	श्री वफाती			
जलतरंग	श्री प्रसन्न	श्री गोपेन्द्र त्रिवेदी		श्री शिवाजी केवले
मृदंग			श्री ईश्वरलाल मिश्र	
डफ	श्री डालूराम	श्री डालूराम	श्री गोविन्द प्रसाद	श्री गोविन्द प्रसाद
नृत्य निदेशन	श्री नंदकिशोर मिश्र		श्री सी. वी. चंद्रशेखर श्रीमती प्रवीण कृष्ण	
संगीत रचना	श्री नीनू मजमुदार	—		
संगीत निदेशन	डा. बा. वि. फड़के	श्री मा. वि. पाटेकर	—	डा भा. वि. पाटेकर श्री धर्मनाथ मिश्र
प्रकाश योजना	श्री राजकुमार	श्री राजकुमार	श्री गुरुचरण चैटर्जी श्री आनंद मेढ़ श्री संजय मेहता	श्री तापस सेन श्री कमल दत्त श्री सुरेश विश्वास श्री सन्तु मुखर्जी
दृश्यबंध	श्री राजकुमार	श्री राजकुमार	श्री श्रीनाथ दास डा. विजय श्रीवास्तव	डा. विजय श्रीवास्तव तथा श्री सुरेश दत्त
निदेशक	डा० भानुशंकर मेहता			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैंने अभूतपूर्व नाट्य प्रयोग देखा

— श्री 'रुद्र' काशिकेय

'गिरिकी सब हरियाली ले मोरे राम बनाई पुतरी' गीत सुनने के बीस घण्टों बाद भी अब तक कानों में गूंज रहा है और उक्त गीत में वर्णित गिरिकी हरियाली से निर्मित जिस पुतली का नृत्य रंगमंच पर दिखाया गया उसके कारण मन इस समय भी हरा-भरा होकर लहलहा रहा है। एक विचित्र नाटक बेसुधी का आलम जारी है और इसी बेसुधी के आलम में संकोचहीन और निरभिमान होकर स्वीकार करता हूँ कि गत रात (२८ दिसम्बर को) मण्डली का जो नाट्य प्रयोग मैंने देखा, वह मेरे जीवन में अभूतपूर्व था।

गत चालीस वर्षों से मैंने पेशेवर और शौकिया नाट्य समाजों के सैकड़ों, और अतिशयोक्ति न मानी जाय तो हजारों नाटक देखे हैं, स्वयं भी अनेक नाट्य प्रयोग किये हैं परन्तु इस अभिनव और अभूतपूर्व प्रयोग ने मुझे अभिभूत कर लिया है और इस लिए कहता हूँ कि ऐसा सुरुचिपूर्ण निर्दोष और सर्वांग सुन्दर प्रयोग मैंने कभी नहीं देखा जिसमें काव्य, संगीत और नृत्य की त्रिवेणी इस तरह बहाई गयी हो और उस त्रिवेणी पर नाट्य का अचल वट वृक्ष खड़ा करके उसके पत्ते पत्ते पर दर्शकों के मन को बालकृष्ण बनाकर झुला दिया गया हो। गत रात उक्त प्रयोग जिसे मैं 'सजीव चलचित्र' प्रयोग कहता हूँ देख रहा था और मन ही मन यह सोच रहा था कि हिन्दी के वयोवृद्ध आचार्य शिवपूजन सहाय को यदि यह प्रयोग दिखाया जा सकता तो हिन्दी रंगमंच सम्बन्धी उनका जीवन व्यापी क्षोभ मिट जाता और उन्हें यह देखकर परम सन्तोष होता कि नागरी नाटक मण्डली ने कितनी उन्नति कर ली है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनशक्ति (बम्बई) (दिसम्बर १०-१९६२)

'गुजरात की पुरानी पीढ़ी के सिद्धहस्त साहित्यकार स्व० उच्छरंग राय के० ओझा लिखित अपद्यागद्य काव्य नाटक 'शेणी विजानंद' का हिन्दी रुपान्तर दिसम्बर की पहली दूसरी तारीख को बनारस में अभिनीत हुआ था। शेणी विजानंद का हिंदी रूपान्तर बनारस के सुविख्यात लेखक डा० भानु मेहता ने किया था। इस नाट्य प्रयोग के प्रदर्शन के समय जनशक्ति के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

उत्तर प्रदेश में प्रथम बार ही इस प्रकार का गुजराती अपद्यगद्य काव्य तख्ते पर प्रस्तुत हुआ था और उसमें शेणी की भूमिका में कु० रत्ना दत्ता और विजानंद के रूप में कु० बंसरी मेढ़ ने चिरस्मरणीय अभिनय किया था। शेणी के पिता वेद्दा की भूमिका को श्री राम नागर ने जीवित बनाया।

इस काव्य नाटक की विशेषता यह थी कि समूचे अपद्यागद्य को बनारस के प्राध्यापक श्री फड़के ने शास्त्रीय रागों में मढ़ दिया था और अपूर्ण साधनों के बावजूद श्री राजकुमार ने अपने अनोखे प्रकाश आयोजन से उसका श्रृंगार किया था।

काव्य नाटक का प्रस्तुतिकरण बहुत ही अच्छा था परन्तु समूह दृश्यों के आयोजन में दिग्दर्शक चूक गये ऐसा प्रतीत होता था। इसके बावजूद बिन-गुजरातियों द्वारा प्रस्तुत गुजराती प्रणय कथा के चार प्रयोग हो चुके हैं यही इसकी सफलता की कसौटी है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"शेणी-विजानन्द" नये चमत्कार के साथ अभिनीत

नागरी नाटक मण्डली के रंगमंच पर शुक्रवार और रविवार को नये चमत्कारों के साथ गुजराती "दृश्य काव्य" शेणी विजानंद की प्रस्तुति ने काशी के रंगमंच के इतिहास में नये अध्याय का आरंभ किया। नाटक नहीं बल्कि मंच पर कविता की मूर्तरूप में अवतारण का यह अभिनव प्रयोग था, जिसकी सफलता ने असंदिग्ध रूप से प्रमाणित कर दिया कि समुचित साधन सुलभ होने पर यह प्राचीन नगरी नाट्य कला के क्षेत्र में सहज ही वह गौरव प्राप्त कर सकती है जो बंगाल की राजधानी कलकत्ता और महाराष्ट्र की राजधानी बम्बई को प्राप्त है।

नोबुल पुरस्कार विजेता फ्रेंच साहित्यकार रोम्यां रोलां द्वारा बहुप्रशंसित और गुजराती से स्वयं मूल लेखक उच्छरंग राय केशव राय ओझा द्वारा अंग्रेजी में अनुदित यह दृश्य काव्य इसके पूर्व भी सात बार नागरी नाटक मण्डली के मंच पर प्रस्तुत किया जा चुका है, किन्तु "भुवनशोम" फिल्म की तरह दर्शक पर गुजराती जनजीवन की अमिट छाप छोड़ने वाले दृश्य काव्य के इस बार के प्रदर्शन की सफलता ने पिछले सारे कीर्तिमान तोड़ दिये। यह चमत्कार प्रकाश के अद्वितीय जादूगर श्री तापस सेन (कलकत्ता) का था, जिन्होंने मंचपर चलते हुए बादल और हिमालय के हिमखण्डों में गलती हुई शेणी तथा विजानंद का सजीव प्रदर्शन करके दर्शक को चकित कर दिया। शीरी-फरहाद, लैला-मजनू, रोम्यो-जुलियट, हीर-राँझा, शशि पुन्नो आदि विख्यात प्रेम गाथाओं से शेणी विजानंद नाटिका इस अर्थ में बहुत ऊँची भी है कि इसमें प्रदर्शित प्रेम आध्यात्मक बन गया है। इसे देखकर दर्शक के मन में वासना की प्रवृत्ति नहीं उठती बल्कि उस मूर्तरूप में आध्यात्म के दर्शन होते हैं। हिमालय में जाकर शेणी और फिर उसके साथ ही विजानंद का गल जाना आज की नाटिका को ऊँचाई की चरम विन्दु पर पहुँचा देता है।

शुक्रवार को आयोजित मंच अभिनय में पार्श्व संगीत और ध्वनि संयोजन कुछ त्रुटिपूर्ण था। उस दिन केवल प्रकाश का चमत्कार देखने में आया। साथ ही विजानंद का अभिनय भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपेक्षाकृत साधारण था, लगता था जैसा वह अभिनेता न होकर नर्तक मात्र है, किन्तु रविवार की रात का प्रदर्शन अद्‌भुत था। इस बार प्रकाश में अनेक परिवर्तन किये गये। श्री तापस सेन ने काशी के रंगमंच पर प्रथम बार वह कौशल दिखाया जिसे दर्शक जल्दी भूल न सकेंगे। वस्तुतः प्रकाश के चमत्कार ने ही शेणी विजानंद जैसे प्रयोग को प्रथम श्रेणी के दृश्य काव्य के रूप में परिणत कर दिया। दृश्य पट के परिवर्तन भी बहुत मनमोहक थे, विशेष रूप से गुजराती वेष-भूषा।

विख्यात लोककथा "वाला जोगन" पर आधारित "शेणी विजानंद" के इतने सुन्दर हिन्दी अनुवाद और निदेशन के लिए डाक्टर भानुशंकर मेहता और उनके ४ दर्जन से अधिक कलाकार विशेष कर श्री रामकृष्ण (विजानंद), कुमारी अन्नपूर्णा मिश्र (शेणी) और श्री श्रीराम नागर (शेणी के पिता). इस सफलता के लिए बधाई के पात्र हैं।

—दर्शक (जनवार्ता में)

संगीत-नृत्य और प्रकाश की त्रिवेणी
शेणी-विजानंद का सफल प्रदर्शन

गुजराती पृष्ठभूमि पर प्रेम गाथा 'वाला जोगन' के कथानक पर आधारित इस हिन्दी रूपान्तर में शेणी की भूमिका में कत्थक नृत्यांगना कु० अन्नपूर्णा एवं विजानंद की भूमिका में उसके भाई नर्तक रामकृष्ण ने सजीव भूमिका निभाई। वैसे सभी कलाकारों के अभिनय पूरे मंजे हुए तथा प्रशंसनीय रहे।

रंगमंच पर सबसे मनोहारी कार्य प्रकाश व्यवस्था का चमत्कार था जिसके द्वारा पर्दे पर मेघों के आवागमन का दृश्य दिखाया गया था।

(गांडीव, वाराणसी)

★

शेणी विजानंद—एक कलात्मक उपलब्धि

गुजराती लोक कथा 'वाला जोगन' पर आधारित स्व० उच्छरंग राय केशव राय ओझा विरचित काव्य का श्री भानु मेहता द्वारा अनूदित रूप में नाट्य प्रस्तुतिकरण— 'शेणी-विजानंद' विगत १७ एवं १९ मार्च को श्री मुरारी लाल मेहता द्वारा नवनिर्मित स्थानीय प्रेक्षागृह के रंगमंच पर वाराणसी की नाट्य संस्था नागरी नाटक मण्डली द्वारा सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'शेणी-विजानंद' एक दृश्य-काव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया जिसमें काव्य, नृत्य एवं संगीत के माध्यम से परिपक्व अभिनय कला का प्रदर्शन किया गया। विना किसी संवाद के ही कहानी आप से आप आगे बढ़ती है और अन्त में जब दर्शक निकलते हैं तो उन्हें सारा कथा-सार विना संवाद के ही ज्ञात हो जाता है. यह इस नृत्य-नाटिका की सहजता है। इतनी दुखान्त गाथा का इतना जीवन्त, निर्दोष, परिपक्व अभिनय, सहयोगियों, नर्तकों का ऐसा सामंजस्य, नाटक से गुजराती वातावरण की मनमोहक मीठी गन्ध दर्शकों को पूरे नाटक में मुग्ध रखती है।

विजानंद की भूमिका में श्री रामकृष्ण का अभिनय बहुत ही स्वाभाविक और सफल रहा। शेणी की भूमिका में सुश्री अन्नपूर्णा मिश्रा का अभिनय अत्यन्त हृदय स्पर्शी तथा संवेदनशील था। सम्पूर्ण नाटक में दोनों पात्रों का चरित्र अभिनय में ढल गया है। लगता नहीं कि कुछ अभिनीत हो रहा है बल्कि वास्तविक घटना का प्रत्यक्ष-दर्शन हो रहा है। सारे नाटक में दोनों का व्यक्तित्व हमेशा छाया रहता है। श्री श्रीराम नागर 'वेद्दा' की भूमिका में खरे उतरे।

नाटक का निर्देशन सम्पादन दोषरहित था। श्री नीनू मजूमदार की संगीत संरचना, डा. बी. वी० पाटेकर का संगीत निर्देशन एवं श्री नन्द किशोर मिश्र, श्रीमती प्रवीण कृष्ण तथा श्री चन्द्र शेखर का नृत्य निर्देशन सभी ने मिलकर इस दृश्य-काव्य में प्राण फूंक दिया।

एक बात और जिसके विना शायद सारा नाटक सिर्फ नाटक रह जाता और वह है कलकत्ता के श्री तापस सेन की प्रकाश संयोजना जिसने क्षण-क्षण पर दर्शकों को मुग्ध रखा। मंच पर प्रकाश की रेखाओं से झांकता हुआ विरह-विह्वल शेणी का आत्मपीड़न, उसकी निराशा, विवशता और छटपटाहट, रंग-बिरंगे स्वाभाविक प्रकाश पुंजों के बीच लोक-नृत्य, पहाड़ पर बादलों का मंडराना इतना प्रभावशाली था कि जिसकी कल्पना भी स्टेज के सीमित क्षेत्र में नहीं की जा सकती।

कुल मिलाकर 'शेणी-विजानंद' एक उच्चस्तर का अभिनीत दृश्य काव्य है जो दर्शकों को वर्षो-वर्षों तक याद रहेगा।

कहानीकार में —डा० जगदीश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शेणी विजानन्द - एक कलात्मक इन्द्रधनु

नागरी नाटक मण्डली के नवनिर्मित प्रेक्षागृह में सुप्रसिद्ध गुजराती कवि उच्छरंग राय केशव राय ओझा की गीति नाटिका शेणी-विजानंद काशी में सम्भवतः तीसरी या चौथी बार मंचित हुई। क्या है ऐसा इस नाटिका में कि काशी के रंगमंच कलाकार इसे बार-२ अभिनीत करके भी नहीं अघाते ? इस स्वाभाविक प्रश्न का उत्तर इस नाटिका में नहीं, इसे प्रस्तुत करने वालों के संकल्प में ढूढ़ना होगा, जो इस नाटिका के माध्यम से दृश्य, वाच्य, संगीत, प्रकाश और नृत्य के विविध आयामों के माध्यम से भारत की एक विरहानुभूति प्रधान प्रेमकथा को रूपायित करने का बार-बार प्रयत्न करते हैं और उन्हें हर बार यह लगता है कि अभी कुछ ऐसा रह गया है जिसका यदि संयोग हो गया होता तो शायद वे लोककथा की वास्तविक धड़कन को पकड़ सके होते।

इस बार का प्रयत्न महान था, इसलिए उसकी उपलब्धि को भी बहुत दिनों तक याद किया जायगा। कथा अन्य लोक गाथाओं की तरह ही सीधी सादी किन्तु भावगर्भी और अन्त-स्तल को छूने वाली है। लोक गायक विजानन्द अपनी संगीत साधना में बेसुध खोया-खोया एक दिन गाँव के मुखिया वेद्दा की चौपाल में पहुँचता है जहाँ सभी उसके संगीत को सुनने का आग्रह करते हैं। विजानन्द गाता है। गाता चला जाता है, उसके कण्ठ में उसे नाना स्वर साकार हो उठते हैं और उसके स्वरों का जादू पूरे चौपाल पर छा जाता है। वेद्दा प्रसन्नता के मारे बोल उठता है।

माँग माँचवी माँग
माँग वेद्दा प्रसन्न है।
माँग गोरवियाली का गोधन माँग
माँग सुधा सरसती वसुधा माँग
ओ वीणा विशारद विजानन्द
माँग जो माँगना हो माँग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वीणा विशारद मौन ही रहता है। आखिरकार वेद्दा शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा करता है कि वह जो भी माँगेगा मिलेगा और यदि वह ऐसा न कर सका तो अपने प्राण दे देगा। विजानन्द अपनी संगीत की प्रेरणा शेणी को माँगता है, वेद्दा की पुत्री शेणी का हाथ। विजानन्द विभोर होकर कहता है: —

अपने मीठे गीतों से परिणय कर लूंगा।
सुन्दर सुहाग उसके प्राणों में भर दूंगा।

वेद्दा क्रोध से चीख उठता है। मामूली लोक गायक की यह हिम्मत कि वह सूर्य चन्द्र किरणों से बनी शेणी से परिणय की कामना करे। वचन बद्ध वेद्दा लोगों के समझाने से लाचार होकर शेणी का हाथ देने को तैयार होता है पर इस शर्त पर कि विजानन्द एक वर्ष के अन्दर उसे शेणी के विवाह के उपहार स्वरुप एक सौ एक नवचन्द्र महिषियां प्रदान करेगा। वह इसी के साथ वाग्दान का जल भी विजानन्द के हाथ में डाल देता है।

विजानंद एक सौ एक नवचन्द्र महिषियों को जुटाने में लग जाता है। उसके पास संगीत के अलावा और क्या था, जिससे वह यह अनमोल उपहार जुटाये। वह देश देश की खाक छानता चलता जाता है।

इधर उसकी प्रतीक्षा में व्याकुल शेणी के लिए जीवन भार हो जाता है। वह अपने पिता को धिक्कारती है कि उसने अपने द्वार पर आयी विभूति को दुत्कार दिया। शेणी हिमालय में शरण लेने चली जाती है। विजानन्द साल के अन्तिम दिन एक सौ एक नवचन्द्री महिषियाँ लेकर आता है, किन्तु यह जानकर कि शेणी हिमालय में गलने चली गयी स्वयं भी चल देता है। शेणी समाप्त हो चुकी थी, विजानन्द की अन्तिम साँसे भी उसी पथ का पथिक बनती हैं और नाटिका समाप्त होती है।

इस बार इस नाटिका को प्रस्तुत करने में कई नये प्रयोग हुए। नृत्य संगीत और अभिनय को कलकत्ते के प्रसिद्ध प्रकाश विशेषज्ञ श्री तापस सेन ने अपनी छायापथ की मोहिनी कला से एक इन्द्रधनुषी संगम बना दिया। पूरा नाटक संगीत मय है और यह संगीत पार्श्व में ही चलता रहता है। विजानन्द हो या शेणी या कोई अन्य पात्र सभी मूक अभिनेता रहते हैं। यह अभ्यास और कौशल की बात थी कि संगीत और अभिनय का सह पद विक्षेप कभी खण्डित नहीं हुआ। विजानन्द के रूप में रामकृष्ण का अभिनय और नृत्य सराहनीय था, सिर्फ एक चीज खटकती थी कि उनकी मुखमुद्रा प्रायः एकरस बनी रही भावों के चढ़ाव उतार का निर्वाह कर लेने पर भी वे उसमें गरिमा नहीं ले आ पाये। ठीक इसके विपरीत शेणी के रूप में सुश्री अन्नपूर्णा मिश्र का अभिनय और मुद्रा प्रदर्शन तथा विरह की कातर घड़ियों की पीड़ा और टीस को अभिव्यक्त करने की चेष्टाएं काफी गरिमामय, आकर्षक और सराहनीय रही।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निर्देशक मानुशंकर मेहता का यह प्रयोग कई दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण है। पहली बार संगीत नाटक नृत्य तथा रंगमंचीय कौशलों प्रकाश साजसज्जादि को एकत्र अनुस्यूत करके कला का एक नया अयाम उभारने की कोशिश की गई। अनगढ़ हाथों में ये चीजे अलग-अलग पंचमेल खिचड़ी बच जाती, किन्तु मेहता की सूझ बूझ और उद्भावना ने इन चीजों को एक सूत्र में इस तरह पिरो दिया किया कि सब कुछ मिलकर विभिन्न कलाओं का सहयोगी प्रयत्न हो गया। इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रयोग की सफलता में श्री तापस सेन की प्रकाश नियामक प्रतिमा का भी काफी योगदान रहा। खास तौर से अनेक भावों के वेदनासंकुल अभिनयों को निखारते वक्त प्रकाश की लीला ने अद्भुत सहायता की। ग्रामोंचल की चित्रपटी, बादलों की घुमड़न विजानन्द की स्मृति में शेणी की विरह कातर छवि का उत्कीर्णन—ये सभी दृष्य तापस सेन की प्रकाशकला के द्वारा जीवन्त हो उठे।

यह सही है कि यह प्रयोग रंगमंच के क्रमिक विकास की परम्परा में कोई नया मोड़ नहीं ले आता; यह भी कहा जा सकता है कि इस प्रकार के प्रयोग आधुनिक मानवजीवन की संघर्षमयी मानसिक स्थितियों अथवा उनकी बाह्य अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करने में कौन सी भूमिका अदा करते हैं—शायद इस दृष्टि से कोई नई क्रान्तिकारी प्रयोगधर्मी कला का प्रस्फुटन नहीं हुआ। परन्तु इस प्रयोग से कई संभावनाएं जरूर उभरती हैं और इनके द्वारा कोई भी सफल मंच विशेषज्ञ आधुनिक जीवन सम्बन्धी परिदृश्यों को उभारते वक्त इस कला का इस्तेमाल आवश्यकतानुसार कर सकता है।

जो भी हो प्रयोग केवल साधन ही नहीं होते, वे स्वयं में साध्य भी होते हैं चाहे आज के आधुनिक युग में ऐसे साध्य प्रयोगों को जिनका मूल तत्व उच्चकोटि का मनोरंजन उपस्थित करना ही है, बहुत महत्व न दिया जाय, पर दर्शकों के लिए इनका महत्व निर्विवाद होता है और इस तरह के प्रयोग सामाजिकों की रूचि के परिष्करण में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस दृष्टि से डा. भालचन्द्र पाटेकर का संगीत निर्देशन, श्री नीनू मजुमदार की सगीत रचना और श्री तापस सेन के सहयोगी श्री सुरेश दत्त की दृश्य बंध कला भी कम सराहनीय नहीं थी।

एक वाक्य में कहा जा सकता है कि 'शेणी विजानन्द' ने कलाओं के संगम से एक विचित्र इन्द्रधनुषी सेतु का निर्माण किया।

—शिवप्रसाद सिंह
(धर्मयुग)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आग्र
भरतनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi